www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार...

राष्ट्रीय संस्करण

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

नई दिल्ली, बुधवार, 15 मई , 2024 | वर्ष-17 | अंक -39 | पृष्ठ - 10 | मूल्य - 3.00 रुपए

लोकतंत्र को खत्म करने की रहा पर केंद्र : कांग्रेस 02

■ भाजपा व प्रधानमंत्री के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान... 03
■ स्वाति मालीवाल के आरोपों को लेकर एमसीडी ... 03

■ संरा ने सुरक्षा कर्मचारी की मौत पर जताया दुख 07
■ बांग्लादेश रेलवे में रखरखाव के अभाव से बढ़ ... 07

हमारे पास भी एटम बम और यह फ्रिज में रखने ... 09

सरकार बनते ही गरीबों को खटाखट पैसा देंगे : राहुल

एक साल में हर घर की एक महिला के खाते में एक लाख खटाखट, खटाखट जाएंगे

- अग्निवीर योजना को फाड़कर कचरे में फेंक देंगे
- झांसी में प्रदीप जैन आदित्य के समर्थन में रैली की
- सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव भी रैली में हुए शामिल

चार जून के बाद देश के किसानों का कर्जा माफ कर दिया जाएगा। किसानों का जो पैसा बीमा कंपनियों के पास है वह 30 दिन में दिलाएंगे: राहुल गांधी

झांसी, 14 मई (देशबन्धु)। उत्तर प्रदेश की वीरांगना धरती झांसी मंगलवार को आए कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने सत्ता में आने पर आम जनता के लिए वादों की बरसात करते हुए कहा कि एक साल में हर परिवार की एक महिला के खाते में एक लाख रुपए खटाखट खटाखट, भेजे जाएंगे। यहां क्राफ्ट मेला मैदान में बुंदेलखंड की अति महत्वपूर्ण झांसी लोकसभा सीट से इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता प्रदीप जैन आदित्य के समर्थन में रैली करने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के साथ पहुंचे राहुल ने सभा स्थल के पास ही स्मार्ट सिटी के तहत लगाए गए रंग बिरंगे छातों पर तंज कसते हुए कहा कि अगर सिर्फ छाते लगाने से ही स्मार्ट सिटी बन जाती है तो मैं सारी स्मार्ट सिटी बना दूंगा। उन्होंने महिलाओं और युवाओं को साधते हुए कहा हर परिवार की एक महिला के खाते में एक साल में एक लाख रुपया भेजा जाएगा वो भी खटाखट खटाखट। मोदी जी ने युवाओं से कहा नाले में पाइप डालो, गैस निकलेगा और उस गैस पर पकौडे तलों। हम देश के करोड़ों युवाओं और महिलाओं को लखपति बनाएंगे। जब युवा और महिलाओं के हाथ में पैसा होगा तो वह खर्च करेंगे। इससे छोटे उद्योगों के उत्पादों की मांग बढेगी और रोजगार तो पैदा होंगें ही साथ ही छोटे उद्योग पनपेंगे। इस तरह हमारे देश की अर्थव्यवस्था दौड़ने लगेगी। हम बैंकों के दरवाजें छोटे उद्योगों को लोन देने के लिए खोल देंगे। जीएसटी के स्वरूप में बदलाव करेंगे। इस सब का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा और वह भी दौड़ने लगेगी। उन्होंने अग्निवीर योजना पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि सत्ता में आते ही इसे कूड़ेदान में फेंक देंगे। चार जून के बाद देश के किसानों का कर्जा माफ कर दिया जाएगा।

प्रियंका ने इलेक्टोरल बांड पर मोदी सरकार को घेरा

अमेठी। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर सीधा प्रहार करते हुये कहा कि इलेक्टोरल बांड के नाम पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार तो भ्रष्टाचार की नई योजना ही ले आई। श्रीमती वाड्रा ने गठबंधन के कांग्रेस प्रत्याशी किशोरी लाल शर्मा के समर्थन में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा भाजपा प्रचार करती है कि मोदी चूंकि भ्रष्टाचार को समाप्त करने में लगे हैं, इसलिए सारे विपक्षी दल उनके पीछे पड़े हैं मगर प्रधानमंत्री मोदी तो इलेक्टोरल बांड के रुप में भ्रष्टाचार की नयी योजना ही ले आए जिसके जरिए हजारों करोड़ रुपए का चंदा लिया गया। उन्होंने कहा भाजपा सरकार की नीतियां सिर्फ बड़े बड़े पूंजीपतियों और उद्योगपतियों के लिए है और गरीब को उनके हाल पर छोड़ दिया गया है। महंगाई और बेरोजगारी चरम पर है, किसान परेशान है।

मोदी ने लांच की भ्रष्टाचार की नई योजना

भाजपा को 140 सीटों के लिए तरसा देगी जनता : अखिलेश

झांसी में भाजपा की विदाई की झांकी हो रही तैयार

झांसी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मंगलवार को झांसी में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर तीखा हमला करते हुए कहा कि इस बार 140 करोड जनता भाजपा को 140 सीटों के लिए तरसा देगी। झांसी में भाजपा की विदाई की झांकी तैयार हो रही है। यहां झांसी लोकसभा सीट से इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार प्रदीप जैन के समर्थन में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के साथ पहुंचे सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा इनके शासनकाल में महंगाई, बेरोजगार चरम पर है,निवेश के नाम पर शून्य और हर परीक्षा में पेपरलीक, डिफेंस एक्सपो के नाम पर शून्य, जी-20 में जो तमाशा दिखाया वह शून्य है, पूरी तरह से विफल हो चुकी सरकार है।

मोदी ने तीसरी बार वाराणसी से किया नामांकन

वाराणसी, 14 मई (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनाव के लिए वाराणसी से तीसरी बार मंगलवार को अपना नामांकन दाखिल किया। इस मौके पर उनके साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उनके प्रस्तावक गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ मौजूद रहे। इसके अलावा नामांकन स्थल पर गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ एनडीए के तमाम बड़े नेता मौजूद रहे। इसके पहले काल भैरव की पूजा-अर्चना कर पीएम मोदी नामांकन स्थल पहुंचे। पीएम मोदी गंगा सप्तमी के अवसर पर दशाश्वमेध घाट पर मां गंगा की पूजा करने के बाद क्रूज पर सवार होकर नमो घाट पहुंचे।

एनडीए के तमाम बड़े नेता मौजूद रहे

नामांकन में शामिल नहीं हुए नीतीश

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अस्वस्थता के कारण मंगलवार के अपने सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए हैं । मुख्यमंत्री श्री कुमार का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नामांकन में शामिल होने के लिए वाराणसी जाने का कार्यक्रम था लेकिन अस्वस्थता के कारण वह वहां नहीं जा सके।

सार संक्षेप

आप ने मालीवाल के साथ हुई अभद्रता की निंदा की

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास पर पार्टी की राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल के साथ हुई अभद्रता की निंदा करते हुए मंगलवार को कहा कि मुख्यमंत्री ने इसे गंभीरता से लिया है। आप के वरिष्ठ नेता संजय सिंह ने बताया कि सुश्री मालीवाल कल सुबह श्री केजरीवाल से मिलने मुख्यमंत्री आवास पंहुचीं थी। वह ड्रॉइंग रूम में इंतजार कर रहीं थी, तभी मुख्यमंत्री के निजी सहायक (पीए) विभव कुमार ने उनके साथ अभद्रता की।

सुप्रिया भारद्वाज कांग्रेस की नई राष्ट्रीय मीडिया समन्वयक

नई दिल्ली। कांग्रेस ने मंगलवार को सुश्री सुप्रिया भारद्वाज को पार्टी का नया राष्ट्रीय मीडिया समन्वयक नियुक्त किया। कांग्रेस के मीडिया और प्रचार विभाग प्रमुख पवन खेड़ा ने आज यहां यह जानकारी दी। कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय मीडिया समन्वयक राधिका खेड़ा ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था और वे भाजपा में शामिल हो गई थी।

त्रिपुरा में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव जुलाई में

अगरतला। त्रिपुरा में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव आगामी जुलाई के अंतिम सप्ताह में कराये जायेंगे। प्रदेश चुनाव आयोग ने मतदाता सूची और मतदान केन्द्रों का अंतिम रूप देने की तैयारी शुरू कर दी है, जिन्हें लोकसभा चुनाव के परिणामों के तुरंत बाद अपडेट किया जाएगा।

महंगाई से राहत नहीं

खाद्य महंगाई दर बढ़कर 8.70 फीसदी पर पहुंची

■ आलू-प्याज की कीमतों में उछाल से बढ़ी महंगाई

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। खाने पीने की महंगाई फिर से आम लोगों को सताने लगी है। पिछले एक साल से दाल की कीमतें वैसे ही लोगों को परेशान कर रही थी, लेकिन महंगे आलू, प्याज और दूसरी साग-सब्जियों की कीमतों में भी बढ़ोतरी देखी जा रही है। इस बात की तस्दीक खुद सरकार के आंकड़ें कर रहे हैं।

अप्रैल महीने के लिए जो खुदरा महंगाई दर का आंकड़ा 13 मई 2024 को घोषित किया उसके मुताबिक खाद्य महंगाई दर मार्च के 8.52 फीसदी से बढ़कर 8.70 फीसदी पर जा पहुंची है। और इस अवधि में साग-सब्जियों की महंगाई दर में तेज उछाल देखने को मिला है तो दाल की महंगाई वैसे ही बढ़ी हुई है. होलसेल महंगाई दर का जो आंकड़ा 14 मई को घोषित किया गया है उसके मुताबिक थोक बाजार में भी बीते साल के मुकाबले आलू, प्याज समेत सब्जियों की महंगाई बढ़ी हुई है। दालों की होलसेल भी बीते साल के मुकाबले बढ़ी हुई है।

एक साल में प्याज 47.55 फीसदी महंगा

खाने - पीने की चीजों की कीमतें पर नजर डालें तो 13 मई 2024 को रिटेल मार्केट में आलू जहां 28.84 रुपए प्रति किलो में मिल रहा था उसकी कीमत ठीक एक साल पहले 13 मई 2023 को 19.64 रुपए किलो था। प्याज की कीमत अभी 31.71 रुपए किलो है जो एक साल पहले 21.49 रुपए प्रति किलो में मिल रहा था। एक साल में प्याज 47.55 फीसदी महंगा हुआ है।

रामदेव पर अवमानना मामले में फैसला सुरक्षित

पतंजलि आयुर्वेद को हलफनामा दाखिल करने के लिए 3 हफ्ते का समय दिया

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। भ्रामक विज्ञापन केस में सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को योग गुरु रामदेव, आचार्य बालकृष्ण और पतंजलि आयुर्वेद को भेजे अवमानना नोटिस पर फैसला सुरक्षित रख लिया है। साथ ही दोनों को व्यक्तिगत पेशी से छूट दी है। जस्टिस हिमा कोहली और जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की बेंच ने पतंजलि आयुर्वेद को हलफनामा फाइल करने के लिए 3 हफ्ते का वक्त दिया है।

आईएमए अध्यक्ष ने भी कोर्ट से माफी मांगी

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हलफनामा में यह बताएं कि जिन प्रोडक्ट्स का लाइसेंस कैंसिल कर दिया गया है, उनका विज्ञापन वापस लेने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं। बेंच ने कहा- बाबा रामदेव का बहुत प्रभाव है, इसका सही तरीके से इस्तेमाल करें। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा- रामदेव ने योग के लिए बहुत कुछ किया है। इस पर जस्टिस हिमा कोहली बोलीं- उन्होंने योग के लिए जो किया है वह अच्छा है, लेकिन पतंजलि प्रोडक्ट्स एक अलग मामला है। सुप्रीम कोर्ट ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के अध्यक्ष डॉ. आरवी अशोकन से कहा- अभिव्यक्ति की आजादी ठीक है, लेकिन कभी-कभी इंसान को संयमित भी होना पड़ता है। आप सोफे पर बैठकर अदालत के बारे में कुछ भी नहीं कह सकते। अगर दूसरा पक्ष इस तरह की टिप्पणी करता तो आप क्या करते? आप दौड़कर कोर्ट पहुंच जाते। अशोकन ने बिना शर्त माफी मांगी। दरअसल, 23 अप्रैल की सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि आईएमए को अपने डॉक्टरों पर भी विचार करना चाहिए, जो अक्सर मरीजों को महंगी और गैर-जरूरी दवाइयां लिख देते हैं। अगर आप एक उंगली किसी की ओर उठाते हैं, तो चार उंगलियां आपकी ओर भी उठती हैं।

भीमा कोरेगांव मामले में गौतम नवलखा को मिली जमानत

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को भीमा कोरेगांव-एल्गार परिषद मामले में आरोपी गौतम नवलखा को जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया। कोर्ट ने कहा, मुकदमे को अंजाम तक पहुंचने में काफी वक्त लगेगा। न्यायमूर्ति एमएम सुंदरेश और न्यायमूर्ति एसवीएन भट्टी की पीठ ने गौतम नवलखा की जमानत पर लगी बॉम्बे हाईकोर्ट की रोक को बढ़ाने से इनकार कर दिया। हालांकि, पीठ ने साथ ही नवलखा को नजरबंदी के दौरान सुरक्षा पर हुए खर्च के लिए 20 लाख रुपये का भुगतान करने का आदेश भी दिया।

लिट्टे पर लगा प्रतिबंध पांच साल के लिए बढ़ा

नई दिल्ली, 14 मई (देशबन्धु)। केंद्र सरकार ने लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम यानी लिट्टे पर लगे प्रतिबंध को अगले पांच साल के लिए और बढा दिया है। लिट्टे पर आरोप है कि वह देश में लगातार लोगों के बीच अलगाववाद को बढ़ावा दे रहा है और अपने लिए वह भारत खासकर तमिलनाडु में समर्थन बढ़ा रहा है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने गैर कानूनी, गतिविधि (रोकथाम) कानून 1967 की धारा 3 की उपधारा (1)और (3) को लागू करते हुए पहले ही प्रतिबंध लगाया था। गृह मंत्रालय ने अपनी अधिसूचना में कहा कि केंद्र की राय है कि लिट्टे अब भी ऐसी गतिविधियों में लिप्त है, जो देश की अखंडता और सुरक्षा के लिए नुकसानदेह हैं। इसमें कहा गया है कि मई 2009 में श्रीलंका में अपनी हार के बाद भी,लिट्टे ने ईलम (तमिलों के लिए एक अलग देश) की अवधारणा को नहीं छोडा है और प्रचार गतिविधियों तथा धन उगाही के माध्यम से गुप्त रूप से ईलम के लिए काम कर रहा है। अधिसूचना के मुताबिक, बचे हुए लिट्टे नेताओं या कैडर ने भी बिखरे हुए कार्यकर्ताओं को फिर से संगठित करने तथा स्थानीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगठन को पुनर्जीवित करने के प्रयास शुरू कर दिए हैं। इसके अलावा अधिसूचना में कुछ अन्य कारणों का हवाला देते हुए कहा गया है कि लिट्टे समर्थक समूह/तत्व जनता के बीच लगातार अलगाववादी प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहे हैं।

अलगाववाद को बढ़ावा देने का है आरोप

1000 से ज्यादा आईडी को ब्लॉक किया

गृह मंत्रालय ने साइबर अरेस्ट और ब्लैकमेलिंग करने वाले 1000 से ज्यादा स्काइप आईडी को ब्लॉक किया है। यह जानकारी प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो ने मंगलवार को दी।

हापुड़ में भीषण सड़क हादसा, 6 की मौत

सभी गाजियाबाद के लोनी इलाके के रहने वाले थे

गाजियाबाद, 14 मई (एजेंसियां)। गाजियाबाद से सटे हापुड़ में एक भीषण सड़क हादसे में 6 लोगों की मौत हो गई और 2 युवक गंभीर रूप से घायल हैं। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मरने वाले सभी गाजियाबाद के लोनी इलाके के रहने वाले थे।

बताया जा रहा है कि तेज रफ्तार एक्सएल 6 कार का टायर फटने की वजह से गाड़ी डिवाइडर तोड़कर दूसरी तरफ पहुंच गई। सामने से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने गाड़ी को टक्कर मार दी और काफी दूर तक घसीटती हुई ले गई। मुरादाबाद से गाजियाबाद की ओर आ रही मारुति एक्सएल 6 बृजघाट टोल के पास सामने से आते ट्रक से टकरा गई।

मुंबई में मरने वालों की संख्या 14 हुई

मुंबई। मुंबई होर्डिंग दुर्घटना में चार और लोगों ने अस्पताल में दम तोड़ दिया, जिसके बाद मरने वालों की संख्या बढ़कर 14 हो गई है। बीएमसी आपदा नियंत्रण ने मंगलवार को ये जानकारी दी। इसके अलावा, 43 अन्य घायल हुए हैं, जिनमें कुछ की हालत गंभीर है, जबकि 30 से अधिक घायलों को इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई।

चाबहार बंदरगाह के लिए भारत ईरान समझौते से अमेरिका नाखुश

वाशिंगटन, 14 मई (एजेंसियां)। अमेरिका ने भारत एवं ईरान के बीच चाबहार बंदरगाह के संबंध में समझौता किए जाने पर नाखुशी का इजहार किया है और स्पष्ट किया है कि प्रतिबंधों के बावजूद ईरान के साथ व्यापारिक समझौते करने पर जवाबी कार्रवाई के जोखिम से भारत सहित किसी को भी कोई छूट हासिल नहीं है। अमेरिकी विदेश विभाग की यहां हुई नियमित ब्रीफिंग में प्रमुख उप प्रवक्ता वेदांत पटेल ने यह चेतावनी दी। ब्रीफिंग में पूछा गया कि भारत ने ईरान में चाबहार बंदरगाह के विकास के लिए एक दस वर्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत इसे पाकिस्तान में चीन द्वारा निर्मित बंदरगाह के प्रतिकार के रूप में देखता है।

भारत ने दस वर्षीय समझौते पर किए हैं हस्ताक्षर

चुनाव *समाजवादियों के प्रभाव वाला क्षेत्र है हाजीपुर*

हाजीपुर में चिराग के लिए आसान नहीं राह

हाजीपुर, 14 मई (एजेंसियां)। केला के लिए प्रसिद्ध बिहार के हाजीपुर संसदीय क्षेत्र दुनिया को लोकतंत्र का पाठ बढ़ाने वाले वैशाली जिले का ही हिस्सा है। गंगा और गंडक नदियों के संगम वाला यह क्षेत्र शुरू से ही समाजवादियों के प्रभाव वाला क्षेत्र माना गया है। इस कारण यहां का चुनाव कई मुद्दे पर लड़े जाते रहे हैं। इस चुनाव में ना केवल इस संसदीय क्षेत्र पर पूरे देश की नजर है,

बल्कि कहा जा रहा है कि इस क्षेत्र का परिणाम स्वर्गीय रामविलास पासवान के कर्मस्थली और उनकी सियासी विरासत को भी तय करेगा। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत एनडीए ने यहां से लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के अध्यक्ष चिराग पासवान को चुनाव मैदान में उतारा है, वहीं विपक्षी दल के महागठबंधन ने राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता शिवचंद्र राम को प्रत्याशी बनाया है। इस क्षेत्र में मुख्य मुकाबला दोनों गठबंधन के बीच ही माना जा रहा है। 19.53 लाख से ज्यादा मतदाताओं वाले हाजीपुर संसदीय क्षेत्र में हाजीपुर, लालगंज, महुआ, राजापाकर, राघोपुर तथा महनार विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। हाजीपुर संसदीय क्षेत्र 1952 में सारण सह चंपारण संसदीय क्षेत्र का हिस्सा था।

- रामविलास की सियासी विरासत बचाने उतरे चिराग
- महागठबंधन ने राजद नेता शिवचंद्र राम को उतारा

वर्ष 1957 में यह क्षेत्र अस्तित्व में आया। 1957 से 1971 तक यह क्षेत्र केसरिया संसदीय क्षेत्र के नाम से जाना जाता था। पिछले चुनाव में यहां से रामविलास पासवान के भाई पशुपति कुमार पारस विजयी हुए थे। रामविलास ने यहां से रिकॉर्ड वोटों से जीतकर गिनीज बुक में नाम दर्ज कराया था। यहां की सियासत चार दशक तक रामविलास पासवान के इर्द गिर्द घूमती रही है। पिछले चुनाव से इस बार परिस्थितियां बदली नजर आ रही हैं। पिछले चुनाव से अलग इस चुनाव में रामविलास की इस कर्मभूमि से उनके पुत्र चिराग पासवान चुनावी मैदान में उतरे हैं। इस चुनाव में जहां पासवान को जाति के आधार पर वोट, भाजपा और जदयू के कैडर वोट और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर भरोसा है, वहीं राजद के प्रत्याशी को अपने सामाजिक समीकरण से चुनावी वैतरणी पार करने का विश्वास है।

देश

उवाच

मध्य प्रदेश की जनता बुद्धिमान है और उसने देखा कि किस तरह इंदौर और खजुराहो में भाजपा के इशारे पर विपक्ष के प्रत्याशियों को चुनावी मैदान से बाहर कर दिया गया। मुझे विश्वास है कि लोकतंत्र पर हुए इस हमले का मुंहतोड़ जवाब प्रदेश की जनता ने दिया है।

-कमलनाथ,कांग्रेस नेता

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	39.0	26.0
मुंबई	33.0	30.0
कोलकाता	31.0	28.0
चेन्नई	32.0	30.0

लोकतंत्र को खत्म करने की रहा पर केंद्र : कांग्रेस

- संविधान व आरक्षण की रक्षा के लिए इंडिया गठबंधन के पक्ष में जनता से की मतदान की अपील
- भाजपा अपने काम पर नहीं राम, मुसलमान, पाकिस्तान व हिंदू को खतरे में कहकर मांग रही वोट

महराजगंज,14 मई (एजेंसियां)। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने संविधान और आरक्षण की रक्षा के लिए इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार के पक्ष में मतदान की अपील की। वे जवाहर लाल नेहरू पीजी कॉलेज खेल मैदान में इंडिया गठबंधन उम्मीदवार कांग्रेस विधायक वीरेंद्र चौधरी के समर्थन में सभा को संबोधित कर रहे थे। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि हमारी लड़ाई मोदी योगी से नहीं है, यह लड़ाई दो विचार धाराओं के बीच की है। एक विचारधारा देश को कुछ उद्योगपतियों के हाथ गिरवी रखकर गरीब और मध्यम वर्ग को गुलाम बनाना चाहती है जबकि हम देश और देशवासियों को बचाना चाहते हैं। हमारी विचारधारा नेहरू, गांधी, पटेल के बनाए देश को बचाने की है। उनकी उसे खत्म करने की है। वे अपने उद्योगपति मित्रों को लाभ देते हैं। हम गरीबों, किसानों की मदद करते हैं, उनका कर्ज माफ करते हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि हमारी पांच गारंटी है जो युवाओं को नौकरी, महिलाओं के खाते में साल में एक लाख, कर्ज माफी और बेरोजगार युवकों के अप्रेंटिस सुनिश्चित

भाजपा 400 सीट इसलिए चाह रही है ताकि यह संविधान बदल कर लोकतंत्र को खत्म कर दे : मल्लिकार्जुन खड़गे

करती है। इसके इतर भाजपा की गारंटी नफरत और भाईचारे को खत्म करने की है। उन्होंने कहा कि भाजपा अपने काम पर नहीं राम, मुसलमान, पाकिस्तान और हिंदू को खतरे में कहकर वोट मांगती है।

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि भाजपा 400 सीट इसलिए चाह रही है कि ताकि वह संविधान बदल कर लोकतंत्र को खत्म कर दे। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र भगवान बुद्ध का ननिहाल है जहां दो हजार छह सौ वर्ष पहले लोकतंत्र था, आप लोगों से बेहतर लोकतंत्र के महत्व को कौन जानता है, इसलिए आप सभी से अनुरोध है कि गठबंधन के उम्मीदवार वीरेंद्र चौधरी को जरूर जिताएं। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि यह धरती संविधान सभा सदस्य रहे शिब्बन लाल सक्सेना, वीर बहादुर सिंह, हर्षवर्धन जैसे विकास पुरुषों की रही है। इनकी रिक्तियां निश्चित ही वीरेंद्र चौधरी पूरी कर सकते हैं। सपा नेता व पूर्व मंत्री शिवपाल सिंह यादव ने कहा कि गठबंधन की सरकार बनना तय है। अब आपकी जिम्मेदारी है कि महराजगंज से गठबंधन उम्मीदवार वीरेंद्र चौधरी को जिताकर गठबंधन सरकार के गठन में अपनी भागी दारी सुनिश्चित करें। कांग्रेस के यूपी प्रभारी अविनाश पांडेय ने भाजपा सरकार की बिफलता की लंबी सूची गिनाते हुए कहा कि इस सरकार का अब बने रहना देश हित में नहीं है। कार्यक्रम में डुमरियागंज के पूर्व सांसद मो. मुकीम, पूर्व सांसद कमल किशोर कमांडो, बस्ती के पूर्व विधायक अंबिका सिंह, पूर्व विधान परिषद सदस्य राम अवध सिंह, पूर्व विधायक श्रीपति आजाद, सुदामा प्रसाद, सपा नेता निर्मेश मंगल, अमरेंद्र निषाद, सपा जिलाध्यक्ष विद्या सागर यादव, आप जिलाध्यक्ष राम कुमार पटेल, मनौवर हुसेन आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किया। कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने भाजपा सरकार खासकर पीएम मोदी को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश में करोड़ों खर्च कर निवेशकों का मेला लगता है।

सरकार का अरबों निवेश का दावा भी रहता है लेकिन वह दिखता कहीं नहीं। उन्होंने कहा कि यह कैसा निवेश है जो पूर्वांचल की एक एक करके बंद होती जा रही चीनी मिलों का उद्धार तक नहीं कर सकी। नतीजा कभी चीनी का कटोरा कहे जाने वाले पूर्वांचल से चीनी ही समाप्त हो गई।

कांग्रेस ने पंजाब के लिए गठित की प्रचार समिति

नई दिल्ली। कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव के बीच पंजाब में राणा कंवरपाल सिंह के नेतृत्व में प्रदेश कांग्रेस इकाई की प्रचार समिति का गठन किया है। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने यह जानकारी दी और बताया कि पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने इस आशय के प्रस्ताव को मंजूरी दी है और नए पदाधिकारियों से तत्काल प्रभाव से अपना काम शुरू करने के लिए कहा है। उन्होंने बताया कि पार्टी ने वरिष्ठ नेता हरदयाल सिंह कंबोज को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, सुखविंदर सिंह धन्नी और पवन अधिया को सह उपाध्यक्ष तथा जसवीर सिंह डिंपा को संयोजक बनाया है। उन्होंने बताया कि समिति में 35 लोगों को जगह दी गई है। समिति में पार्टी के विभिन्न संगठनों की प्रदेश अध्यक्षों को पदेन सदस्य बनाया गया है। पार्टी ने टी. राजेंद्र सिंह बाजवा, कुलदीप सिंह नागरा, राणा गुरजीत सिंह, ओम प्रकाश सोनी, अरुणा चौधरी, जग दर्शन कौर तथा संगत सिंह गिलजियान सहित 35 लोगों को समिति के लिए नियुक्त किया है।

वेंकैया ने सुशील मोदी के निधन पर जताया शोक

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। पूर्व उप राष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया है। नायडू ने मंगलवार को यहां एक संदेश में कहा कि सुशील कुमार मोदी भ्रष्टाचार के विरुद्ध अविचल निरंतर लड़ते रहे। उन्होंने ही बिहार

के कुख्यात चारा घोटाले को उजागर किया था। एक जमीनी कार्यकर्ता, एक समर्पित नेता मोदी सबसे पहले एक शानदार सहृदय व्यक्तित्व थे। नायडू ने कहा मेरे आत्मीय मित्र, भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता तथा बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री, पूर्व राज्य सभा सांसद सुशील कुमार मोदी के असामयिक निधन से दुखी हूं। हम दोनों ने पांच दशक पूर्व साथ ही जयप्रकाश के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से अपना सार्वजनिक जीवन आरंभ किया था। तबसे हम सदैव परस्पर संपर्क में रहे। वेदना की इस घड़ी में मैं शोकाकुल परिजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं।

भाजपा करेगी पवन सिंह के खिलाफ कार्रवाई

पटना/काराकाट,14 मई (देशबन्धु)। भोजपुरी सिनेमा के पावर स्टार अभिनेता पवन सिंह के खिलाफ बीजेपी कार्रवाई करेगी। भाजपा ने काराकाट से निर्दलीय चुनाव लड़ रहे पवन सिंह को नामांकन वापस लेने को कहा है। यदि पवन सिंह नामांकन वापस नहीं लेते हैं तब बीजेपी उन पर कार्रवाई करेगी। बिहार के सहकारिता, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ. प्रेम कुमार ने डेहरी में पवन सिंह को लेकर बड़ा बयान दिया है। बिहार सरकार में मंत्री प्रेम कुमार मंगलवार को रोहतास के काराकाट लोकसभा क्षेत्र के एनडीए प्रत्याशी सह राष्ट्रीय लोक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कशवाहा का चुनाव प्रचार करने पहुंचे थे। इसी दौरान उन्होंने पवन सिंह को लेकर बड़ी बात कह दी। उन्होंने कहा कि यदि पवन सिंह अपना नामांकन वापस नहीं लेते हैं तो बीजेपी कार्रवाई करेगी। बता दें कि काराकाट लोकसभा सीट से एनडीए प्रत्याशी उपेन्द्र कुशवाहा को पवन सिंह सीधी टक्कर दे रहे हैं। पवन सिंह निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में यहां से चुनाव लड़ रहे हैं। जबकि पवन सिंह भाजपा के सदस्य भी हैं।

- काराकाट से निर्दलीय चुनाव लड़ रहे पवन को नामांकन वापस लेने को कहा

भाजपा से बिना इस्तीफा दिए वो काराकाट से निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर नामांकन किया और उपेंद्र कुशवाहा के खिलाफ चुनाव के मैदान में उतर गए हैं। पवन सिंह के इस कदम से भाजपा नाराज है। यह कयास लगाया जा रहा है कि पवन सिंह को भाजपा से निकाला जा सकता है।

बता दें कि भोजपुरी सिनेमा के पावर स्टार कहे जाने वाले पवन सिंह ने पिछले साल ही बीजेपी का दामन थामा था। जिसके बाद बीजेपी ने उन्हें पश्चिम बंगाल के आसनसोल लोकसभा सीट से उम्मीदवार बनाया था लेकिन वो आरा से चुनाव लड़ना चाहते थे इसलिए उन्होंने आसनसोल से चुनाव नहीं लड़ने का फैसला लेते हुए टिकट वापस कर दिया था।

सार संक्षेप

कश्मीर में 11 स्थानों पर चला जांच अभियान

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस की राज्य जांच एजेंसी ने दक्षिण कश्मीर जिलों के 11 स्थानों पर जांच अभियान चलाया। यह जांच अभियान पिछले महीने यहां अन्य राज्य के श्रमिक की हत्या के सिलसिले में चलाया गया ताकि हत्या के पीछे साजिश करने वालों को बेनकाब किया जा सके। एसआईए अधिकारियों ने कहा कि उनकी टीम ने तड़के तीन जिलों अनंतनाग, कुलगाम और शोपियां में छापेमारी की।

पूर्व सांसद प्रभुनाथ सिंह के पुत्र जदयू में शामिल

छपरा। बिहार में सारण जिले के महाराजगंज संसदीय क्षेत्र से पूर्व सांसद प्रभुनाथ सिंह के पुत्र रंधीर सिंह मंगलवार को जनता दल यूनाईटेड में शामिल हो गए। छपरा विधानसभा क्षेत्र से रंधीर सिंह राष्ट्रीय जनता दल के टिकट पर चुनाव लड़ कर विधायक बने थे। उन्होंने वर्ष 2019 में राजद के टिकट पर महाराजगंज संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा था। उक्त चुनाव में भाजपा प्रत्याशी जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने उन्हें पराजित किया था।

एम्बुलेंस में आग लगने से मरीज की जलकर मौत

कोझिकोड। केरल के कोझिकोड में मंगलवार तड़के एक सड़क हादसे में एम्बुलेंस में आग लगने से मरीज की जलकर मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। रिपोर्ट के अनुसार मंगलवार तड़के तीन बजे एम्बुलेंस के बिजली के खंभे से टकराने से उसमें आग लग गई जिससे एक महिला मरीज की जलकर मौत हो गई। उसे तत्काल सर्जरी की आवश्यकता थी इसलिए उसे उलियारी के मालाबार मेडिकल कॉलेज अस्पताल से सुलोचना को एस्टर एमआईएमएस अस्पताल ले जाया जा रहा था। रिपोर्ट के अनुसार चालाक ने नियंत्रण खो दिया जिससे एम्बुलेंस बिजली के खंभे से टकरा गयी और फिर पास की एक इमारत में जा घुसी। इस हादसे में एम्बुलेंस में आग लग गयी। एम्बुलेंस में एक डॉक्टर और दो नर्स सहित कुल सात लोग सवार थे।

ओडिशा में पीठासीन अधिकारी की सड़क दुर्घटना में मौत

भुवनेश्वर। ओडिशा में पहले चरण का चुनाव संपन्न होने के बाद सोमवार को घर लौटते समय नुआपाड़ा जिले में एक सड़क दुर्घटना में पीठासीन अधिकारी प्रसन्ना कुमार नाइक की मौत हो गई। ओडिशा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी एनबी ढल ने मंगलवार को बताया कि नाइक की मृत्यु उस समय हो गई जब वह ईवीएम और चुनाव संबंधी अन्य सामग्री जमा करने के बाद घर लौट रहे थे। ढल ने पीठासीन अधिकारी की मौत पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की।

संदेशखाली के अपराधियों को बख्शा नहीं जाएगा : शाह

उलूबेरिया/बोनगांव, 14 मई (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को दोहराया कि संदेशखाली में महिलाओं के खिलाफ जो अपराध हुए, उनके दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। साथ ही उन्होंने पश्चिम बंगाल के सभी आरोपी घोटालेबाजों को चेतावनी दी कि भारतीय जनता पार्टी के आम चुनाव में जीत हासिल कर सत्ता में आने पर वे जेल जाने के लिए तैयार रहें। शाह ने ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस सरकार पर वोट बैंक की राजनीति के कारण संदेशखाली में अपनी पार्टी के लोगों को बचाने का आरोप लगाते हुए चेतावनी दी कि उत्तर 24 परगना में गरीब महिलाओं और आदिवासी लोगों पर अत्याचार करने के दोषी शाहजहां शेख सहित किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा। पार्टी के बोनगांव से उम्मीदवार शांतनु ठाकुर और हावड़ा की उलूबेरिया सीट से उम्मीदवार अरुण उदय पाल चौधरी के पक्ष में 20 मई को होने वाले मतदान के लिए दो अलग-अलग चुनावी सभाओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बनर्जी बांग्लादेश से आए घुसपैठियों और रोहिंग्या समर्थकों के वोट बैंक के लिए 22 जनवरी को राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के समारोह में अनुपस्थित थीं। गृह मंत्री ने कहा, प्राण प्रतिष्ठा में आने की बजाय उन्होंने अपने वोट बैंक समर्थकों को संतुष्ट करने के लिए उसी दिन कोलकाता में एक रैली आयोजित की थी।

- पश्चिम बंगाल के सभी आरोपी घोटालेबाजों को दी चेतावनी

नौजवानों की शादी होने नहीं दे रहे मोदी : तेजस्वी

राजद नेता चुनावी जनसभा में प्रधानमंत्री मोदी पर कसा तंज

पटना/मधुबनी,14 मई (देशबन्धु)। बिहार में पांचवे चरण का मतदान 20 मई को है। इस दिन लोकसभा की पांच सीटों मधुबनी, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, सारण और हाजीपुर में वोटिंग होगी। मधुबनी में महागठबंधन के प्रत्याशी अली अशरफ फातमी के पक्ष में राजद नेता तेजस्वी यादव ने चुनावी जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान तेजस्वी यादव ने पीएम मोदी की मिमिक्री की। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी नौजवानों की शादी होने नहीं दे रहे हैं। हमने बिहार में पांच लाख लोगों को सरकारी नौकरियां दी हैं। हम लोगों ने किसी से मंगलसूत्र नहीं छीना बल्कि नौजवानों का ब्याह करवा कर मंगलसूत्र दूल्हन को पहनवाया है। जबकि प्रधानमंत्री मंगलसूत्र छीनने की बात कर रहे हैं। बता दें कि मधुबनी में महागठबंधन के प्रत्याशी अली अशरफ फातमी और एनडीए प्रत्याशी अशोक कुमार यादव के बीच सीधा मुकाबला है। अली अशरफ फातमी को वोट देने की अपील तेजस्वी यादव ने मधुबनी की जनता से की। इस दौरान मधुबनी के मंच से तेजस्वी यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मिमिक्री भी की। तेजस्वी यादव ने नरेंद्र मोदी के अंदाज में कहा कि भाईयों और बहनों, ये विपक्ष के लोग अगर सरकार में आ जाएंगे तब मंगलसूत्र छीन लेंगे। जिनके पास दो भैंस होगी तो एक भैंस भी ले लेंगे। आपके बाप-दादा की संपत्ति तक छीन लेंगे। तेजस्वी ने पूछा कि क्या यही प्रधानमंत्री के बात करने का स्तर है? मंगलसूत्र की जहां तक बात है, प्रधानमंत्री जी आप तो नौजवानों की शादी तक होने नहीं दे रहे हैं। नौजवानों को नौकरी लगती है तभी न उसकी शादी होती है और तब नौजवान अपनी पत्नी को मंगलसूत्र पहनाता है। तेजस्वी ने आगे कहा कि हमलोग नवरात्र से पहले मछली खा रहे थे। तब मोदी जी को मछली का कांटा लग रहा था। मोदी जी अब हमें बताएंगे कि हमलोग क्या पहने, क्या खाएं और क्या पीयें। हमे इन बातों पर चर्चा नहीं करनी है। क्योंकि यह कोई मुद्दा ही नहीं है। मोदी जी जान-बूझ कर ऐसी बातें करते हैं ताकि लोग उनसे काम की बात न पूछें। केवल हिन्दू-मुसलमान आपस में लड़ता रहे और इसी काम में मोदी जी लोगों को लगा देते हैं।

महागठबंधन के पक्ष में की मतदान करने की अपील

- हम लोगों ने किसी से मंगलसूत्र नहीं छीना बल्कि नौजवानों का ब्याह करवा कर मंगलसूत्र दूल्हन को पहनवाया : तेजस्वी यादव

प्रधानमंत्री कर रहे हैं मंगलसूत्र छीनने की बात

राजद नेता तेजस्वी ने कहा कि हमने बिहार में पांच लाख लोगों को सरकारी नौकरियां दी हैं। हम लोगों ने किसी से मंगलसूत्र नहीं छीना बल्कि नौजवानों का ब्याह करवा कर मंगलसूत्र दूल्हन को पहनवाया है। जबकि प्रधानमंत्री मंगलसूत्र छीनने की बात कर रहे हैं। तेजस्वी यही नहीं रुके। उन्होंने कहा कि हमलोगों ने तो घर बसाने का काम किया है और मोदी जी लोगों के बीच तकरार और नफरत पैदा करते हैं। हम कलम बांटते हैं और वह तलवार बांटते हैं। हम प्यार की बात करते हैं और वह नफरत की बात करते हैं। यहां आकर हिन्दू-मुस्लिम-मंदिर-मस्जिद-सनातन-इस्लाम और नहीं तो पाकिस्तान पर बोलते रहते हैं। तेजस्वी ने कहा कि हम मोदी जी से पूछेंगे कि बेरोजगारी क्यों नहीं हटी? हम जब मोदी जी से पूछते हैं कि हर साल दो करोड़ नौकरी देने का वादा किये थे, उन वादों का क्या हुआ? तब वह बोलेंगे कि तेजस्वी को पाकिस्तान चले जाना चाहिए। अजीब हाल है भाई।

सुशील कुमार मोदी पंचतत्व में विलीन

- राजकीय सम्मान के साथ गंगा के दीघा घाट पर किया गया अंतिम संस्कार

भाजपा के कई बड़े नेताओं ने दी अंतिम विदाई

पटना एयरपोर्ट पर भाजपा के तमाम बड़े नेता मौजूद थे और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता सुशील कुमार मोदी के निधन से पूरे बिहार में शोक की लहर है। उनके निधन के बाद भाजपा ने सारे कार्यक्रम रद्द कर दिए। पूर्वी चंपारण बीजेपी कार्यालय में भी श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें भाजपा के तमाम नेता मौजूद रहे। पूर्व केंद्रीय मंत्री राधामोहन सिंह ने सुशील मोदी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

पटना, 14 मई (देशबन्धु)। बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम और भाजपा के वरिष्ठ नेता सुशील कुमार मोदी के निधन के बाद उनके पार्थिव शरीर को विशेष विमान से पटना लाया गया। पटना एयरपोर्ट पर भाजपा नेताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। यहां से उनके पार्थिव शरीर को उनके राजेन्द्र नगर स्थित आवास पर ले जाया जाएगा। जहां अंतिम दर्शन के बाद पटना के गंगा घाट पर राजकीय सम्मान के साथ उनकी अंत्येष्टि किया गया। पटना एयरपोर्ट पर श्रद्धांजलि देने के बाद उनका पार्थिव शरीर बिहार विधानसभा, विधान परिषद और उसके बाद भाजपा प्रदेश कार्यालय ले जाया गया। जहां दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि दी गई। इसके बाद अंतिम दर्शन के लिए उनके पार्थिव शरीर को राजेन्द्र नगर स्थित उनके निजी आवास पर भी रखा गया। बता दें कि सुशील मोदी पिछले कुछ महीनों से गले के दर्द से परेशान थे। उन्होंने दिल्ली एम्स में जब जांच कराई तो पता चला कि उन्हें गले का कैंसर है। इसके बाद उन्होंने खुद सोशल मीडिया के जरिए इसकी जानकारी दी थी। सुशील मोदी द्वारा इसकी जानकारी देने के करीब डढ़े महीने बाद ही उनका निधन हो गया। दिल्ली एम्स में सोमवार की रात इलाज के दौरान उनका निधन हो गया। सुशील मोदी के निधन से भाजपा के साथ-साथ बिहार के सियासी गलियारे में शोक की लहर है। बिहार भाजा ने अपने सभी कार्यक्रम को रद्द कर दिया है। जबकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी अपने सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए। दिवंगत सुशील मोदी के करीबी रहे राधामोहन सिंह ने इसे व्यक्तिगत क्षति करार देते हुए कहा कि सुशील मोदी ने बिहार में उपमुख्यमंत्री रहते हुए बेहतर काम किया है। वह एक कुशल संगठनकर्ता और अच्छे वक्ता थे।

महाराष्ट्र में भाजपा 41 सीटें जीतेगी : फड़नवीस

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडनवीस ने दावा किया है कि लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को 41 से अधिक सीटों पर जीत हासिल होगी जबकि महाविकास अघाड़ी दहाई का अंक भी नहीं छू पाएगी। फड़नवीस ने एक समाचार चैनल से विशेष साक्षात्कार में यह दावा किया। उन्होंने यह भी कहा कि शिवसेना (यूबीटी) गुट के नेता उद्धव ठाकरे को मानसिक रोग है और उन्हें मनोचिकित्सक की जरूरत है जबकि संजय राऊत कोई नेता नहीं है। फड़नवीस ने उद्धव गुट की शिवसेना पर निशाना साधते हुए कहा कि यह कोई हिंदुत्ववादी दल नहीं है। बल्कि उद्धव गुट में तो आजकल केवल अपने को वफादार बताने की होड़ मची हुई है। उन्होंने कहा कि जिंदगी में उन्होंने उद्धव ठाकरे जैसा झूठा इंसान नहीं देखा है।

भारी मतदान के जरिए लोगों ने दिल्ली को दिया संदेश : महबूबा

श्रीनगर, 14 मई (एजेंसियां)। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष एवं जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने मंगलवार को कहा कि श्रीनगर लोकसभा सीट पर भारी मतदान कश्मीर के लोगों की ओर से दिल्ली के लिए एक संदेश है कि 2019 में लिए गए फैसलों को उन्होंने स्वीकार नहीं किया है। मुफ्ती ने दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले में कहा, सोमवार को श्रीनगर संसदीय क्षेत्र के लिए मतदान प्रतिशत अच्छा रहा और लोगों ने दिल्ली को संदेश दिया है कि 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने का फैसला कश्मीर के लोगों ने स्वीकार नहीं किया है। साथ ही, राज्य के विषय, भूमि और रोजगार के संबंध में लिए गए फैसले भी जम्मू-कश्मीर के लोगों को स्वीकार्य नहीं हैं। सोमवार को श्रीनगर लोकसभा क्षेत्र में 38 प्रतिशत मतदान हुआ, जो 1996 के बाद सबसे अधिक है। पीडीपी अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि जिन जगहों पर लोग पीडीपी को वोट देने के लिए एकत्र हुए थे, वहां मतदान में गड़बड़ी हुई। उन्होंने आरोप लगाया कि जानबूझकर मतदान धीमा कराया गया। मुफ्ती अनंतनाग-राजौरी सीट से लोकसभा चुनाव लड़ रही हैं, जहां 25 मई को मतदान होने वाला है। मैं चाहती हूं कि राजौरी, पुंछ, अनंतनाग, कुलगाम और वाची के लोगों को यदि अनंतनाग-राजौरी संसदीय सीट के लिए मतदान के दौरान 10 घंटे तक कतार में इंतजार करना पड़े तो भी वे खड़े रहें और वोट देने तक वापस नहीं लौटे।

अनंतनाग-राजौरी सीट पर 25 मई को होगा मतदान

आसार *मध्य प्रदेश में मंडराने लगे उप चुनाव के आसार*

दल बदल व लोस चुनाव में कुछ विधायकों की मौजूदगी से बने हालात

भोपाल,14 मई (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश से लोकसभा चुनाव की सरगर्मियां सिमट चुकी हैं। कुल 4 चरणों के मतदान पूरे होने के बाद अब इनके परिणाम पर नजर टिक गई है। इसी बीच अब मध्य प्रदेश में उप चुनाव के आसार मंडराने लगे हैं। पिछले दिनों तेज रहे दल बदल और लोकसभा चुनाव में कुछ विधायकों की मौजूदगी से यह हालात बने हैं।

लोकसभा चुनाव में प्रदेश की सबसे ज्यादा सुरक्षित सीट के प्रत्याशी शिवराज सिंह चौहान मौजूदा विधानसभा के सदस्य भी हैं। लोकसभा चुनाव में उनकी जीत पक्की और केंद्रीय मंत्रिमंडल में बेहतर विभाग मिलना भी अवश्यंभावी माना जा रहा है। इस स्थिति के चलते इस बात की भी प्रबल संभावना है कि शिवराज को अपनी जीती हुई विधानसभा सीट छोड़ना पड़ेगी। इसके चलते बुदनी विधानसभा पर उप चुनाव कराए

- खाली हुई सीटों पर 6 माह की अवधि में उप चुनाव कराए जाना है जरूरी

जाना जरूरी हो जाएंगे। लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बाद प्रदेश की 4 से 8 विधानसभा सीट पर उपचुनाव की संभावना है। ज्ञातव्य है कि लोकसभा चुनाव के पहले और इसी गहमा गहमी के दौर में कांग्रेस के तीन विधायकों ने पार्टी छोड़कर भाजपा की सदस्यता ले ली है।

जिसके चलते इन सीटों से इन विधायकों की सदस्यता शून्य हो गई है। कमलेश शाह के इस्तीफे के बाद अमरवाड़ा सीट, विधायक निर्मला सप्रे और रामनिवास रावत के भाजा में शामिल होने से भी इनकी विधानसभा सदस्यता खत्म हो गई है। नियमानुसार इन खाली हुई सीटों पर 6 माह की अवधि में उप चुनाव कराए जाना जरूरी है। इसके अलावा प्रदेश में 4 विधायक भी लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। इन सीटों से सकारात्मक परिणाम आने पर इन्हें भी विधानसभा से सदस्यता छोड़ना पड़ेगी। जिसके फलस्वरूप यहां भी उपचुनाव कराने होंगे। विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा को भरपूर सीटों का प्रतिसाद जनता ने दिया है। इसके चलते प्रदेश सरकार से दो चार विधायक इधर उधर होने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। हालांकि यह जरूर है कि कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए विधायकों की संख्या पार्टी की सीमित विधायक संख्या से कम जरूर हो जाएगी। उप चुनाव में जीत हासिल करने के बाद यही विधायक भाजपा की संख्या बढ़ाने वाले साबित होंगे। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश में सोमवार को आठ सीटों इंदौर, देवास, उज्जैन, मंदसौर, खरगोन, खंडवा, रतलाम, धार में मतदान हुआ। सोमवार को आठ सीटों में सबसे ज्यादा मतदान खरगोन सीट पर 75.79 प्रतिशत हुआ। जबकि सबसे कम इंदौर में 60.53 प्रतिशत मतदान हुआ। प्रदेश में पहले और तीसरे चरण में मतदान प्रतिशत कम होने के बाद तीसरे चरण में मतदान प्रतिशत बढ़ा था। इसका कारण चुनाव आयोग के साथ ही राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं के प्रयास को बताया गया था।

उल्टा पुल्टा

लड़का : मैं आपकी बेटी से शादी करना चाहता हूं
दुकानदार : महिने के कितने कमा लेते हो ?
लड़का : महिने के 20 हजार
दुकानदार : मेरी बेटी की पॉकेट मनी है 15 हजार
लड़का : मैं भी तो उसी को मिलाकर बोल रहा हूं...

आप ने 'वॉशिंग मशीन' कैंपेन के जरिए साधा भाजपा पर निशाना, बोले

भाजपा व प्रधानमंत्री के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान का असली सच जनता के सामने रखेंगे

नई दिल्ली, 14 मई (देशबन्धु)। आम आदमी पार्टी ने भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भ्रष्टाचार विरोधी अभियान की पोल खोलने के लिए एक वॉशिंग मशीन का एक नायाब कैंपेन शुरू किया है। आप के दिल्ली प्रदेश संयोजक गोपाल राय और मंत्री सौरभ भारद्वाज ने मंगलवार को पार्टी मुख्यालय से इसकी शुरूआत की। सौरभ भारद्वाज ने डेमो दिखाकर बताया कि कैसे भ्रष्टाचार के आरोपियों को वॉशिंग मशीन में डालकर उनको क्लीन किया जाता है। लोगों को भाजपा के वॉशिंग मशीन का काला जादू दिखाने के लिए स्टेज पर एक तरफ बड़ी सी वॉशिंग मशीन रखी गई थी और दूसरी तरफ बड़ा सा जेल बनाया गया था। जो लोग भाजपा में शामिल होने के लिए तैयार हो गए, उनको ईडी ने वॉशिंग मशीन में डाल दिया और जिन्होंने समाज सेवा से पीछे हटने से इन्कार कर किया, उनको जेल में डाल दिया।

हिमंता बिश्वा सरमा, अजीत पवार व अशोक चव्हाण का डेमो दिखाया

इस दौरान हिमंता बिश्वा सरमा, अजीत पवार और अशोक चौव्हाण का डेमो दिखाया गया कि कैसे वॉशिंग मशीन में घुलने के बाद अब ईडी-सीबीआई उनको परेशान नहीं करती है। दूसरी तरफ, दिल्ली में शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को सुधारने वाले मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन ने उनकी बात नहीं मानी तो कैसे फर्जी मामले बनाकर उनको जेल भेज दिया गया।

लोकसभा चुनाव के प्रचार के लिए 'आप' की तरफ से लगातार अलग-अलग तरीकों से प्रचार अभियान चलाए जा रहे है : गोपाल राय

गोपाल राय ने कहा कि लोकसभा चुनाव के प्रचार के लिए आम आदमी पार्टी की तरफ से लगातार अलग-अलग तरीकों और माध्यम से प्रचार अभियान चलाए जा रहे हैं। हम लोगों ने पहले चरण में दिल्ली के अंदर जेल का जवाब वोट से, डोर टू डोर कैंपेन चलाया। उसके अगले चरण में हमने दिल्ली के अंदर जेल का जवाब वोट से संकल्प सभाएं शुरु कीं। तीसरे चरण में हमने रोड शो के माध्यम से जनता के बीच में अपने सदेश को पहुंचाया। समाज के अलग-अलग हिस्सों में महिलाओं, पूर्वांचल के लोगों, व्यापारियों और ग्रामीण इलाकों में संवाद के अलग-अलग कार्यक्रम चल रहे हैं।

गोपाल राय ने कहा कि अब वॉशिंग मशीन कैंपेन शुरू कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी और देश के प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि यह चुनाव हम भ्रष्टाचार से लड़ने और उसे खत्म करने के लिए लड़ रहे हैं। बीजेपी के इस दावे की सच्चाई क्या है? बीजेपी के वॉशिंग मशीन का काला जादू क्या है? आज हमारे कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज और उनकी टीम इस वॉशिंग मशीन के काले जादू को प्रदर्शित किया। हमने यह निर्णय लिया है कि आज जिस तरह से यहां इस वॉशिंग मशीन के काले जादू का प्रदर्शन किया गया है। दिल्ली में हमारे 4 लोकसभा क्षेत्रों के लिए हम चार टीमें और तैयार कर रहे हैं। ये टीमें अगले 23 मई तक दिल्ली के अंदर इन चारों लोकसभा नई दिल्ली, पूर्वी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली और दक्षिणी दिल्ली के हर विधानसभा में जाकर इस वॉशिंग मशीन के काले जादू को प्रदर्शित करेंगे और बीजेपी व प्रधानमंत्री के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान का सच जनता के सामने रखेंगे।

ईडी-सीबीआई चला रही है देश : सौरभ भारद्वाज

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि आज देश को ईडी और सीबीआई दो एजेसियां ही चला रही है। जब केंद्र सरकार मन करता है, वो किसी भी नेता के खिलाफ ईडी-सीबीआई को छोड़ देती है। कुछ साल पहले महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अशोक चौव्हाण के उपर आदर्श सोसायटी के घोटाले के आरोप लगे थे। कहा गया था कि कारगिल युद्ध में शहीद जवानों की विधवाओं के लिए सोसायटी बननी थी। इस सोसायटी में अशोक चौव्हाण ने करोड़ों रुपए का घोटाला किया था। प्रधानमंत्री ने अशोक चौव्हान के बारे में कहा कि कारगिल की विधवाओं के लिए जो फ्लैट बनाए, उनको भी अशोक चौव्हाण लूट लेंगे। लेकिन भाजपा की वॉशिंग में धुलकर साफ हो गए और राज्यसभा में भेज दिए गए।

स्वाति मालीवाल के आरोपों को लेकर एमसीडी सदन में हंगामा

नई दिल्ली, 14 मई (देशबन्धु)। दिल्ली नगर निगम की सदन की बैठक मंगलवार को हंगामे की भेंट चढ़ गई। जिसके कारण कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित नहीं हो सके।

आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल द्वारा लगाए गए आरोपों को लेकर सदन में हंगामे की स्थिति रही। मालीवाल ने आरोप लगाया है कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आधिकारिक आवास पर एक कर्मचारी ने उनके साथ 'मारपीट' की। लेकिन उन्होंने औपचारिक शिकायत नहीं दर्ज कराई।

दिल्ली की महापौर शैली ओबेरॉय के सदन में प्रवेश करते ही भाजपा और कांग्रेस के पार्षद आसन के करीब आकर केजरीवाल के खिलाफ नारे लगाने लगे और घटना को लेकर उनके इस्तीफे की मांग करने लगे। सदन की कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित किए जाने के कारण कोई भी प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। विपक्षी पार्षदों ने इस मुद्दे को लेकर सदन की कार्यवाही शुरू होते ही जमकर नारेबाजी की जिस कारण कार्यवाही को स्थगित कर दिया गया।

मुख्यमंत्री आवास में महिलाओं की सुरक्षा' को लेकर चिंता जताते हुए सभी दलों के पार्षदों ने सदन में एक निंदा प्रस्ताव भी पेश किया। पार्षदों ने कथित घटना के लिए केजरीवाल नीत सरकार पर निशाना साधा और मालीवाल के लिए न्याय की मांग की। विपक्षी पार्षद महापौर के आसन के पास पोस्टर लेकर खड़े थे, जिन पर दलित महापौर को कुर्सी पर बिठाओ, दलित विरोधी केजरीवाल इस्तीफा दो नारे लिखे हुए थे। हंगामे के बीच महापौर ने सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी।

■ सदन दिनभर के लिए स्थगित होने से कोई भी प्रस्ताव पारित नहीं हो सका

सार संक्षेप

अरविंद फैशन्स ने शुरू किया अनोखा अभियान

नई दिल्ली। अरविंद फैशन्स लिमिटेड के प्रोफेशनल मेन्सवेअर ब्रांड ऐरो ने सन, स्टाइल और टी-शर्ट्स डाइव इनटू द समर नामक एक अनोखे अभियान की शुरुआत की है। यह एक ऐसा अनोखा टी-शर्ट फेस्टिवल है जो इस उत्सवी माहौल के मूड को बढ़िया ढंग से जाहिर करता है। उल्लेखनीय है कि ऐरो ब्रांड गर्मियों के हिसाब से चटख रंगों, नवीन तरह के डिज़ाइन्स और उपभोक्ताओं के जोश-ओ-खरोश को परिलक्षित करने वाले अभियान का हिस्सा बनने जा रहा है। मगर ऐरो की यह पहल महज़ स्टाइल को ध्यान में रखकर नहीं तैयार की गई है बल्कि यह लोगों की जिंदगी में बदलाव लाने की भी एक अहम कोशिश भी है। ऐरो ब्रांड के सीईओ आनंद अय्यर ने कहा कि टी-शर्ट फेस्टिवल के लिए शार्क टैंक के सीजन 2 में भाग लेने वाले जाने-माने एनजीओ एटिपिकल एडवांटेज के साथ साझेदारी करना ऐरो के लिए हर्ष और गौरव का विषय है।

ला शील्ड ने पेश की मिनरल सनस्क्रीन रेंज

नई दिल्ली। गर्मियों के दिनों के लिए ला शील्ड ने अपनी सनस्क्रीन रेंज को और बेहतर किया है , जो विभिन्न प्रकार की त्वचा और चिंताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, ताकि सभी के लिए श्रेष्ठ परिणाम सुनिश्चित किए जा सकें। स्किनकेयर के लिए ढेर सारे विकल्पों को नेविगेट करना हमें भारी पड़ सकता है, लेकिन ला शील्ड की सनस्क्रीन रेंज हमारे लिए इस प्रक्रिया को आसान बनाती है। यह सनस्क्रीन धूप से सुरक्षा से कहीं अधिक है, जिससे हम नुकसानदायक यू वी किरणों में रहकर भी स्वस्थ और चमकदार त्वचा प्राप्त कर सकें। संवेदनशीलता के साथ बनाई गई ला शील्ड की सनस्क्रीन, त्वचा प्रकार और चिंताओं के लिए एक विशेष दृष्टिकोण प्रदान करती है। ये विभिन्न प्रकारों में उपलब्ध हैं जो विभिन्न त्वचा समस्याओं का समाधान करते हैं।

भारत नेशनल पब्लिक स्कूल के छात्रों ने किया बेहतर प्रदर्शन

नई दिल्ली। सीबीएसई की ओर से जारी 12वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में भारत नेशनल पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने बहुत ही शानदार प्रदर्शन किया। पिछली बार की तरह इस बार भी परिणाम शत-प्रतिशत रहा। समग्र उच्चतम अंकों के साथ स्कूल टॉपर वाणी जैन 96.4 प्रतिशत कॉमर्श स्ट्रीम, कृष्ण कौशिक 96 प्रतिशत साइंस स्ट्रीम और राशि लोहिया 96.2 प्रतिशत मानविकी स्ट्रीम हैं। अन्य मेधावी छात्र मानसी मिनोचा 96.2 प्रतिशत, आयुष बहुगुणा 92.2 प्रतिशत, खुशी सारस्वत 94.6 प्रतिशत, संचिता यादव 92.2 प्रतिशत, यज्ञ जैन 95.8 प्रतिशत, दिशा गोयल 93.6 प्रतिशत, इल्तजा गुर्जर 93.6 प्रतिशत बड़ी संख्या में छात्रों ने इन परीक्षाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। इस अवसर पर प्रधानाचार्य कंवलजीत खुंगर ने सभी छात्र-छात्राओं शिक्षकों और अभिभावकों को बधाई दी। साथ ही शानदार सफलता पर खुशी जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि मै सभी छात्रो को आशीर्वाद देता हूं कि आप सभी हमेशा जीवन में इसी तरह सफलता की सीढ़ियां चढ़ते जाएं। उन्होंने कहा कि ये छात्र ही विद्यालय की मजबूत नींव है ।

युवती की हत्या का आरोपी 17 साल बाद गिरफ्तार

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। दिल्ली में 22 वर्षीय एक युवती की हत्या कर 17 साल से फरार 57 वर्षीय व्यक्ति को रोहिणी से गिरफ्तार कर लिया गया। यह जानकारी मंगलवार को एक पुलिस अधिकारी ने दी।

आरोपी की पहचान बिहार के वैशाली जिले के निवासी वीरेंद्र सिंह के रूप में हुई। 2 जून 2007 को उसने दिल्ली में एक अपॉर्टमेंट किराए पर लिया और दो दिन बाद युवती की हत्या कर दी। शव को एक ट्रंक में छिपा दिया और फरार हो गया।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि जांच के दौरान वारदात का सह-आरोपी शंकर घोष को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। लेकिन वीरेंद्र सिंह फरार था। 2008 में अदालत ने उसे घोषित अपराधी करार दिया। कालकाजी पुलिस स्टेशन में तैनात रहे सहायक उप-निरीक्षक (अपराध शाखा) रमेश ने स्थानांतरण के बावजूद मामले की जांच जारी रखी।

पुलिस उपायुक्त (अपराध) अमित गोयल ने कहा कि रमेश ने आरोपी का पता लगाना जारी रखा। इस बीच सूचना मिली कि आरोपी वीरेंद्र हरियाणा के पानीपत में छिपा हुआ है। पुलिस ने वहां छापेमारी की, लेकिन वह वहां से फरार हो गया। पुलिस ने उसका पीछा करना जारी रखा। वह अपने किराए के आवास को बार-बार बदल रहा था।

आरोपी बार-बार बदल रहा था ठिकाना

फरवरी में एएसआई रमेश का ट्रांसफर क्राइम ब्रांच में हो गया। रमेश ने इस केस को चुनौती के तौर पर लिया और फिर से इस पर काम करना शुरू कर दिया। पुलिस उपायुक्त अमित गोयल ने बताया कि रमेश को आरोपी और उसके द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे मोबाइल नंबर के बारे में जानकारी मिली। इसके बाद जाल बिछाकर आरोपी को रोहिणी के विजय विहार इलाके से पकड़ लिया गया। पूछताछ में पता चला कि वह 1991 में दिल्ली आया और टैक्सी ड्राइवर के तौर पर काम करते हुए चितरंजन पार्क इलाके में रहने लगा। उस दौरान वह कई लोगों के संपर्क में आया और देह व्यापार में शामिल हो गया।

डीसीपी ने कहा 2007 में, वह पश्चिम बंगाल से एक युवती को लाया और उसे देह व्यापार में धकेल दिया। उसने युवती को 10 हजार रुपए में खरीदा था। चार जून को जब बीमारी के कारण युवती ने देह व्यापार से इनकार कर दिया, तो उसने उसकी हत्या कर दी और शव को लोहे के एक बक्से में छिपा दिया। इसके बाद वह कोलकाता भाग गया।

आईटीओ बिल्डिंग में आग लगने से 1 की मौत, 6 लोग बचाए गए

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। राष्ट्रीय राजधानी के आईटीओ क्षेत्र में केंद्रीय राजस्व भवन की तीसरी मंजिल पर मंगलवार को आग लगने से 46 वर्षीय एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि छह अन्य को बचा लिया गया। यह जानकारी अधिकारियों ने दी।

अग्निशमन विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि इमारत में काम कर रहे कई लोगों को सीढ़ियों की मदद से खिड़कियों के जरिए बाहर निकाला गया। दिल्ली अग्निशमन सेवा (डीएफएस) के निदेशक अतुल गर्ग ने कहा कि पुरानी दिल्ली पुलिस मुख्यालय के सामने आग लगने की सूचना दोपहर 2.25 बजे मिली। उन्होंने कहा कि कुल 21 दमकल गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। शाम चार बजे घटनास्थल से संदेश मिला कि पांच पुरुषों और दो महिलाओं समेत सात लोगों को डीएफएस कर्मियों ने इमारत की तीसरी मंजिल से निकाला है। हालांकि, एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि बचाए गए लोगों में से एक 46 वर्षीय व्यक्ति बेहोशी की हालत में पाया गया, जिसे अस्पताल ले जाया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। अधिकारी ने कहा, जिसकी मौत हो गई, वह कार्यालय अधीक्षक के पद पर कार्यरत था।

10वीं परीक्षा में होनहार बच्चों को किया गया सम्मानित

नई दिल्ली, 14 मई (देशबन्धु)। एक बार फिर हैप्पी इंग्लिश स्कूल, शरद विहार के विद्यार्थियों ने कक्षा दसवीं की सी बी एस ई बोर्ड की परीक्षा में अत्यंत शानदार परिणाम प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया है।

विद्यालय में सभी विद्यार्थी अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण रहे। विद्यालय के 70 प्रतिशत विद्यार्थी 75प्रतिशत से अधिक अंक लेकर उत्तीर्ण हुए हैं। जबकि 84.4 प्रतिशत विद्यार्थी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। हैप्पी इंग्लिश स्कूल का गुणवत्ता सूचकांक 74.67प्रतिशत रहा, जो कि विद्यालय को गर्व की अनुभूति कराता है। कशिश जैन ने 95.6प्रतिशत अंकों के द्वारा विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। अर्नी 94.8 प्रतिशत अंको के साथ द्वितीय स्थान पर एवं पलक मालपानी 94.4 प्रतिशत अंकों के साथ तृतीय स्थान पर रही। दिव्य कपूर और आरूष बंसल ने सामाजिक विज्ञान में 100 अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रौशन किया है। तन्मय ने विज्ञान में 98 अंक, अर्नी ने गणित में 97 अंक, हिंदी में कशिश ने 94 अंक एवं अकिंता शर्मा ने सूचना प्रौद्योगिकी में 99 अंक प्राप्त करके विद्यालय का सिर गर्व से ऊंचा उठा दिया। सी बी एस ई कक्षा दसवीं में बोर्ड परीक्षा के नतीजे बहुत ही शानदार रहे हैं। विद्यालय की प्रधानाचार्या ने सभी बच्चों को उनके अनवरत कठिन परिश्रम पर बहुत-बहुत बधाई दी है। यह परिणाम बच्चों के कठिन परिश्रम के साथ ही विद्यालय प्रशासन एवं अध्यापकों के सतत मार्गदर्शन एवं प्रयासों का भी परिणाम है।

विद्यालय में सभी विद्यार्थी अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण रहे

कमल पब्लिक सीनियर सेकेंडरी के छात्र। स्कूल, डी-ब्लॉक विकास पुरी ने दसवीं कक्षा की सीबीएसई परीक्षा में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करके शानदार प्रदर्शन किया। कुल मिलाकर उच्चतम अंकों के साथ स्कूल के टॉपर्स खुशी गुप्ता 95 प्रतिशत हैं, यश ठाकुर 94.6 प्रतिशत ने दूसरा स्थान और दीक्षा सिंह और पुष्कर गुप्ता 92.4 प्रतिशत ने तीसरा स्थान हासिल किया। अन्य मेधावी छात्र हैं अर्तिक कुमार 90.8 प्रतिशत, तनीषा 90.6 प्रतिशत, जगप्रीत सिंह 90.4 प्रतिशत, शिवम गुप्ता 90.2 प्रतिशत, खुशी 90 प्रतिशत, गुरविंदर सिंह 90 प्रतिशत, और सागर मंडल 90 प्रतिशत, अब्बल रहे।

अध्यक्ष डॉ. आर.के. टंडन और प्राचार्य डॉ. रीमा टंडन ने टॉपर्स को बधाई दी और शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों के अथक और सार्थक प्रयासों की सराहना की।

हर पल निरंकार के प्रति समर्पित होकर जीवन जीएं : सतगुरु माता

नई दिल्ली, 14 मई (देशबन्धु)। जब हम हर पल में इस निरंकार प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पित भाव से अपना जीवन जीते चले जाते हैं तब वास्तविक रूप में मानवता के कल्याणार्थ हमारा जीवन समर्पित हो जाता है। ऐसा ही प्रेमा-भक्ति से युक्त जीवन बाबा हरदेव सिंह जी ने हमें स्वयं जीकर दिखाया' यह आशीष वचन सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज द्वारा समर्पण दिवस के पावन अवसर पर व्यक्त किए गए। युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी की पावन स्मृति में 'समर्पण दिवस' समागम का आयोजन 13 मई को सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं निरंकारी राजपिता जी के सान्निध्य में संत निरंकारी आध्यात्मिक स्थल, समालखा में हुआ जिसमें दिल्ली, एन. सी. आर. सहित पड़ोस के राज्यों से हज़ारों की संख्या में श्रद्धालु भक्तों ने सम्मिलित होकर उनके परोपकारों को न केवल स्मरण किया अपितु हृदयपूर्वक श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इसके अतिरिक्त यह दिवस विश्वभर में भी आयोजित किया गया जहां सभी भक्तों ने बाबा जी की सिखलाईयों का स्मरण करते हुए उनके विशाल जीवन को नमन किया। सतगुरु माता जी ने फरमाया कि बाबा जी ने स्वयं प्यार की सजीव मूरत बनकर निस्वार्थ भाव से हमें जीवन जीने की कला सिखाई।

'आप' को स्वाति मालिवाल के साथ मारपीट घटना की सच्चाई बतानी चाहिए : कपूर

नई दिल्ली, 14 मई (देशबन्धु)। दिल्ली भाजपा के प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने कहा है कि दिल्लीवासी स्तब्ध हैं कि आम आदमी पार्टी के नेता जैसे गोपाल राय और सौरभ भारद्वाज को भाजपा पर आरोप लगाते देख कर स्तब्ध हैं, जबकि आम आदमी पार्टी का संपूर्ण शीर्ष नेतृत्व या तो किसी जेल में है या विभिन्न घोटालों में जमानत पर है। दिल्ली के लोग सौरभ भारद्वाज से जानना चाहते हैं कि अरविंद केजरीवाल ने कैसे कहा है कि जेल में बंद शराब घोटाला अभियुक्त विजय नय्यर उनको रिपोर्ट करता था ऐसे में भारद्वाज बताएं कि शराब घोटाले में उनकी वास्तविक भूमिका क्या है। दिल्ली भाजपा के प्रवक्ता ने कहा कि अन्य पार्टियों से प्रश्न पूछने से पहले आप नेताओं को साफ़ साफ बात करने के लिए आगे आना चाहिए कि मुख्यमंत्री आवास में उनके विभव कुमार द्वारा स्वाति मालिवाल की मारपीट की सच्चाई क्या है।

मुख्यमंत्री आवास में विभव कुमार द्वारा स्वाति मालिवाल की मारपीट की सच्चाई क्या है : कपूर

महिला सुरक्षा व सशक्तिकरण में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए किया सम्मानित

नई दिल्ली, 14 मई (देशबन्धु)। आईसीजे ग्लोबल अवाड्र्स के तीसरे संस्करण में विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गजों के साथ सितारों का जमावड़ा देखा गया। उपस्थित लोगों में प्रसिद्ध हास्य अभिनेता दीपक सैनी, गतिशील सामग्री निर्माता आशीष और आतिशय, प्रतिष्ठित समाचार चैनल एंकर राशिद हाशमी, पूर्णिमा मिश्रा, जया मिश्रा और प्रतिभाशाली डिजिटल कलाकार व नज़रबट्टू जैसी प्रतिष्ठित डिजिटल हस्तियां शामिल थीं।

महिला एवं बाल विकास निगम के सेवानिवृत्त जिला प्रबंधक अजय चतुर्वेदी को सर्वोच्च सम्मान से नवाजा गया। अजय चतुर्वेदी न केवल उल्लेखनीय उपलब्धियों वाले करियर को बल्कि समाज की बेहतरी के लिए जीवन भर तपस्या की उनकी प्रतिबद्धता ही उनकी पहचान हैं।

तृतीय आईसीजे ग्लोबल अवाड्र्स 2024 में समारोह को संबोधित करते हुए अजय चतुर्वेदी ने दुनिया में महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं के व्यक्तिगत अधिकारों और गोपनीयता के बारे में जागरूकता के महत्व पर जोर देते हुए एक सुरक्षित और अधिक समावेशी समाज सुनिश्चित करने की दिशा में ठोस प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित किया।

'केजरी करप्शन वाल' बन गए हैं केजरीवाल : शिवराज

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उत्तर पूर्व दिल्ली से भाजपा उम्मीदवार मनोज तिवारी के समर्थन में महिला सम्मेलन को संबोधित करते हुए स्वाति मालीवाल के साथ हुई मारपीट की घटना की जमकर निंदा की।

शिवराज सिंह चौहान ने उत्तर पूर्व दिल्ली के नवीन शाहदरा इलाके में महिला सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि जब एक द्रौपदी का अपमान हुआ था तो महाभारत की लड़ाई हो गई थी और कौरवों के पूरे वंश का विनाश हो गया था। उन्होंने कहा कि यहां दिल्ली में मुख्यमंत्री आवास पर स्वाति मालीवाल का जो अपमान किया गया, उसे भारत की यह धरती सहन नहीं करेगी। उन्होंने अरविंद केजरीवाल, ममता बनर्जी और कांग्रेस के साथ-साथ पूरे विपक्षी गठबंधन पर निशाना साधते हुए कहा कि एक तरफ ममता बनर्जी के राज में पश्चिम बंगाल में संदेशखाली जैसी घटना हो रही है, वहीं दिल्ली में सीएम आवास पर एक महिला के साथ इस तरह का व्यवहार किया जा रहा है और इसलिए ऐसे इंडी गठबंधन को जीतना नहीं चाहिए।

महिलाओं को सशक्त बनाने व समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का काम मोदी सरकार ने किया है : शिवराज सिंह चौहान

■ **चौहान ने मनोज तिवारी के समर्थन में महिला सम्मेलन को किए संबोधित**

भ्रष्टाचार को लेकर केजरीवाल पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि केजरीवाल अब 'केजरी करप्शन वाल' बन गए हैं, वह सबसे बड़े भ्रष्टाचारी निकले, भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए और ऐसे लोगों को वे कभी जीतने नहीं देंगे।

उन्होंने कहा कि महिलाओं को सशक्त बनाने और समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का काम मोदी सरकार ने किया है। मध्य प्रदेश की धरती पर आज बेटी लखपति पैदा होती है क्योंकि उन्होंने लाडली लक्ष्मी योजना लागू की। यह सिर्फ भाजपा सरकार है, जिसने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसी पहल चलाकर बेटियों को सम्मान देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि भाजपा से पहले देश में जिनकी सरकार थी, उनके समय पर बेटा-बेटियों में अंतर पैदाकर समाज में एक लिंगानुसार अंतर पैदा करने का काम किया गया था।

शिवराज सिंह चौहान ने दिल्ली की महिलाओं से भाजपा को वोट देने की अपील करते हुए कहा कि यदि वे मध्य प्रदेश और अन्य भाजपा शासित राज्यों जैसी महिला उत्थान योजनाओं का लाभ चाहते हैं तो दिल्ली में पहले लोकसभा और फिर विधानसभा चुनाव में भाजपा की सरकार चुनें।

चौहान ने मनोज तिवारी के खिलाफ चुनाव लड़ रहे कांग्रेस-आप गठबंधन के संयुक्त उम्मीदवार कन्हैया कुमार पर भी निशाना साधते हुए कहा कि यहां पर विपक्ष से जो चुनाव लड़ रहे हैं, वे भारत के टुकड़े होने की बात करते रहे हैं और उन्हें जनता कभी स्वीकार नहीं करेगी।

उत्तर रेलवे
आज़ादी का अमृत महोत्सव

खुली निविदा सूचना

पत्र संख्या. 128-डब्लू/280/निविदा सूचना/24-25/डब्लू- I (NIT-06) दिनांक: 13.05.2024

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल अभियंता/प्रथम, उत्तर रेलवे, नई दिल्ली द्वारा निम्न कार्य के लिए ई-टेंडर के माध्यम से निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

कार्य का नाम	कि.मी. 90/29-31 पर 37/27-9 और 54 पर समपार संख्या 23 का उन्मूलन एडीईएन/पीएनपी के तहत एसएसई/डब्ल्यू/एसएनपी और पीएनपी के अनुभाग में डीयूके अनुभाग पर आरयूबी के निर्माण द्वारा।
अनुमानित लागत	रु. 111451790.07/-
धरोहर राशि	रु. 707300/- (यह नेट बैंकिंग या केवल भुगतान gate way के रूप में होना चाहिए। नोट : एफ.डी.आर या डिमांड ड्राफ्ट के रूप में ई.एम.डी स्वीकार नहीं की जाएगी। (रेलवे बोर्ड के पत्र संख्या 2015/सीई-1/सीटी/5/1 दिनांक 31.08.2016) के अनुसार आई.आर.ई.पी.एस. पर आमंत्रित निविदा के लिए।
समापन अवधि	18 महीने
ई-निविदा खोलने और प्रस्तुत करने के लिए दिनांक और समय	07.06.2024 को 15:00 बजे तक प्रस्तुत करने तथा निविदा खुलने का समय दिनांक 07.06.2024 को 15:00 बजे।
निविदा की वेब साइट जहां निविदा प्रपत्र खरीदा जा सकता है	www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है।
सामान प्रकार के कार्य	बॉक्स पुशिंग/पाइप पुशिंग विधि से पुलों/सीमित हाई सबवे का निर्माण

नोट :- शपथ पत्र संलग्नक XXIV अनिवार्य रूप के रूप में निविदा शर्तों के साथ संलग्न नए प्रारूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। और सभी संलग्न दस्तावेज निविदाकर्ता द्वारा स्वयं सत्यापित किया जाना चाहिए। 1446/24

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

कैपिटल ज़ोन

उवाच

उद्यमियों से पर्यावरण के सुधार में सहयोग करने की अपील की है। नगर आयुक्त ने निर्माण विभाग, उद्यान विभाग, प्रकाश विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा कार्य की रफ्तार को तेज कर दिया गया है, पांचो जोन में सुविधाओं को दुरुस्त करते हुए विभागीय अधिकारी कार्य कर रहे हैं। प्राथमिकता के आधार स्थान चयन करते हुए कार्य किया जा रहा है : **विक्रमादित्य मलिक, नगर आयुक्त**

आवंटन निरस्त होने के बाद दोनों व्यवसायिक भूखंडों पर कब्जा लेगा प्राधिकरण

- दोनों साइटों पर चल रहा था निर्माण कार्य
- नोएडा प्राधिकरण को मिला आवंटन निरस्त का पत्र

नोएडा, 14 मई (देशबन्धु)। आवंटन निरस्त होने के बाद अब नोएडा प्राधिकरण दोनों व्यवसायिक भूखंडों पर कब्जा लेगा। अभी मौके पर दोनों साइट पर निर्माण चल रहा है। पांच दिन पहले शासन ने एमश्रीएम बिल्डर की दो सब्सिडियरी कंपनियों के व्यवसायिक भूखंडों का आवंटन निरस्त कर दिया था। आवंटन निरस्त होने के बाद इस संबंध में उत्तर प्रदेश के प्रमुख सचिव औद्योगिक अनिल कुमार सागन का पत्र नोएडा प्राधिकरण को मिल गया है। प्राधिकरण अधिकारियों का कहना है कि आवंटन निरस्त होने के बाद अब आगे की कार्रवाई की जाएगी।

शासन ने बीते शुक्रवार को सेक्टर-94 में मैसर्स लैविश बिल्डमार्ट प्राइवेट लिमिटेड और सेक्टर-72 में मैसर्स स्काई लाईन प्रॉपकॉन प्राइवेट लिमिटेड को आवंटित व्यवसायिक भूखंड का आवंटन निरस्त कर दिया था। कुछ महीने पहले शिकायतकर्ता रूप सिंह ने फरवरी 2024 में शिकायत की थी कि प्राधिकरण के ई-ब्रोशर में लिखे नियमों एवं शर्तों का उल्लंघन करते हुए इन दोनों कंपनियों को भूखंड आवंटित किए गए। वर्ष 2022 में इन कंपनियों को भूखंड आवंटित किए गए थे।

आवंटन करने के बाद प्राधिकरण को इन दोनों कंपनियों अब तक करीब 450 करोड़ रुपए भी मिल गए हैं। आरोप है कि दोनों कंपनियों को पांच लाख रुपए की अतिरिक्त बोली लगाने पर सिंगल बिड के तहत आवंटन किया गया। सेक्टर-94 स्थित भूखंड का रिजर्व प्राइज 827 करोड़ 35 लाख रुपए था और सेक्टर-72 स्थित भूखंड का रिजर्व प्राइज 176 करोड़ 48 लाख रुपए था। इन दोनों भूखंड के लिए सिर्फ पांच लाख रुपए की अतिरिक्त बोली मिलने पर प्राधिकरण ने आवंटन कर दिया।

ऐसे में इस भूखंड को पाने के लिए आवेदक कंपनियों के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं हुई। इसके अलावा सब्सिडियरी कंपनी यदि खुद बोलीकर्ता है तो उसे स्वयं निर्धारित न्यूनतम अर्हता जैसे कि नेट वर्थ, सालवेंसी एवं टर्नओवर पूरी करने की शर्त है।

इसके अलावा सब्सिडियरी कंपनी ने अकेले आवेदन किया था। ऐसे में उसे स्वयं ब्रोशर की शर्तों को पूरा करना था लेकिन नहीं किया गया।

नेशनल हाईवे की श्रेणी में होगा, तभी एनएचएआई बनाएगा नया एक्सप्रेस वे

- एक्सप्रेस से ट्रैफिक भार को कम करने व नोएडा एयरपोर्ट को लिंक देने के लिए प्राधिकरण की है योजना
- प्राधिकरण बीओटी या पुश्ता रोड को ठीक करके दे सकता है कनेक्टिविटी

नोएडा, 14 मई (देशबन्धु)। नोएडा-ग्रेटरनोएडा एक्सप्रेस वे समानांतर नया एक्सप्रेस वे परियोजना को लेकर अड़चने आने लगी है। नेशनल हाइवे आथिरटी ऑफ इंडिया ने इस परियोजना से हाथ खींच लिया है। उनका साफ कहना है कि जब तक ये एनएच के श्रेणी में नहीं आएगा हम इसका निर्माण नहीं कर सकते है। ऐसे में प्राधिकरण को ही इसका विकल्प तलाशना होगा। समस्या ये है कि इस प्रोजेक्ट की कॉस्ट करीब 3 से 4 हजार करोड़ के आसपास होगी। मौजूदा हालत में प्राधिकरण के पास इतना फंड नहीं है। ऐसे में विकल्प के तौर पर बीओटी बेस पर इसका निर्माण किया जा सकता है। जिसमें निर्माण की कंपनी की शर्तों का पालन करना होगा। यानी कंपनी को कई राइटस देने पड़ेंगे। जिसमें विज्ञापन के साथ टोल लेने का अधिकार तक शामिल हो सकता है।

दरअसल नोएडा-ग्रेटरनोएडा एक्सप्रेस वे से यातायात के भार को कम करने के लिए नोएडा प्राधिकरण की पुश्ता रोड पर एक एक्सप्रेस वे बनाने की योजना है। इसे सेक्टर-150 के पास यमुना एक्सप्रेस से जोड़ने की योजना है। ताकि नोएडा एयरपोर्ट के लिए सीधे लिंक मिल सके। प्राधिकरण ने इसके लिए एक सर्वे टीम बनाई थी। जिसमें एनएचएआई को शामिल किया गया। इसकी फिजिबिलिटी एनएचएआई को ही तैयार करनी है। बैठक के दौरान एनएचएआई को पत्र लिखकर निर्माण करने के लिए कहा गया। प्राधिकरण ने कहा कि हम योजना के लिए जमीन देंगे। निर्माण कार्य आप करेंगे। इसको लेकर एनएचएआई ने साफ इंकार करते हुए कहा कि यदि ये एनएच की श्रेणी में आएगा तभी इसका निर्माण एनएचएआई कर सकता है। जिसको लेकर काफी मथा पच्ची की गई। लेकिन अंत में सफलता नहीं मिली। प्राधिकरण अब योजना को अपने स्तर पर बनाने का विचार कर रहा है। इसमें पहला बीओटी और दूसरा पुश्ता रोड को ठीक करके नया लिंक बनाने पर विचार हो रहा है। पुश्ता रोड को ठीक करने में 15 करोड़ और आगे पेच को बढ़ाने करीब 8 से 10 करोड़ का ही खर्च आएगा। इसमें दिक्कत यमुना नदी के डूब क्षेत्र में बने अवैध फार्म हाउस है। उनको बेहतर कनेक्टिविटी मिल जाएगी। इन समस्याओं को लेकर जल्द ही प्राधिकरण स्तर पर एक बैठक होगी।

नए विकसित किए जा रहे सेक्टरों को मिलेगा लाभ

यह सड़क नोएडा के सेक्टर 128, 135, 150, 151, 168 के साथ-साथ ग्रेटर नोएडा के कुछ क्षेत्रों को जाने वाले वाहन चालकों को एक अतिरिक्त कनेक्टिविटी देगा। बता दे पुश्ता सड़क के 11 किलोमीटर के हिस्से का निर्माण पहले से ही किया गया था और जून 2014 में सार्वजनिक रूप से खोला गया।

चुनाव आयोग से अनुमति लेने के बाद एनएमआरसी ने जारी किया आरएफपी

नोएडा, 14 मई (देशबन्धु)। नोएडा-ग्रेटर नोएडा मेट्रो लाइन के अल्फा वन मेट्रो स्टेशन पर आने वाले महीनों में खानपान व खरीदारी के लिए क्योस्क लगे हुए नजर आएंगे। चुनाव आयोग से अनुमति लेने के बाद नोएडा मेट्रो रेल कॉरपोरेशन-एनएमआरसी-ने आरएफपी जारी कर दी है। इच्छुक कंपनियां 13 जून तक आवेदन कर सकती हैं। यहां व्यवसायिक एरिया तैयार किया जाएगा।

एनएमआरसी के अधिकारियों ने बताया कि यहां भूतल पर 5 क्योस्क बनाए जाएंगे। ये क्योस्क 18 से 27 वर्ग मीटर तक के हैं। यहां पर करीब 400 वर्ग मीटर एरिया खाली पड़ा हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि अल्फा वन के अलावा सेक्टर-81, 83, और 101 मेट्रो स्टेशन पर काफी हिस्से में जमीन खाली पड़ी हुई है। गौरतलब है कि इस लाइन के परी चौक और नॉलेज पार्क स्टेशन पर व्यवसायिक कामकाज शुरू करने के लिए करीब छह महीने पहले ही कंपनियों का चयन हो चुका है। यहां पर कंपनियां अपने स्तर से लोगों को क्योस्क आवंटित करेंगी। इससे पहले सेक्टर-51 और 137 पर इस तरह के कामकाज की शुरूआत पहले ही हो चुकी है। इसके अलावा सेक्टर-51, 76, 137, 142, डेल्टा वन और डिपो स्टेशन पर आंतरिक हिस्से में विज्ञापन लगाने के लिए भी टेंडर जारी कर दिया है।

सार संक्षेप

किशोरी को अगवा करने के मामले में दो पर मुकदमा दर्ज

नोएडा। सेक्टर-35 स्थित एक घर के सामने से कार सवार दो युवक किशोरी को अगवा कर फरार हो गए। किशोरी की मां की शिकायत पर सेक्टर-24 पुलिस ने दो युवकों को नामजद करते हुए मुकदमा दर्ज किया है। किशोरी की सकुशल बरामदगी और आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए एक टीम गठित है। पुलिस को दी शिकायत में सेक्टर-35 निवासी अजमीमा खातून ने बताया कि वह घर में साफ सफाई का काम कर परिवार का भरण पोषण करती हैं। आरोप है कि शिकायतकर्ता की 16 वर्षीय बेटी साहिबा परवीन को पड़ोस का रहने वाला समीर काफी दिनों से तंग व परेशान करता था। आरोप है कि 12 मई को जब शिकायतकर्ता की बेटी अपनी बहन के साथ घर पर थी, तभी समीर और उसका भाई मेहरू एक सफेद रंग की गाड़ी लेकर घर के सामने आए। दोनों ने शिकायतकर्ता की 16 वर्षीय बेटी से कहा कि उसकी मां बेहोश हो गई है और उसे डॉक्टर के पास लेकर चलना है। काफी देर तक जब किशोरी घर नहीं लौटी तो महिला ने अनहोनी की आशंका जताते हुए सेक्टर 24 थाने में आरोपियों के खिलाफ शिकायत दी।

चिकित्सक को दिखाकर लौट रही महिला की चेन लूटी

नोएडा। सेक्टर-18 में चिकित्सक को दिखाकर लौट रही महिला के गले से सोने की चेन लूटकर बाइक सवार बदमाश फरार हो गए। पीड़ित महिला के बेटे ने सेक्टर-20 थाने में अज्ञात बदमाशों के खिलाफ केस दर्ज कराया है। वारदात को अंजाम देते हुए बदमाश सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गए हैं। पुलिस को दी शिकायत में नोएडा एक्सटेंशन निवासी धीरज कुमार वर्मा ने बताया कि बीते माह 28 अप्रैल को वह साढ़े चार बजे के करीब अपनी मां और पत्नी को लेकर सेक्टर-18 में चिकित्सक को दिखाने गए थे। धीरज ने कार हल्दीराम रेस्टोरेंट के सामने पार्क कर दी। शिकायतकर्ता की मां जब चिकित्सक को दिखाकर पार्क में खड़ी कार के पास आ रही थीं तभी पीछे से आए बाइक सवार दो बदमाशों ने उनके गले से सोने की चेन लूट ली। चेन की कीमत एक लाख रुपए से ऊपर थी। पुलिस ने लूट की घटना को चोरी में दर्ज किया है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर बाइक सवार बदमाशों की पहचान की जा रही है।

जिला निर्वाचन अधिकारी की बैठक

बुलन्दशहर। मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी चन्द्र प्रकाश सिंह की अध्यक्षता में समस्त प्रत्याशियों एवं उनके प्रतिनिधियों के साथ मतगणना की तैयारियों हेतु बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में उप जिला निर्वाचन अधिकारी/अपर जिलाधिकारी (वि/रा) विवेक कुमार मिश्र द्वारा बताया गया कि जनपद की समस्त विधानसभाओ की गणना मंडी स्थल पर होगी। प्रत्येक विधानसभा वार 14 टैबलों पर गणना की जाएगी प्रत्येक विधानसभा में 1 टेबिल एआरओ की भी होगी। गणना 4 जून को प्रातः 8 बजे से प्रारम्भ होगी। जनपद में लोकसभा गौतमबुद्धनगर की सिकंदराबाद और खुर्जा विधानसभा में 85 वर्ष आयु प्राप्त कर चुके मतदाता एवं दिव्यांग मतदाताओं द्वारा 589 मतदाताओं ने पोस्टल बैलेट से मतदान किया और कर्मचारियों ने 1027 ने पोस्टल बैलेट से मतदान किया है, इनकी गणना गौतमबुद्धनगर जनपद मुख्यालय पर की जाएगी।

छिजारसी में पति ने की ईंट मारकर पत्नी की हत्या

- इलाज के दौरान मौत, शराब पीकर चचेरी साली पर डालता था गलत नजर

नोएडा, 14 मई (देशबन्धु)। थाना सेक्टर-63 क्षेत्र की छिजारसी कालोनी में पति ने सिर पर ईंट मारकर पत्नी की हत्या कर दी। घटना सोमवार की है आस पड़ोस के लोगों ने महिला को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। वहां इलाज के दौरान मंगलवार को उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। प्राथमिक जांच में सामने आया कि पति शराब पीने का आदि था। पत्नी बार बार उसे रोकती थी। इसी बात को लेकर दोनों के बीच झगड़ा हुआ था। मूलरूप से फैजाबाद की रहने वाली 27 साल की रीमा उर्फ प्रतिभा गिरी छिजारसी कॉलोनी में पति हरेंद्र गिरी के साथ रहती थी। सोमवार की देर रात हरेंद्र शराब के नशे में उसकी रीमा से बहस हो गई। इसके बाद रीमा सोने चली गई। इस दौरान हरेंद्र ने उसके सिर पर वार किया। जिसके बाद चीख पुकार मच गई। आनन-फानन में उसे अस्पताल लाया गया। दोनों की शादी करीब 10 साल पहले हुई थी। दोनों की तीन बच्चियां है। सबसे छोटी बच्ची की उर्म महज 1.5 साल है। बड़ी बेटी 8 साल और बीच वाली 5 साल की है। परिवार के साथ इसकी चचेरी साली भी साथ रहती थी। आरोप है कि हरेंद्र चचेरी साली को गलत निगाह से देखता था। जिसको लेकर भी कई बार पति पत्नी के बीच झगड़ा हो चुका है। पूछताछ में पुलिस को इसकी जानकारी हुई। बताया गया कि दंपत्ति दो से तीन दिन पहले ही छिजारसी में शिफ्ट हुए थे। हरेंद्र एक प्राइवेट फर्म में नौकरी करता है। रोजाना शराब पीकर घर आता था। महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। परिजनों की ओर से अभी शिकायत नहीं दी गई है। घटना के बाद से पति फरार है। जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

अब तक नहीं हो सका शहीद विजयंत थापर गेट का निर्माण

खोड़ा, 14 मई (देशबन्धु)। कैप्टन विजयंत थापर गेट पर लगी मूर्ति को उतारे हुए एक वर्ष का समय बीत जाने के बावजूद गेट का निर्माण नहीं कराया गया। देश की आन बान शान के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों का अपमान की बानगी खोड़ा में देखी जा सकती है। गेट पर लगी शहीद की मूर्ति पिछले एक वर्ष से घर के सामने धूल फांक रही है। खोड़ा कालोनी में प्रवेश के मुख्य द्वार किसी न किसी शहीद या महापुरुष के नाम पर रखे गए है। लोगो द्वारा लंबे संघर्ष के बाद रास्ता खुलने पर शहीद विजयंत थापर गेट का निर्माण कराया था। लगभग बीस पच्चीस वर्ष पूर्व निर्मित गेट जीर्ण अवस्था में पहुंचकर गिरने के कगार पर पहुंच गया था। स्थानीय लोगों द्वारा इसकी शिकायत नगर पालिका परिषद के पूर्व अधिशासी अधिकारी के के भड़ाना से की गई। नगर पालिका परिषद के अधिकारियों ने आवागमन के दौरान किसी अनहोनी की घटना की आशंका से बचने के लिए जर्जर द्वार को तुड़वा दिया। और मूर्ति को गेट से उतरवाकर पूर्व भाजपा मंडल उपाध्यक्ष जीत मावी के आवास के बाहर रखवा दिया गया। अगली बोर्ड बैठक में नए गेट बनाने के लिए टेंडर निकाला गया। टेंडर का ठेका ठेकेदार को मिल गया। परंतु लगभग तीन वर्ष का समय बीत जाने के बाद नगर पालिका परिषद द्वारा नए गेट का निर्माण नहीं कराया गया। पूर्व मंडल अध्यक्ष जीत मावी ने बताया कि शहीदों का अपमान कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। शीघ्र निर्माण कार्य शुरू नहीं होने पर लोगो को संगठित करके नगर पालिका परिषद के समक्ष धरना प्रदर्शन किया जाएगा।

कंपनी के लिए भूमि दिलाने की एवज में एक करोड़ हड़पे

- आरोपी सत्यप्रिय के खिलाफ धोखाधड़ी समेत चार धाराओं में मुकदमा दर्ज

नोएडा, 14 मई (देशबन्धु)। प्रोजेक्ट के लिए 60 करोड़ रुपए में भूमि बेचने का सौदा कर एडवांस में मिले एक करोड़ रुपए हड़पने के मामले में आरोपी के खिलाफ सेक्टर-24 थाने में मुकदमा दर्ज हुआ है। केस कोर्ट के आदेश पर दर्ज किया गया है। सेक्टर-12 स्थित मेसर्स एसोटेक लिमिटेड के अधिकृत प्रतिनिधि राधेश्याम शर्मा ने न्यायालय में दिए प्रार्थनापत्र में बताया कि ब्लू वाटर इंटरप्राइजेज के पार्टनर सत्यप्रिय लखोटिया मार्च 2014 में उनके कार्यालय में आए और कंपनी के एमडी एवं अन्य उच्च अधिकारियों के साथ बैठक की।

सत्यप्रिय ने बताया कि उनके संपर्क में दिल्ली के कुछ भू स्वामी हैं, जिनके पास काफी भूमि है और वह उसे बेचना चाहते हैं। साथ ही यह भी बताया कि अगर शिकायतकर्ता की कंपनी उस भूमि पर प्रोजेक्ट लाती है तो उससे काफी लाभ होगा। एक अप्रैल 2014 को सत्यप्रिय कंपनी के कार्यालय पर दोबारा आए और संबंधित पदाधिकारी के साथ मीटिंग करते हुए जमीन के दस्तावेज की फोटो कॉपी भी दिखाई। भूमि के दस्तावेज की फोटो कॉपी देखने के बाद कंपनी के एमडी और उच्च अधिकारियों ने उसके लुभावने वादों पर विश्वास करते हुए 1 अप्रैल को ही एक एमओयू संपादित कर दिया। जिसके तहत कुल 60 करोड़ की भूमि के क्रय के संबंध में सत्यप्रिय को इसका दस प्रतिशत देने की बात तय हुई। बतौर एडवांस उसको कंपनी की ओर से एक करोड़ रुपए का भुगतान आरटीजीएस के द्वारा कर दिया गया। इस दौरान यह भी तय हुआ कि आरोपी ने भूमि की जो फोटोकॉपी दिखाई थी उसकी मूल प्रति लेकर जल्द ही कंपनी के कार्यालय में आएंगे। काफी दिन तक सत्यप्रिय न तो खुद कंपनी में आए और न ही संबंधित भूमि के मालिकों को कंपनी में लाया। वादे के अनुसार उसने भूमि के मूल दस्तावेज भी नहीं सौपें। दस्तावेज के सवाल पर वह लगातार टालमटोल करते रहे। कभी पिता की मौत का बहाना बनाया, तो कभी अन्य बहानों से गुमराह करता रहा। सत्यप्रिय के पिता के साथ शिकायतकर्ता की कंपनी के पुराने व्यवसायिक संबंध रहे हैं। काफी समय तक जब सत्यप्रिय ने मूल दस्तावेज नहीं सौपें तो कंपनी के एमडी और पदाधिकारी को उस पर शक होने लगा। जब मामले की छानबीन की गई तो पता चला की सत्यप्रिय का किसी भी भू स्वामी से संपर्क नहीं है। जिस भूमि की उसने फोटोकॉपी दिखाई थी, वह पूरी तरीके से फर्जी थी। आरोपी ने एक करोड़ रुपए हड़पने के लिए ही ऐसा किया था। दावा यह भी है कि वर्तमान में एक करोड़ की जो राशि दस साल पहले दी गई थी वह ब्याज सहित 6 करोड़ 78 लाख हो गई है।

कंपनी के एमडी समेत अन्य पदाधिकारी ने जब आरोपी से पैसे वापस मांगे तो उसने पैसे वापस करने से इनकार कर दिया। साथ ही उसने गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी भी पीड़ित की कंपनी के एमडी और पदाधिकारी को दी। शिकायतकर्ता ने मामले की शिकायत पूर्व में स्थानीय थाने की पुलिस से की थी पर कोई सुनवाई नहीं हुई। ऐसे में उसने न्यायालय की शरण ली। इस मामले में अब कोर्ट के आदेश पर आरोपी सत्यप्रिय के खिलाफ धोखाधड़ी समेत चार धाराओं में केस दर्ज हुआ है। थाना प्रभारी ने बताया कि पुलिस नामजद आरोपी से पूछताछ करने के बाद मामले में आगे की कार्रवाई करेगी।

जीडीए व नगर निगम अधिकारियों ने किया इंदिरापुरम का निरीक्षण

गाजियाबाद, 14 मई (देशबन्धु)। प्राधिकरण विकास प्राधिकरण (जीडीए) अनुरक्षित इन्दिरापुरम योजना को नगर निगम, गाजियाबाद को हस्तान्तरण

के सम्बन्ध में कार्रवाई करते हुए प्राधिकरण व नगर निगम के अभियन्ताओं व उद्यान विभाग के अधिकारियों ने इंदिरापुरम का निरीक्षण किया।

सहायक अभियन्ता पीयूष सिंह, उद्यान अनुभाग से तरनी सिंह एवं शओम सिंह, उद्यान निरीक्षक तथा नगर निगम, गाजियाबाद की ओर से सहायक अभियन्ता अनूप शर्मा और अवर अभियन्ता जय संतोष गंगवार ने इन्दिरापुरम योजना में स्थापित सड़क और नाले एवं उद्यानिक कार्यों का निरीक्षण किया गया।

धूमधाम से मनाया गया भगवान परशुराम जन्मोत्सव

गाजियाबाद, 14 मई (देशबन्धु)। भगवान परशुराम सेवा न्यास (पंजी0) के तत्वावधान में भगवान परशुराम जन्मोत्सव का आयोजन फार्च्यून रेजीडेंसी, राजनगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद में हुआ। इस पावन संध्या पर कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा सर्वप्रथम भगवान परशुराम का पूजन अर्चन किया गया तदोपरांत भजन मंडली द्वारा सुंदर भजन प्रस्तुत किये गए जिसपर श्रोतागण झूम उठे। भगवान परशुराम की झांकी ने लोगों को उत्साह से भर दिया और पुरा हाल जय परशुराम के नारों से गूंज उठा। इस अवसर पर राजनगर एक्सटेंशन के विभिन्न सोसायटियों में रहने वाले सैकड़ों विप्र वंशी सपरिवार शामिल हुए।

कार्यक्रम संयोजक राजन त्रिपाठी ने भगवान परशुराम सेवा न्यास की नवगठित कार्यकारिणी को सैटलर प्रमोद शर्मा सहित मंच पर आमंत्रित किया। कार्यकारिणी अध्यक्ष अभिषेक

शर्मा ने सभी का परिचय उपस्थित मेहमानों से करवाया। मंच पर सचिव अनुज शर्मा, कोषाध्यक्ष बिजेंद्र विद्रोही, संरक्षक आशुतोष तिवारी, संगठन मंत्री अमित शर्मा, उपाध्यक्ष अभिषेक पांडेय, अरविंद भारद्वाज, राजेश तिवारी, वी पी उपाध्याय, पवन द्विवेदी, सहसचिव के के पांडेय, मीडिया प्रभारी अभिनव पांडेय एवं कार्यकारिणी सदस्य कुलदीप मिश्रा, सुजीत झा एवं सुभाष पांडेय उपस्थित रहे। मातृ शक्ति के रूप में दिशा शर्मा, रूपल शर्मा, स्वाति शर्मा, पिंकी शर्मा, रिंकी शर्मा प्रियंका पांडे, आकांक्षा शर्मा, मोना, कल्पना दुबे, संतोष पुरोहित और ब्राह्मण समाज से अनेकों सहयोगियों का सहयोग मिला। भगवान परशुराम सेवा न्यास विगत दो सालो से राजनगर एक्सटेंशन के सभी विप्र परिवारों को एक मंच पर लाने का पुरजोर प्रयास कर रहा है और इस उद्देश्य में काफी हद तक सफल हो चुका है। जन्मोत्सव के अवसर पर सैकड़ों परिवारों ने भगवान परशुराम सेवा न्यास की सदस्यता ग्रहण की और उसके बाद भोजन प्रसाद लेकर गंतव्य की तरफ रवाना हुए।

जीडीए अधिकारियों व अभियंताओं के कार्य क्षेत्र में भारी बदलाव

- अधिकारी व अभियन्ताओं को दायित्वों का निर्वहन ईमानदारी से करने की वीसी ने हिदायत दी

गाजियाबाद, 14 मई (देशबन्धु)। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) उपाध्यक्ष अतुल वत्स ने मंगलवार को विशेष अधिकारियों तथा अभियंताओं के कार्यों में व्यापक फेर बदल किया है। साथ ही उन्होंने अपने आदेशों में हिदायत दी है कि जिस अधिकारी या अभियंता को जो कार्य दिया गया है उसका निर्वहन पारदर्शिता और ईमानदारी के साथ करें और कोई किसी किस्म की कोताही न करें। खासकर प्रवर्तन विभाग से जुड़े अधिकारियों को उन्होंने कहा है कि वह पूरे क्षेत्र में स्वीकृत मानचित्र के विरुद्ध कोई निर्माण न होने दें। इसके लिए आपस में सामंजस्य बताएं और अपने कार्य को अंजाम दें। जीडीए उपाध्यक्ष के आदेश को लेकर आज दिनभर हड़कंप मचा रहा और अधिकारी इसी को देकर चर्चा करते रहे। जीडीए उपाध्यक्ष ने विशेषाधिकारी कनिका कौशिक को जोन एक व जोन दो का प्रभारी अधिकारी बनाया गया है। जबकि जोन एक में सहायक अभियंता रूद्रेश शुक्ला और बलवंत सिंह को जोन प्रभारी और जोन दो में सहायक अभियंता योगेश कुमार को जोन प्रभारी बनाया गया है। विशेष अधिकारी गुंजा सिंह को जोन 3, 4 व 5 का प्रभारी अधिकारी बनाया गया है। हालांकि इन पर वह पहले ही काम कर रही थी। जोन तीन में सहायक अभियंता दीप्ति चौहान, निशांत चंद्र, अनिल वर्मा, अनिल शर्मा, सुधीर कुमार पांडे को जोन प्रभारी बनाया है। जोन 4

में सहायक अभियंता अजीत कुमार सिंह बुधराज सिंह और डांसिंग मेहरा को जोन प्रभारी बनाया है। इसी तरह जोन 5 में अनुज कुमार, चंद्र मौली पांडेय को सेवानिवृत होने तक जोन प्रभारी बनाया है। जबकि सहायक अभियंता संजय कुमार को जोन प्रभारी बनाया है। अधिशासी अभियंता आलोक रंजन को जोन 6 का प्रभारी अधिकारी, अधिशासी अभियंता राजकुमार वर्मा को जोन 7 का प्रभारी अधिकारी, अधिशासी अभियंता लवकेश कुमार को जोन 8 का बनाया बनाया है। सहायक अभियंता विनय कुमार वर्मा, पीयूष सिंह को 6 का जोन प्रभारी, सहायक अभियंता सुरजीत सिंह जोन सात का जॉन प्रभारी बनाया है। इसी तरह सहायक अभियंता प्रदीप कुमार सिंह, विनोद कुमार सिंह को जून 8 का जोन प्रभारी बनाया है। इसके अलावा मास्टर प्लान में सहायक अभियंता नेकराम राजपूत व पवन गुप्ता तथा अवर अभियंता ज्ञान प्रकाश द्विवेदी बी मौर्य में विजय चौहान को तैनाती दी गई है।

विधि अनुभाग में विशेष अधिकारी गुंजा सिंह को विधि प्रभारी बनाया गया है। जबकि सहायक अभियंता रूद्रेश शुक्ला व विनय वर्मा को सहायक प्रभारी विधि बनाया गया। इसी के साथ भूअर्जन में कनिका कौशिक को प्रभारी अधिकारी, सहायक अभियंता संजय सिंह व सुरजीत सिंह को सहायक प्रभारी भू अर्जन बनाया गया है।

संपत्ति में गुंजा सिंह को संपत्ति प्रभारी जोन 1 से 8 तक बनाया गया है। जबकि अधिकारी कनिका कौशिक को समस्त व्यवसायिक संपत्ति जोन 1 से लेकर 8 तक का प्रभारी बनाया गया है। उसके साथ ही कंप्यूटर और विज्ञापन का प्रभारी विशेष अधिकारी कनिका कौशिक को बनाया गया है जबकि सहायक अभियंता पर बुधराज सिंह को सहायक प्रभारी कंप्यूटर और सहायक अभियंता रूद्रेश शुक्ला को सहायक प्रभारी विज्ञापन बनाया गया है। यह सभी आदेश 1 जून से लागू होंगे।

औद्योगिक क्षेत्रों में सुविधाओं को व्यवस्थित करने में जुटा नगर निगम

गाजियाबाद, 14 मई (देशबन्धु)। नगर निगम ने अब औद्योगिक इलाकों में सुविधाएं उपलब्ध करने के लिए कार्य करना शुरू कर दिया है। वहीं नगर आयुक्त विक्रमादित्य मलिक ने उद्यमियों से पर्यावरण के सुधार में सहयोग करने की अपील की है। नगर आयुक्त ने निर्माण विभाग, उद्यान विभाग, प्रकाश विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा कार्य की रफ्तार को तेज कर दिया गया है, पांचो जोन में सुविधाओं को दुरुस्त करते हुए विभागीय अधिकारी कार्य कर रहे हैं। प्राथमिकता के आधार स्थान चयन करते हुए कार्य किया जा रहा है। नियमित सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए कवि नगर जोन अंतर्गत डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन के लिए गाड़ियों का टाइमिंग बढ़ाया गया है। मोहन नगर जोन के अंतर्गत प्रकाश व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा रहा है इसी क्रम में कवि नगर में भी निर्माण विभाग तथा उद्यान विभाग द्वारा औद्योगिक क्षेत्र में कार्य रफ्तार से कराए जा रहे हैं।

प्रकाश विभाग द्वारा आनंद इंडस्ट्रियल एरिया मोहन नगर में अभियान चलाया गया हाई मास्क तथा अन्य लाइटों को व्यवस्थित

- पर्यावरण सुधार के लिए उद्योग बंधु भी करें सहयोग : नगर आयुक्त

करते हुए मरम्मत की गई, लोहा मंडी कवि नगर इंडस्ट्रियल एरिया, बुलंदशहर इंडस्ट्रियल एरिया अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में भी सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए कूड़ा उठान को व्यवस्थित कराया जा रहा है, बुलंदशहर रोड औद्योगिक क्षेत्र में रोड का निर्माण भी कराया गया है इसी प्रकार एयर क्वालिटी के अंतर्गत औद्योगिक क्षेत्र की कई सड़कों का सुधार कराया गया है, गाजियाबाद नगर निगम के सभी विभाग औद्योगिक क्षेत्र में भी विशेष कार्रवाई को प्रमुख रूप से कर रहे हैं तथा शहर को प्रदूषण मुक्त करने का प्रयास जारी है।

कैपिटल ज़ोन

उवाच

यह सुझाव ग्रेटर नोएडा (वेस्ट) में यातायात की समस्या कम करने के साथ साथ के लोगों के लिए सुविधाजनक होगा और उन्हें विभिन्न स्थानों तक आसानी से पहुंचने का माध्यम प्रदान करेगा। इससे जनता को सार्वजनिक परिवहन के उपयोग के साथ साथ आर्थिक बचत भी होगी, साथ ही कार्बन उत्सर्जन कम करके पर्यावरण बेहतर बनाने की दिशा में भी योगदान दे सकेंगे :
अभिषेक कुमार, नेफोवा अध्यक्ष

एयरपोर्ट कनेक्टिविटी को लेकर एनएचआई अधिकारियों के साथ यमुना प्राधिकरण की बैठक

15 जून तक यमुना एक्सप्रेस वे से जुड़ेगा नोएडा एयरपोर्ट

- दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे से 30 जून तक जुड़ नोएडा एयरपोर्ट
- कार्गो टर्मिनल व एविएशन हब को जोड़ने वाली 30 मीटर चौड़ी सड़क का भी निर्माण करेगा एनएचआई
- आगामी सितम्बर माह में प्रस्तावित है नोएडा एयरपोर्ट से हवाई जहाजों की उड़ान

एयरपोर्ट की कनेक्टिविटी को लेकर बन रहे सभी वैकल्पिक मार्ग के निर्माण का जिम्मा एनएचआई को दिया जा रहा है। कनेक्टिविटी को लेकर एक एजेंसी द्वारा कार्य कराए जाने से निर्माण की गुणवत्ता और सामानता बन रहेगी। 30 मीटर चौड़ी सड़क और एयरपोर्ट के वीआईपी रोड निर्माण कार्य को लेकर एनएचआई के साथ एक-दो दिन में करार पर हस्ताक्षर किया जाएगा : डॉ. अरूणवीर सिंह, मुख्य कार्यपालक अधिकारी यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

ग्रेटर नोएडा, 14 मई (देशबन्धु)। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को यमुना एक्सप्रेस वे से जोड़ने के लिए बनाई जा रही 7.5 किमी लंबी सड़क का निर्माण 15 जून तक पूरा हो जाएगा। फिलहाल चार लेन ही 15 जून तक चालू किया जाएगा। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे को नोएडा एयरपोर्ट से जोड़ने के लिए चल रहे ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे का निर्माण भी 30 जून तक पूरा हो जाएगा। नोएडा एयरपोर्ट कनेक्टिविटी को लेकर बनाने वाली सभी सड़क का निर्माण नेषनल हाइवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचआई) करेगी। कनेक्टिविटी को लेकर मंगलवार यमुना एक्सप्रेस वे प्राधिकरण बोर्ड रूम में एनएचआई और यमुना प्राधिकरण अधिकारियों के साथ बैठक हुई। नोएडा एयरपोर्ट कनेक्टिविटी को लेकर आ रही सभी बाधाओं का रास्ता निकाल लिया गया। नोएडा एयरपोर्ट के उत्तर पूर्वी दिशा में 30 मीटर चौड़ी और 8.25 लंबी सड़क के निर्माण का भी जिम्मा भी एनएचआई को दे दिया गया। इसके निर्माण पर होने वाले 63 करोड़ रूपए का खर्च यमुना प्राधिकरण वहन करेगा। पहले यमुना प्राधिकरण खुद इस सड़क का निर्माण कर रहा था। वहीं इंटरचेंज के निर्माण में भी तेजी ला दी गई है। हवाई जहाजों की उड़ान शुरू होने से पहले इंटरचेंज का निर्माण पूरा किए जाने का लक्ष्य रखा गया है, ताकि एयरपोर्ट पहुंचने में यात्रियों को किसी तरह की कोई दिक्कत न हो। बिना इधर-उधर भटके सीधे एयरपोर्ट पहुंच जाएंगे। इसके साथ ही एयरपोर्ट के कार्गो टर्मिनल को जोड़ने के लिए बनने वाली सड़क की प्रक्रिया भी तेज कर दी गई है। दरअसल नोएडा एयरपोर्ट की बेहतर कनेक्टिविटी के लिए यमुना एक्सप्रेस वे पर जीरो प्वाइंट से 32 किमी पर इंटरचेंज का निर्माण किया जा रहा है। इंटरचेंज से नोएडा एयरपोर्ट के गेट तक 750 मीटर लंबी सड़क का निर्माण किया जा रहा है। इसकी जिम्मेदारी एनएचआई के पास है। 7.5 मीटर लंबी सड़क निर्माण में गांव दयानतपुर के पास तालाब को लेरक बाधा रही थी। एनएचआई तालाब के पास एलिवेटेड रोड बनाने को तैयार हो गया। जिस पर करीब 20 करोड़ रूपए अतिरिक्त खर्च होगा। इसका खर्च भी एनएचआई वहन करने को तैयार हो गया। 15 जून से पहले तालाब के उपर एलिवेटेड रोड बनाकर इसे चालू कर दिया जाएगा। नोएडा एयरपोर्ट को दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे से जोड़ने से बल्लभगढ़ से यमुना एक्सप्रेस वे इंटरचेंज तक ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस वे का निर्माण एनएचआई कर रहा है। इसके निर्माण में भी अमरपुर पलाका और फलैंदा बांगर गांव के पास वन विभाग और ग्राम समाज की जमीन आ रही है। यह करीब 2.4 हेक्टेयर जमीन है। यमुना एक्सप्रेस वे प्राधिकरण ने 2.4 हेक्टेयर जमीन का पैसा जिला प्रशासन को भुगतान कर दिया है। जिससे बल्लभगढ़ से दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे को एयरपोर्ट से जोड़ने की बाधा दूर हो गई है। एनएचआई इसका निर्माण कार्य 30 जून तक पूरा कर देगा। यमुना एक्सप्रेस वे पर 32 किमी पर इंटरचेंज बन जाने से दिल्ली, नोएडा, ग्रेटर नोएडा व आगरा की तरफसे आने वाले यात्री बिना किसी रूकावट के सीधे एयरपोर्ट पहुंच जाएंगे।

नोएडा एयरपोर्ट के उत्तर पूर्वी दिशा में कार्गो टर्मिनल और एविएशन का निर्माण किया जा रहा है। इसे भी यमुना एक्सप्रेस वे से जोड़ने के लिए 8.25 किमी लंबी सड़क का निर्माण किया जाएगा। जिस पर करीब 63 करोड़ रूपए खर्च होगा। पहले इस सड़क का निर्माण यमुना प्राधिकरण कर रहा था। अब इसके निर्माण का भी जिम्मा एनएचआई को सौंप दिया। इसके अलावा एयरपोर्ट से यमुना एक्सप्रेस वे तक एक अतिरिक्त वीआईपी रोड प्रस्तावित है। अब इसके भी निर्माण का जिम्मा एनएचआई को दिया गया है।

सेक्टर तीन में घर के सामने सीएंडडी वेस्ट का ढेर मिलने से फर्म पर 50 हजार का जुर्माना

- प्राधिकरण ओएसडी ने ग्रेनो वेस्ट के सेक्टर दो-तीन का लिया जायजा
- गौड़ सिटी के पास रोड किनारे कूड़ा मिलने पर ओएसडी ने स्वास्थ्य विभाग की टीम को भी फटकारा

ग्रेटर नोएडा,14 मई (देशबन्धु)। ग्रेटर नोएडा की सफाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए जनस्वास्थ्य विभाग की तरफ से चलाया जा रहा जांच अभियान जारी है। प्राधिकरण के ओएसडी संतोष कुमार ने मंगलवार को ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टर दो व तीन का निरीक्षण किया। सेक्टर तीन में एक घर के सामने सीएंडडी वेस्ट का ढेर लगा होने पर ओएसडी ने संबंधित फर्म पर 50 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया। रोड किनारे कूड़ा मिलने पर ठेकेदार पर कार्रवाई की चेतावनी दी।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार ने ओएसडी स्वास्थ्य संतोष कुमार को टीम के साथ गांवों व सेक्टरों में सफाई व्यवस्था दुरुस्त करने के लिए नियमित रूप से निरीक्षण करने के निर्देश दिए हैं। मंगलवार को ओएसडी संतोष कुमार के नेतृत्व में स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक चेतराम सिंह व टीम ने ग्रेटर नोएडा वेस्ट के अलग-अलग एरिया में जाकर औचक निरीक्षण किया। ओएसडी सबसे पहले चार मूर्ति चौक से तिगड़ी गोलचक्कर तक की रोड की सफाई व्यवस्था को देखा। रोड किनारे कूड़ा पड़ा मिला, जिस पर स्वास्थ्य विभाग की टीम को कड़ी फटकार लगाई और संबंधित ठेकेदार को फोन कर तत्काल सफाई कराने और दोबारा गंदगी मिलने पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी। इसके बाद ओएसडी सेक्टर तीन पहुंचे। यहां मकान नंबर 606 के सामने

सीएंडडी वेस्ट का ढेर लगा दिखा। इस पर ओएसडी ने संबंधित फर्म राइज इलेवन पर 50 हजार रुपए का जुर्माना लगाया। सेक्टर दो में भी सफाई व्यवस्था को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग से जुड़ी सभी एजेंसियों को लगाकर पूरे शहर की सफाई व्यवस्था को दुरुस्त कराने के निर्देष दिए। ओएसडी संतोष कुमार ने कहा है कि शहर की सफाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए बिना पूर्व सूचना के औचक निरीक्षण का अभियान आगे भी जारी रहेगा।

युवक की लाठी डंडों से पीट-पीटकर उतारा मौत के घाट

- सीएनजी भरवाने को लेकर हुए विवाद में घटना का दिया अंजाम
- मृतक अमन अपनी माता-पिता का है एकलौता बेटा
- पुलिस ने दो आरोपियों किया गिरफ्तार, एक साथी अभी है फरार

ग्रेटर नोएडा,14 मई (देशबन्धु)। थाना ईकोटेक-3 क्षेत्र में सोमवार की रात सीएनजी पंप पर लाइन में पहले लगने को लेकर हुए विवाद में फॉर्च्यूनर सवार तीन हमलावरों ने गाजियाबाद के रिस्तल निवासी अमन कसाना (22) की लाठी डंडों से पीट-पीट कर हत्या कर दी। अमन अपने माता-पिता के इकलौता बेटा था। पुलिस ने इस हत्याकांड में खैरपुर गुर्जर निवासी अजय उर्फ अज्जू और उसके साथी खेड़ा चौगानपुर निवासी ऋषभ को गिरफ्तार कर लिया है। तीसरे आरोपी चौगानपुर निवासी अंकुश की पुलिस तलाश कर रही है। आरोपियों की गाड़ी और खून लगा हुआ डंडा भी जब्त किया है। घटना के दौरान अमन कसाना के साथ उनकी बुआ का लड़का अभिषेक भी था। वह हमलावरों के सामने हाथ जोड़ता रहा और गिड़गिड़ाता रहा कि अमन को छोड़ दें, लेकिन हमलावरों का दिल नहीं पसीजा। गाजियाबाद के गांव रिस्तल निवासी अमन कसाना की शादी दो साल पहले हुई थी। उनके एक साल की बेटी है। अमन का गाजियाबाद में भवन निर्माण सामग्री का काम है। अमन की एक बहन की बिसरख में ससुराल है। पास के ही गांव भनौता में अमन की बुआ रहती हैं। सोमवार को अमन अपनी बुआ के यहां पर आया था। उसे अपनी बहन के साथ अगले दिन दिल्ली के कालका जी मंदिर जाना था। सोमवार की रात करीब 10-30 बजे अमन अपनी आईटेन

गाड़ी में सीएनजी भरवाने के लिए खेड़ा चौगानपुर के गौतमबुद्ध बालक इंटर कालेज के पास स्थित सीएनजी पंप पहुंचा। उसके साथ बुआ का लड़का अभिषेक भी था। पुलिस के मुताबिक अमन अपनी गाड़ी के साथ लाइन में लगा था। इस बीच हमलावर पक्ष का एक युवक बैगन आर गाड़ी लेकर आया और अमन की गाड़ी के आगे लगा दी। इस पर दोनों में विवाद हो गया। अमन ने बैगन आर को ही पहले सीएनजी भरवाने दी। इसके बाद भी हमलावर पक्ष के युवक ने फोन करके अपने परिचितों को सूचना दे दी। सीएनजी भरवाने के बाद जब अमन पंप से रोड पर आया तभी फॉर्च्यूनर सवार तीन चार युवकों ने अमन की गाड़ी रोक ली। हमलावरों ने गाड़ी में रखे लाठी डंडे सरिया आदि से अमन को बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। उसके सिर पर प्रहार कर बुरी तरह घायल कर दिया। इस बीच अमन के साथ मौजूद अभिषेक हमलावरों के आगे गुहार करता रहा, लेकिन उसकी एक न सुनी। मारपीट कर हमलावर अमन को अधमरा छोड़घ् गए। घायल अवस्था में उसे अस्पताल ले जाया गया, वहां पर उसने दम तोड़ दिया। परिजनों की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस ने अजय उर्फअज्जू और उसके साथी ऋषभ को गिरफ्तार कर लिया है। जबकि अंकुश की तलाश की जा रही है। सोमवार को गाजियाबाद में अमन के शव का अंतिम संस्कार किया गया है।

ग्रेनो वेस्ट व गांवों होकर बस चलाने की नेफोवा ने रखी मांग

- नेफोवा ने ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के एसीईओ से मिलकर रखा प्रस्ताव

ग्रेटर नोएडा,14 मई (देशबन्धु)। नेफोवा ने ग्रेटर नोएडा (वेस्ट) के गांवों और सोसाइटीज से होते हुए बस चलाने की मांग ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण एसीईओ अन्नपूर्णा गर्ग से की है। नेफोवा ने ग्रेटर नोएडा पश्चिम के क्षेत्र को रेलवे स्टेशन गाजियाबाद, इंटरस्टेट बस डिपो, ऑफिसेस और मेट्रो से जोड़ने का प्रस्ताव दिया गया है।

नेफोवा अध्यक्ष अभिषेक कुमार ने बताया कि यह सुझाव ग्रेटर नोएडा (वेस्ट) में यातायात की समस्या कम करने के साथ साथ के लोगों के लिए सुविधाजनक होगा और उन्हें विभिन्न स्थानों तक आसानी से पहुंचने का माध्यम प्रदान करेगा। इससे जनता को सार्वजनिक परिवहन के उपयोग के साथ साथ आर्थिक बचत भी होगी, साथ ही कार्बन उत्सर्जन कम करके पर्यावरण बेहतर बनाने की दिशा में भी योगदान दे सकेंगे। विभिन्न रेजिडेंशियल क्लस्टर जैसे गौरसिटी 1,2, सेक्टर 16, सेक्टर 1, टेक जोन 4, सेक्टर 2 व 3, सेक्टर 11व 12 इत्यादि के साथ इससे लगे गांव को विभिन्न कार्यालय क्लस्टर, जैसे विप्रो, डीएलएफ टेक पार्क, सेक्टर-62, वर्ल्ड ट्रेड टावर इत्यादि तथा अन्तर स्टेट बस स्टेशन, रेलवे स्टेशन इत्यादि के साथ बॉटनिकल गार्डन मेट्रो और सेक्टर 52 मेट्रो को भी जोड़ने का प्रस्ताव दिया गया है। इसके साथ साथ रूट के प्रस्ताव में आंतरिक परिवहन व्यवस्था का भी ध्यान रखा गया है। जिससे लोग अपनी सोसाइटी और गांव से ग्रेटर नोएडा वेस्ट के कार्यालय और शॉपिंग मॉल तथा दूसरी सोइटियों में भी आसानी से पहुंच सकें, यह सुझाव ग्रेटर नोएडा पश्चिम के पर्यावरण को और अधिक स्वच्छ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नेफोवा ने इसके लिए प्राधिकरण का आभार व्यक्त किया गया है। यह नए, सुरक्षित और स्वच्छ परिवहन व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है जो ग्रेटर नोएडा (वेस्ट) के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्राधिकरण के साथ बैठक में नेफोवा से दीपांकर कुमार, दिनकर पांडे तथा प्रतिश राय शामिल रहे।

श्री आदर्श रामलीला कमेटी सूरजपुर के अध्यक्ष पद का चुनाव

ग्रेटर नोएडा,14 मई (देशबन्धु)। आर्य समाज मंदिर सूरजपुर में श्री आदर्श रामलीला कमेटी सूरजपुर की बैठक आयोजित की गई, बैठक की अध्यक्षता कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भूदेव शर्मा ने की और बैठक का संचालन श्री आदर्श रामलीला कमेटी के महासचिव पंडित सत्यपाल शर्मा ने किया जिसमें सर्वप्रथम पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय श्री श्रीचंद भाटी की दिवंगत आत्मा की शांति के लिए मौन धारण किया गया। बैठक में गत वर्ष के आयोजन का आय-व्यय का ब्योरा कमेटी के कोषाध्यक्ष विशाल गोयल ने सदन के समक्ष रखा। तत्पश्चात सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद के चुनाव हेतु सतवीर भाटी को श्री आदर्श रामलीला कमेटी सूरजपुर का अध्यक्ष चुना गया यह प्रस्ताव सदन में ध्वनि मत से पास किया गया। इस मौके पर कमेटी के संरक्षक वीरपाल भगत, विजयपाल भाटी, जयदेव शर्मा, राजवीर सिंह भाटी, कमेटी के उपाध्यक्ष मूलचंद प्रधा,न मीडिया प्रभारी पंडित कर्मवीर आर्य, अजय शर्मा, रुपेश चौधरी, कमेटी के प्रबंधक लक्ष्मण सिंघल, ओमवीर बैसला, विनोद भाटी, संगठन मंत्री- राजेश ठेकेदार, प्रचार मंत्री- सुनील सौनिक, जयपाल ठेकेदार, कमेटी के संयोजक भगत सिंह आर्य आदि लोग मौजूद रहे।

सेक्टर बीटा एक का फॉरेस्ट पार्क बदहाल, सेक्टर के लोगों ने किया प्रदर्शन

ग्रेटर नोएडा,14 मई (देशबन्धु)। सेक्टर बीटा एक में बने फॉरेस्ट पार्क का रखरखाव न होने से दयनीय हालत हो गई। पार्क की बाउंड्री एवं जालिया बहुत ही जर्जर अवस्था में है। सेक्टर के लोगों ने पार्क की मरम्मत को लेकर मंगलवार को प्रदर्शन किया। हरेंद्र भाटी का कहना है कि फॉरेस्ट पार्क की सेक्टर बीटा वन के जो पार्क है उनमें जो फुटपाथ बने हुए हैं उनकी स्थिति भी बहुत ही दयनीय हालत में है, समय-समय पर प्राधिकरण अधिकारियों को अवगत कराने के बाद भी समस्या का समाधान नहीं किया जाता। सी ब्लॉक के पार्क में हट बनाने के लिए भी प्राधिकरण में शिकायत की थी आज तक किसी ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया। सेक्टर के लोगों ने प्राधिकरण सीईओ से बीटा वन में उद्यान से संबंधित समस्याओं का निदान करने की मांग रखी है। इस मौके पर देवीशरण शर्मा, हरेन्द्र भाटी, भीम सिंह भाटी, सुरेंद्र बंसल, योगेश ठाकुर, राजवीर सिंह, राहुल नम्बरदार, कुलदीप भाटी, राकेश शर्मा, यशवीर सिंह, ओमदत शर्मा, दीपक भाटी, सुभाष गौड, सिद्धार्थ सिंह, सोबीर ठाकुर, पुरन सिंह चौहन, मुकेश छोकर, राजेंद्र सिंह, डॉ. आर झा, देवरारी आदि लोग मौजूद थे।

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
पश्चिमी उत्तर प्रदेश ब्यूरो कार्यालय
209 कृष्णा अपरा प्लाजा अल्फा
कॉमर्शियल बेल्ट, ग्रेटर नोएडा
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के लिए संम्पर्क करें
खोया-पाया/ सूचना/
नाम परिवर्तन/ आवश्यकता
फोनः-0120-4270009

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के संपर्क करें
क्षेत्रिय कार्यालय रबुपुरा
Mob: 9411492655

Shiv Mahima Enterprises
सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
नाम परिवर्तन, खोया पाया, सूचना, अवश्यकता
Mob.: 9910280173
Off.-221, 2nd Floor, Meridian View Plaza, Alpha Comm. Belt, Gr. Noida

संदिग्ध अवस्था में एक व्यक्ति लापता

दनकौर,14 मई (देशबन्धु)। दनकौर क्षेत्र के रीलखा गांव निवासी एक व्यक्ति संदिग्ध अवस्था में लापता हो गया। इस संबंध में उसकी पत्नी ने मंगलवार को कोतवाली में उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई है। पूजा ने पुलिस को दी शिकायत में कहा है कि उसके 32 वर्षीय पति शिशुपाल सोमवार को हरियाणा में रहने वाले अपने माता-पिता से मिलने की कहकर घर से गए थे। जो वहां नहीं पहुंचे हैं, साथ वापस घर भी नहीं लौट पाए हैं। काफी तलाश के बाद भी उसके पति का कोई सुराग नहीं चल पाया है, जिसके चलते परिवार के लोगों ने उनको काफी जगह तलाश भी किया है। जिनका फोन भी स्विच ऑफ जा रहा है। जिसके बाद उन्होंने मंगलवार को कोतवाली में पति की गुमशुदगी दर्ज कराई है। कोतवाली प्रभारी संजय सिंह का कहना है कि जल्द ही गायब व्यक्ति का सुराग लगा लिया जाएगा।

दवाओं के प्रयोग में पशु प्रबंधन पर कार्यशाला आयोजित

- कार्यशाला में पशुओं पर दवाओं के प्रयोग पर मानवीय नैतिकता पर दिया गया जोर

ग्रेटर नोएडा,14 मई (देशबन्धु)। लॉयड इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी, फार्मेसी में लॉयड एनिमल फैसिलिटी फॉर एक्सपेरिमेंटशन के द्वारा एनीमल हैंडलिंग और बेसिक एक्सपेरिमेंटल तकनीक पर एक दिवसीय व्यवहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली, एनसीआर के विभिन्न कॉलेजों और यूनिवर्सिटी जिसमें डीपीएसआरयू, जामिया हमदर्द, आई एफटीएम, मेट्रो, आईटीएस आदि के लगभग 70 से अधिक बी.फार्म. और एम. फार्म. के छात्रों ने हिस्सा लिया। आईजीआईबी नई दिल्ली के डॉ. विजय पाल सिंह, जेएनयू नई दिल्ली के सेंट्रल लेबोरेटरी एनिमल रिसोर्सेज चीफ वेटरनरी ऑफिसर डॉ. दिनेश के यादव, एनबीआरसी, मिनिस्ट्री ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के डा. इंद्रजीत यादव ने बतौर रिसोर्स पर्सस वर्कशॉप को संबोधित किया। डॉ. विजय पाल सिंह ने प्रयोगों में जानवरों के उपयोग एवं नैतिकता से जुड़े विभिन्न पहलुओं के बारे विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि नई दवा विकसित करने और अन्य उत्पादों की सुरक्षा का परीक्षण करने के लिए पशुओं पर प्रयोग करते हुए नैतिकता का ख्याल रखा जाए। पशु प्रयोगों को यथासंभव मानवीय बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जानवरों पर प्रयोगों को वैकल्पिक तकनीकों से और बेहतर बनाने की जरूरत है। डॉ. दिनेश के. यादव ने कहा कि रिसर्च में एनिमल एक्सपेरिमेंट के दौरान उनके दर्द और कष्ट को कम करने की जरूरत है। प्रयोग करते समय जानवरों की दर्द और पीड़ा को कम करना एक नैतिक आवश्यकता है। उन्होंने एनिमल एथिक्स के महत्व बारे जानकारी दी।

अलंकरण समारोह के साथ छात्र संसद का हुआ चुनाव

- कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने विद्यार्थियों को कर्तव्य पालन के लिए किया प्रोत्साहित

ग्रेटर नोएडा,14 मई (देशबन्धु)। रेयान इंटरनेशनल स्कूल, ग्रेटर नोएडा अलंकरण समारोह आयोजित करके सत्र 2024-25 के लिए अपने छात्र संसद का चुनाव किया। इस अवसर पर प्रतिष्ठित अतिथि अंशुल हिंडाल, आईएएस अधिकारी, पूर्व छात्र रेयान इंटरनेशनल स्कूल शामिल हुए। मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ निवर्तमान अध्यक्ष देवांश चौधरी ने छात्र परिषद 2024 के अध्यक्ष प्रत्यूष कौल को स्कूल का झंडा सौंपा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने स्कूल पार्लियामेंट का नामकरण किया और उन्हें अपने कर्तव्यों को पूरी ईमानदारी से निभाने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया। 40 सदस्यीय संसद में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, उप प्रधान मंत्री, अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रूप में 6 मुख्य परिषद सदस्य और 16 मंत्रालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले 34 मंत्री और उनके 16 'राज्य मंत्री' और 2 विपक्षी मंत्रियों ने जिम्मेदारी ली। प्रत्यूष कौल को उपाध्यक्ष- सुरभि शर्मा, अध्यक्ष- अदविक कुमार, उपाध्यक्ष- शगुन सिंह, प्रधान मंत्री- अमीषी रघु, उप प्रधान मंत्री- संजीव योहान एबेनेजर, गृह और अनुशासन मंत्री- मिष्टी गौर, के साथ राष्ट्रपति के रूप में चुना गया। इसी के साथ अन्य विद्यार्थियों को विभिन्न पदों के लिए जिम्मेदारी दी गई। हेड बॉय- रुद्र पराशर, हेड गर्ल- श्रव्या सिंह, आर्यभट्ट हाउस कैप्टन- रियांश विशाल पटेल, आर्यभट्ट वाइस कैप्टन- सिद्धि कश्यप, आइंस्टीन हाउस कैप्टन- शांभवी उपाध्याय, आइंस्टीन वाइस कैप्टन- परमगीत कौर, न्यूटन हो उपयोग कप्तान-यशवी चौधरी, न्यूटन वाइस कप्तान- आद्या चौहान, रमन हाउस कप्तान- ईशानी त्रिवेदी, रमन हाउस उप कप्तान- विहान कंसल, अनुशासन प्रभारी - दीक्षिता, सृष्टि शर्मा, क्षितिज चौधरी, आरव चौधरी। स्कूल काउंसिल के सदस्यों के चेयरमैन डॉ. ऑगस्टीन एफ. पिंटो और प्रबंध निदेशक मैडम ग्रेस पिंटो ने जिम्मेदारियां निभाने का अवसर देने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने स्कूल के ध्वज का सम्मान करने और अपने कर्तव्यों का निर्वहन ईमानदारी और समर्पण के साथ करने का वादा किया।

फर्जी कागज तैयार कर जमीन बेंचने के आरोप में ग्यारह नामजद

ग्रेटर नोएडा,14 मई (देशबन्धु)। जेवर में वास्तविक जमीन मालिक की जगह आरोपियों ने फर्जी व्यक्ति खड़ा करके जमीन बेच दी। इस मामले में अदालत के आदेश पर 11 आरोपियों के खिलाफ जेवर कोतवाली में मुकदमा दर्ज किया गया है। पीड़ित पक्ष की ओर से अदालत में पैरवी करने वाले अधिवक्ता रजनीश भाटी ने बताया कि दिल्ली के ग्रीन पार्क मार्केट निवासी गुरुदीप सिंह की जेवर के गांव अमरपुर पालका में 2900 हेक्टेयर जमीन है। यह जमीन उन्होंने 2015 में बैनामे से खरीदी थी। आरोपियों ने गुरुदीप सिंह के स्थान पर उनके नाम से एक फर्जी व्यक्ति खड़ा कर दिया। उसका आधार कार्ड और पैन कार्ड भी बनवा दिया। इसके बाद उनकी जमीन को बेच दिया। इस बात की जानकारी होने के बाद पुलिस को पूरी घटना की जानकारी दी लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। इसके बाद गुरुदीप सिंह ने जेवर में मजिस्ट्रेट कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। अदालत ने आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करने के आदेश दिए। इसके बाद पुलिस ने गाजियाबाद के नेहरू नगर निवासी रेखा यादव व स्वाति यादव, भंगेल बेगमपुर निवासी पुष्पा शर्मा व सुधीर कुमार शर्मा, जेवर के मुरादगढ़ी निवासी शकुंतला देवी, ग्रेटर नोएडा के अल्फा-2 निवासी कनकलता व कौशल कुमार, दिल्ली के शकरपुर निवासी सरिता सक्सेना और तीन अन्य लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

संपादकीय

नई दिल्ली, बुधवार 15 मई 2024

संस्थापक-सम्पादक : स्व. माणाराम सुरजन

चौथे चरण के मतदान के बाद की भाजपा

लोकसभा चुनाव के सोमवार को हुए चौथे चरण के मतदान के बाद एक बार फिर से यह जांचने-परखने की कवायद तेज़ हो गई है कि तीसरी बार सरकार बनाने के लिये जी-तोड़ मेहनत कर रही भारतीय जनता पार्टी कहां खड़ी है। जिस प्रकार से 19 व 26 अप्रैल तथा 7 मई को क्रमश: पहले, दूसरे एवं तीसरे चरण के हुए मतदान में वह पिछड़ती हुई नज़र आई थी, क्या वह फिसलन चौथे चक्र में भी बरकरार रही या फिर वह मुकाबले में लौट रही है? शाम को जब मतदान थमा और चुनावी विश्लेषक दिन भर का लेखा-जोखा लेकर बैठे तो उनका यह मानना है कि भाजपा वहीं खड़ी है जहां वह तीसरे चरण के बाद खड़ी थी। पूरे भारत में बढ़ती गर्मी को पहले भी कम वोटिंग प्रतिशत का कारण बतलाया गया था, इस बार तो वह था ही लेकिन और भी कई ऐसे कारण बने जिन्होंने भाजपा के उत्साह को घटाया है।

सोमवार को 96 सीटों पर मतदान हुआ, जिसके साथ 379 सीटों पर चुनाव निपट गये हैं। माना जा रहा है कि अब तक भाजपा बड़ा नुकसान उठा चुकी है। कुछ राज्यों में तो चुनाव पूरे भी हो चुके हैं। इसके बाद बची 164 सीटों के लिये शेष तीन चरणों में मतदान होगा। क्या इस दौरान हुए नुकसान की भरपाई वह बची सीटों के जरिये पूरा कर सकेगी? कोई भी इसका जवाब 'हां' में नहीं दे रहा है। खुद भाजपा वाले भी ऐसा होता नहीं देख रहे हैं।

चौथे चरण के मतदान के दौरान जो कई क्षेत्रों में जो कुछ हुआ, उससे साफ है कि भाजपा को अपनी खस्ता हालत का पता चल गया है। एक मतदान केन्द्र में पीठासीन अधिकारी अपने उत्साह में भरकर 'मोदी मोदी' के नारे लगाने लगी। हॉट सीट कन्नौज में, जहां समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव चुनाव लड़ रहे हैं, भाजपा के लोगों ने उनकी पार्टी के लोगों पर हमला कर दिया। फर्रुखाबाद में फायरिंग हो गई तो कानपुर व औरैया में भी तनातनी रही। मतदान सम्बन्धी 150 से ज्यादा शिकायतें मिलीं। महाराष्ट्र के बारामती ईवीएम कक्ष में काफी देर तक सीसीटीवी कैमरा बन्द रहा क्योंकि बिजली गुल हो गई। हैदराबाद में भाजपा उम्मीदवार माधवी लता मुस्लिम उम्मीदवारों के बुर्के उठाकर उनकी शिनाख्त करती मिलीं जिससे विवाद हो गया। ये सारी गड़बड़ियां बता रही हैं कि भाजपा को इस बात का एहसास हो गया है कि इंडिया गठबन्धन के सामने वह लगातार पिछड़ रही है।

एक ओर मतदान जारी था तो वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को वाराणसी में एक भव्य रोड शो करना पड़ा। मंगलवार को उन्हें अपने नामांकन का परचा जो भरना था। (जो उन्होंने कर दिया)। इस रोडशो को करीब ढाई किलोमीटर की दूरी तय करने में पांच घंटों से भी ज्यादा समय लगा। एक रोज पहले उन्होंने बिहार की राजधानी पटना में जो रोडशो किया था, उसे लेकर अलग तरह की चर्चाएं रहीं। पूर्व केन्द्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद यहां से भाजपा के उम्मीदवार हैं। जिस रथ पर मोदी सवार होकर रोडशो कर रहे थे, उस पर प्रसाद के अलावा प्रदेश के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी भी सवार थे। 17 माह तक राष्ट्रीय जनता दल के साथ बिहार की सरकार चलाने वाले नीतीश बाबू की स्थिति तब विचित्र हो गई जब मोदी ने भाजपा का चुनाव चिन्ह (कमल) नीतीश को पकड़ा दिया। यह बतलाता है कि मोदी किस प्रकार से एक-एक सीट के लिये संघर्षरत हैं और अपना चुनाव चिन्ह दूसरी पार्टी के प्रमुख को सौंपने से भी गुरेज़ नहीं कर रहे। इसके पहले बिहार के ही मुजफ्फरपुर में हुई सभा में मोदी फिर अपने प्रचार में पाकिस्तान को लेकर आ गये। उन्होंने कहा कि 'इंडिया को सपने में भी पाकिस्तान का परमाणु बम दिखता है।' उसके नेता कहते हैं कि पाकिस्तान ने चूड़ियां नहीं पहनी हैं।' बकौल मोदी, 'अगर उसने चूड़ियां नहीं पहनी है तो वे (मोदी) पहना देंगे।' साफ है कि जैसे ही मोदी व भाजपा को अपनी हालत में कोई कमजोरी महसूस होती है तो देश के भीतर मुसलमान व बाहर पाकिस्तान उसे याद आता है।

इंडिया गठबन्धन की बढ़ती मजबूती भाजपा की परेशानी का बड़ा सबब है। उत्तर प्रदेश उसका सबसे मजबूत किला रहा है। तीसरे चरण के ठीक पहले रायबरेली से राहुल गांधी ने नामांकन दाखिल किया जिसका असर पूरे उप्र में पड़ता दिख रहा है। यहां उनकी सभाओं के अलावा प्रियंका गांधी की सभाएं भी जबरदस्त भीड़ बटोर रही हैं। इतना ही नहीं, अखिलेश के साथ राहुल के रोड शो व सभाओं को भी लोगों का जोरदार प्रतिसाद मिल रहा है। पहले धारणा थी कि यहां कांग्रेस-सपा के संयुक्त प्रतिरोध के बावजूद भाजपा सम्मानजनक संख्या में सीटें जीत लेगी लेकिन अब कहा जा रहा है कि यूपी में भाजपा को वैसी सफलता नहीं मिलने जा रही जिसका दावा हो रहा था।

इस बीच एक और जो महत्वपूर्ण बात हुई है वह यह कि अब लोग मोदी के विकल्प की चर्चा करने लगे हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इसी बीच कह दिया कि मोदी डेढ़ साल के बाद 75 साल के होकर रिटायर हो जायेंगे। वे वोट अमित शाह के लिये मांग रहे हैं। शाह को जवाब देना पड़ा कि उनकी पार्टी के संविधान में ऐसा नियम नहीं है। जो हो, केजरीवाल ने मुद्दा तो छेड़ ही दिया है। यह मोदी के साथ पूरी पार्टी को कमजोर करता है और इसी कमजोरी के साथ भाजपा ने चौथा चरण लड़ा है। आगे भी उसे ऐसे ही लड़ना है।

चौथे चरण के मतदान के बाद मोदी के भविष्य की चर्चा

जैसा कि अनुमान था, लोकसभा चुनाव के लिये सोमवार को हुए मतदान का चौथा चरण भी भारतीय जनता पार्टी के लिये वैसा ही साबित होने जा रहा है जिस प्रकार से पहले के तीन चरण (19 व 26 अप्रैल तथा 7 मई) गये हैं- निराशा भरे। राजनीतिक विश्लेषक और तमाम तरह के सर्वे एक स्वर में कह रहे हैं कि इस बार कम मतदान सत्तारुढ़ भाजपा के लिये खतरे की घंटी है। गर्मी को मतदान केन्द्रों में छाये सन्नाटे का चाहे कारण बतलाया जा रहा हो लेकिन केवल तेज गर्मी इसका एकमात्र कारण नहीं हो सकती। जो भी हो, कम मतदान किसे जीत दिलाता है या किसे पराजय, इसका पता तो 4 जून को ही लग पायेगा, लेकिन अब मीडिया में, खासकर समांतर यानी सोशल मीडिया में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भविष्य पर चर्चाएं शुरू हो चुकी हैं, जो तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने को व्याकुल हैं। यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि लोकतंत्र में न तो नतीजों को लेकर कोई निश्चिंत हो सकता है और न ही कोई दावा कर सकता है कि परिणाम ऐसे या वैसे ही होंगे। कोई इतने पार या उतने पार का नारा दे रहा है तो वह लोगों को प्रभावित करने यानी अपने पक्ष में हवा बनाने की कोशिश कर रहा है। चार चरणों में भाजपा का जो हश्र होता हुआ दिखाई दे रहा है, उसके बाद तो इस बात को पक्के तौर पर मान लिया गया है कि इस पार-उस पार का नारा हवा-हवाई ही है।

बहरहाल, विकल्प की बात न केवल देश का नेतृत्व करने के लिये चल पड़ी है बल्कि मोदी की पार्टी के भीतर भी इस लिहाज से हो रही है कि उनके बाद संगठन किसके बल पर चलेगी। मोदी के 10 वर्षों के कामकाज की गुणवत्ता को अगर एक ओर रख दें, तो भी इसमें कोई शक नहीं कि मोदी ने भाजपा को दो-दो शानदार जीतें दिलाई हैं- 2014 व 2019 में; तथा उसे बुलन्दियों तक पहुंचाया है। चुनिंदा अपवादों को छोड़कर अब तक किसी भी प्रधानमंत्री ने ऐसी कामयाबी नहीं दिलाई थी। मोदी चाहे पार्टी अध्यक्ष न हों, लेकिन वे ही एक तरह से सर्वेसर्वा रहे हैं। इसलिये यह मजेदार बात है कि अगर देश में उनके मुकाबले पीएम का चेहरा तलाशने वाले लोगों के विचारों को जानने की कोशिशें हो रही हैं, तो सर्वेक्षण एजेंसियां या विश्लेषक जानना चाहते हैं कि मोदी के बाद इस पद पर कितने लोग किसे देखना चाहते हैं। यह अलग बात है कि अब तक तो वे ही कमोवेश आगे चल रहे हैं। हालांकि कई बार कांग्रेस के राहुल गांधी भी प्रमुख पसंद बनते जा रहे हैं। ऐसे में यह सवाल उठ खड़ा होना बताता है कि देश को यह बात समझ में आ गई है कि ऐसी नौबत आ सकती है कि इस सर्वोच्च पद के लिये कोई और चेहरा ढूंढना पड़ सकता है।

मोदी जी की संगठन पर पकड़ का यह आलम है कि इस बात की भी बहसें चल पड़ी हैं कि भाजपा को उनके बाद कौन सम्हालेगा। यदि यह सवाल खड़ा हो रहा है तो यह भी एक तरह से लोगों के सामने सम्भावना है कि देश को तथा संगठन को देर-सबेर इस सवाल से जूझना होगा। क्या ऐसा 4 जून के बाद होगा? लोकतंत्र में कुछ भी असम्भव नहीं है; और लोकतंत्र को किसी एक व्यक्ति पर जाकर ठहरना भी नहीं चाहिये। जीवंत समाज और स्पंदित लोकतंत्र की यही निशानी होती है कि विकल्प की तलाश कभी खत्म नहीं होती और हर घड़ी बेहतर व्यक्ति, बेहतर संगठन, बेहतर सरकार तथा बेहतर व्यवस्था का विकल्प ढूंढा जाता है। यह एक सतत प्रक्रिया है। वैसे चार चरणों के मतदान के बाद अगर इस बात की चर्चा होने लगी है तो कहा जा सकता है कि कुछ अप्रत्याशित हो सकता है। वैसे भी कई लोग कथित रूप से 'चौंकाने वाले नतीजों' का अनुमान व्यक्त कर रहे हैं। मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने अपने बल पर 370 तथा अपने गठबन्धन नेशनल डेमोक्रेटिक एलाएंस के बूते 400 से ज्यादा सीटें पाने का जो लक्ष्य रखा है, वह अगर मिल जाता है (जो कि मुमकिन नहीं बताया जा रहा) तब तो कोई बात नहीं, लेकिन ऐसा न होने पर कई तरह अनुमान लगाये जा रहे हैं। यदि त्रिशंकु लोकसभा बनती है तो मोदी के रहते और माइनस मोदी लाभ-हानि पर विचार होगा। बहुत सम्भव है कि मोदी के फिर से पीएम बनने की स्थिति में एनडीए के कुछ सहयोगी भाजपा को सरकार बनाने में मदद से इंकार कर दें। ऐसा होता है तो एनडीए का नेतृत्व कौन करेगा- केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी या राजनाथ सिंह या फिर कोई और?

डॉ. दीपक पाचपोर

> **मोदी जी की संगठन पर पकड़ का यह आलम है कि इस बात की भी बहसें चल पड़ी हैं कि भाजपा को उनके बाद कौन सम्हालेगा। यदि यह सवाल खड़ा हो रहा है तो यह भी एक तरह से लोगों के सामने सम्भावना है कि देश को तथा संगठन को देर-सबेर इस सवाल से जूझना होगा। क्या ऐसा 4 जून के बाद होगा? लोकतंत्र में कुछ भी असम्भव नहीं है; और लोकतंत्र को किसी एक व्यक्ति पर जाकर ठहरना भी नहीं चाहिये।**

भाजपा के आंतरिक नेतृत्व की बात करें तो इस बाबत सवाल भारत में नहीं बल्कि विदेशों में भी उठने लगे हैं। अनेक देश यह जानने को उत्सुक हैं कि मोदी के बाद भाजपा का क्या होगा। भाजपा में बाहरी लोगों की दिलचस्पी का कारण यह हो सकता है कि उसकी ख्याति विश्व की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में है। साथ ही, उसकी दक्षिणपंथी विचारधारा के चलते लोगों की यह उत्सुकता रहनी स्वाभाविक है कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के इस बेहद अहम चुनाव में किसकी जीत होती है- कट्टर विचारों की या उदारता की? भाजपा से राज्य सभा के सदस्य रहे स्वपन दासगुप्ता ने हाल ही में एक ट्विट कर बताया है कि उनके पास एक आस्ट्रेलियाई पत्रकार का फोन आया था जो उनसे 'मोदी के बाद की भाजपा' विषय पर साक्षात्कार करना चाहता है। हालांकि दासगुप्ता ने इंटरव्यू देने से मना कर दिया लेकिन इससे ज्ञात होता है कि भारत के चुनावों में लोकतांत्रिक रूप से विकसित देशों की कितनी दिलचस्पी है।

यह सवाल एक और तरीके से सामने आ गया है। शराब घोटाले के आरोप में तिहाड़ जेल की न्यायिक हिरासत से जमानत पर छूटे दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने यह कहकर सभी को चौंका दिया है कि च्नरेन्द्र मोदी तीसरी बार सरकार अपने लिये नहीं बल्कि केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के लिये वोट मांग रहे हैं क्योंकि उन्हीं के बनाये नियम के अनुसार 'डेढ़ साल के बाद 75 वर्ष की आयु पूरी करने के बाद मोदी रिटायर होकर वैसे ही मार्गदर्शक मंडल में चले जायेंगे जिस प्रकार से लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, सुमित्रा महाजन, यशवंत सिन्हा आदि को भेज दिया गया है।' हालांकि अमित शाह ने इस बात पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि 'पार्टी संविधान में ऐसा कोई नियम नहीं है। यह बात मोदी के लिये लागू नहीं होगी।' इसका सीधा सा अर्थ यह है कि मोदी के पीएम पद तक पहुंचने का रास्ता बनाने के लिये इन बड़े नेताओं की बलि ली गई जिनका पार्टी के निर्माण से लेकर विकास में बड़ा योगदान था।

अब तीन चरणों का मतदान शेष है। लोकसभा की 379 सीटों पर मतदान हो चुका है। अब बची 164 सीटें। कहा तो यहां तक जाता है कि भाजपा को जो नुकसान होना है वह इन चार चरणों में हो चुका है। जिन सीटों पर मतदान बचा है, उनमें भाजपा के लिये किसी बड़े चमत्कार की आशा नहीं रह गई है। हो चुके नुकसान की भरपाई भी अब असम्भव बतलाई जा रही है। इन 10 वर्षों के दौरान सारे चुनाव मोदी के चेहरे पर लड़े गये हैं तो उनके विकल्प की तलाश लाजिमी है।

(लेखक देशबन्धु के राजनीतिक सम्पादक हैं)

कांग्रेस का आत्मविश्वास लौटा, भाजपा के खिलाफ अगले दौर की लड़ाई की तैयारी

■ कल्याणी शंकर

कई अन्य देशों की तरह, भारत में भी राजनीतिक दल अक्सर आधिकारिक परिणाम घोषित होने से पहले ही चुनाव के दौरान जीत का दावा करते हैं। यह उनकी राजनीति का हिस्सा है। भारत में चल रहे चुनाव कोई सामान्य राजनीतिक घटना नहीं हैं; वे देश के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, और साथ ही कई राजनीतिक दलों के नेताओं के भाग्य के लिए भी। उनके गहरे और दूरगामी निहितार्थ हैं।

मौजूदा हालात में सत्तारूढ़ भाजपा ने जीत का ऐलान करते हुए कहा है कि नतीजे उसकी उम्मीदों के मुताबिक होंगे। हालांकि, वास्तविक परिणाम अनिश्चित बना हुआ है, जिससे राजनीतिक परिदृश्य में रहस्य की परत जुड़ गई है। सात चरण के मतदान में से चार पहले ही हो चुके हैं, और शेष तीन चरण 20, 25 मई और 1 जून को होंगे। इनके नतीजे चुनाव परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं, जो 4 जून को सामने आयेंगे।

हालिया जनमत सर्वेक्षणों के अनुसार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इन चुनावों में तीसरी बार अभूतपूर्व जीत हासिल करने का अनुमान है। इस बात पर बहस चल रही है कि भाजपा की सीटें बढ़ेंगी या घटेंगी।

> **कांग्रेस पार्टी की रणनीति मुख्य रूप से सामाजिक कल्याण और आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित है। इस सर्वव्यापी दृष्टिकोण का उद्देश्य मतदाताओं की प्राथमिक चिंताओं को दूर करना है और इसमें मतदाताओं के एक विशाल वर्ग से जुड़ने की क्षमता है। यदि इसे मतदाताओं का समर्थन मिलता है तो यह चुनाव परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।**

नरेंद्र मोदी सहित भाजपा नेताओं का दावा है कि भाजपा के नेतृत्व वाला राजग 543 सदस्यीय लोकसभा में 400 से अधिक सीटें जीतेगा। गृह मंत्री अमित शाह का कहना है कि एनडीए पहले तीन चरणों में 283 में से 200 सीटें हासिल करेगा। कांग्रेस पार्टी ने केवल एक बार 1984 के लोकसभा चुनावों में 400 से अधिक सीटें जीती थीं। राजनीतिक खिलाड़ियों को गेम-चेंजिंग रणनीति की आवश्यकता है क्योंकि समर्थन की कोई स्पष्ट लहर नहीं है।

लाभ हासिल करने के लिए, भाजपा ने पांच प्रमुख रणनीतियों को लागू किया है- सेलिब्रिटी उम्मीदवारों का चुनाव लड़ना, हिंदू आधार को मजबूत करना, अल्पसंख्यक समूहों से अपील करना, विपक्ष द्वारा नियंत्रित क्षेत्रों में हिंदू वोटों को बनाये रखने के लिए फिर से बनाई गई सीमाओं का फायदा उठाना और मोदी को सर्वोच्च नेता के रूप में पेश करना।

कांग्रेस और उसके सहयोगीगैर-भाजपाई हिंदुओं को मजबूत करने का प्रयास करते हुए एक रणनीतिक कदम उठा रहे हैं। मौजूदा चुनाव में मतदान प्रतिशत में गिरावट देखी गई, और यह अभी भी विचार किया जा रहा है कि क्या इसमें सुधार होगा या गिरावट जारी रहेगी। भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई) ने हाई-टेक शहरों में मतदाताओं की कठोर उदासीनता को उजागर करते हुए कुछ महानगरीय शहरों में मतदान पर निराशा व्यक्त की। यह चुनाव परिणामों को आकार देने में प्रत्येक मतदाता के महत्व को रेखांकित करता है।

ध्यान रहे कि राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री सीपी जोशी एक वोट से चुनाव हार गये थे। उनकी पत्नी और बेटी उनकी जीत की प्रार्थना करते हुए वोट देने से चूक गईं। इससे पता चलता है कि कैसे एक वोट भी चुनाव परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

यह किस्सा चुनाव परिणामों पर एक वोट के संभावित प्रभाव पर भी जोर देता है। भारत के कुछ हिस्सों में उच्च तापमान से चुनाव में मतदान कम हो सकता है। हालांकि, कम मतदान कभी-कभी सत्तारूढ़ पार्टी को नुकसान पहुंचा सकता है, क्योंकि स्थानीय मुद्दे परिणाम को प्रभावित कर सकते हैं।

भाजपा का लक्ष्य छह भारतीय राज्यों- पश्चिम बंगाल, ओडिशा, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल में अपनी राजनीतिक स्थिति में सुधार करना है। हालांकि, इसे क्षेत्रीय दलों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जो राज्य चुनावों को प्रभावित करने और समग्र परिणामों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

हाल ही में एक रैली के दौरान कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने चुनाव परिणामों की भविष्यवाणी में अनिश्चितताओं के बारे में बात की थी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने एक्स पर हिंदी में एक संदेश पोस्ट करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने अपने दोस्तों पर हमला किया, यह दर्शाता है कि मोदीजी की कुर्सी हिल रही है। सपा नेता अखिलेश यादव ने ट्वीट कर कहा कि पहले चरण के मतदान के बाद भाजपा की हालत खराब हो गई है।

कांग्रेस पार्टी की रणनीति मुख्य रूप से सामाजिक कल्याण और आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित है। इस सर्वव्यापी दृष्टिकोण का उद्देश्य मतदाताओं की प्राथमिक चिंताओं को दूर करना है और इसमें मतदाताओं के एक विशाल वर्ग से जुड़ने की क्षमता है। यदि इसे मतदाताओं का समर्थन मिलता है तो यह चुनाव परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

कांग्रेस पार्टी की चुनौती अपने सदस्यों को एकजुट रखना है। मोदी के उदय के बाद से, राज्य के नेताओं सहित कई राजनेता भाजपा में शामिल हो गये हैं। इनमें से कुछ को भाजपा ने टिकट दिया है। यह देखना बाकी है कि मतदाता इन दलबदलुओं के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

कांग्रेस के भीतर आंतरिक विवाद वर्तमान में एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। प्रतिद्वंद्वी पार्टियों से संबंधों के आरोप वफादारी पर सवाल उठाते हैं। वे पार्टी की एकता को प्रभावित कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आगामी चुनावों में उनके प्रदर्शन पर असर पड़ सकता है। इसलिए, चुनाव में उनकी संभावनाओं की अधिक सटीक समझ हासिल करने के लिए पार्टी के भीतर किसी भी घटनाक्रम पर बारीकी से नजर रखना महत्वपूर्ण है।

राजनीतिक नेताओं के प्रतिद्वंद्वी दलों के साथ संबंधों ने उनकी वफादारी को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं। 2016 से 2020 के बीच 170 कांग्रेस विधायकों और 7 राज्यसभा सदस्यों ने पार्टियां बदल लीं, जिससे भारतीय राजनीति पर असर पड़ा। इससे उनकी निष्ठा को लेकर भ्रम और संदेह पैदा हो गया है। उन पर आरोप इन नेताओं और उनकी पार्टियों के बारे में मतदाताओं की धारणा को प्रभावित कर सकते हैं।

भारत के सट्टा बाज़ार में भाजपा 330 से 335 सीटें जीतेगी पर 1350 रुपये की बोली लग रही जबकि 400 सीटें जीतेगी पर 12-15 रुपये। एनडीए 400 या उसके अधिक सीटें जीतेगी पर 4-5 रुपये की बोली लग रही है। ये भविष्य वाणियां चुनाव परिणामों के बारे में बाजार की धारणा को प्रतिबिंबित करते हैं जो राजनीति को भी प्रभावित कर सकता है। मंगलवार को भारत के स्टॉक बेंचमार्क में 1.5 प्रतिशत की गिरावट आई क्योंकि निवेशकों ने यह चिंता व्यक्त करते हुए अपना दांव घटा दिया कि भाजपा को अनुमान के मुताबिक ज्यादा सीटें नहीं मिल सकती हैं। अब सब कुछ 4 जून के नतीजों पर निर्भर है।

विश्व परिवार दिवस

नए स्वरूप में दिख रही संयुक्त परिवार की अवधारणा

आज हम जिस परिवर्तनशील युग में जी रहे हैं वहां संयुक्त परिवारों ने नवीनता को अंगीकार करते हुए नया अवतार लिया है। ऐसे बड़े परिवार जिनमें सदस्यों की संख्या इतनी अधिक हो चुकी है कि उनका एक ही छत के नीचे रह पाना संभव नहीं हो पा रहा है।

एक बड़े और एकजुट परिवार का विचार आज नहीं सदियों से भारतीय सामाजिक संरचना का हिस्सा रहा है। अतीत में झांके तो संयुक्त परिवार एक सामान्य परिवार था। जैसे-जैसे समय ने अंगड़ाई ली वैसे-वैसे परिवार की मूल अवधारणा भी तेजी के साथ परिवर्तित हुई। यहीं से एकल परिवार की धारणा को बल मिला! परिवार बढ़ने और स्थान कम पड़ने के कारण एक दूसरे पर मर मिटने वाले भाइयों के परिवार अलग-अलग रहने लगे। मैं इसे संयुक्त परिवार की टूटन नहीं मानता हूं दूर रहकर भी सभी भाई-बहन एक दूसरे के सुख-दु:ख के सहभागी हों तो इसे हम आधुनिक युग के नए संयुक्त परिवार की संज्ञा दे सकते हैं। आज से पांच दशक पूर्व तक संयुक्त परिवार बेहद आम थे। इसका कारण यह था कि परिवार के सदस्यों की जरूरतें सीमित थीं। तेजी से करवट लेने वाले अत्याधुनिक समय में अब हर सदस्य को उसके कमरे में रंगीन टी वी, फ्रिज, कंप्यूटर जैसी सुविधाएं चाहिए। पहले इन विलासितापूर्ण वस्तुओं का आविष्कार या तो नहीं हुआ था या फिर यह केवल पूंजीपतियों तक सीमित था। आज के समय में आय के संसाधनों में वृद्धि हुई है इसी के साथ लोगों की इच्छाएं भी बलवती हुईं हैं। अब वह बात दिखाई नहीं पड़ती जब परिवार में एक ही छत के नीचे रहने वाले एक कमरे में संयुक्त रूप से टी वी कार्यक्रमों का आनंद लिया करते थे। एक - दूसरे की तकलीफ और खुशियों का आदान-प्रदान हुआ करता था।

इस सच्चाई से मुंह नहीं फेरा जा सकता है कि संयुक्त परिवार किफायती हुआ करते थे। कारण यह कि सामूहिक जीवन से घरेलू खर्चों में नियंत्रण रखा जा सकता था साथ ही कुल बजट , आय के कई स्रोतों से पूरा हो जाता था। इसी के चलते मजबूत आंतरिक संबंधों और अपनेपन की भावना को भी ताकत मिली। परिवार के वृद्धजनों को यह विश्वास था कि उनके असहाय होने पर परिजनों का सहयोग प्राप्त होगा और आपातकालीन स्थिति में उनकी बेहतर देखभाल की जायेगी। फिल्म और साहित्य जैसे मीडिया ने संयुक्त परिवार को उच्च सम्मान दिया। देखा जाए तो अत्याधुनिक शहरीकरण, पारंपरिक संयुक्त परिवार संरचना को भेदने में खतरनाक भूमिका निभाते रहे हैं ! सुमधुर सायरन की आवाज बनकर शहरों ने लोगों को अपनी स्थापित पारिवारिक संरचनाओं से दूर तथा अधिक व्यक्तिवादी जीवनशैली की ओर खींचा है। शहरीकरण ही वह विकास की धारा है जिसने लोगों के जीवन में अमूर्त परिवर्तन लाया है! पारिवारिक मूल्यों में बदलाव वाली परंपरा ने आधुनिकीकरण और कुछ हद तक आत्मनिर्भरता की भावना को जन्म दिया, जो संयुक्त परिवार के अनेक मूल पहलुओं के खिलाफ है। एक बदलाव जो छोटे एकल परिवारों के संदर्भ में समझ में आता है, वह है परिवार के फैलाव के लिए जगह की कमी। हम अभी भी कह सकते हैं कि इस तरह की समस्या ने पूरी तरह से संयुक्त परिवारों को खत्म नहीं किया है।

एस के मिश्रा

आपके पत्र

वनों का विनाश मानव भविष्य के लिए विनाशकारी

वर्तमान में पृथ्वी तथा प्राकृतिक संसाधनों के विनाशकारी जलवायु परिवर्तन की गति तथा उसके प्रभाव में गति की तीव्रता तेजी से महसूस की जाती रही है। इसका और कोई कारण ना होकर मानव की अवांछित गतिविधियां ही हैं। जिनमें मूलत: वन का विनिष्टिकरण, जीवाश्म ईंधन का ताबड़तोड़ प्रयोग, नई कृषि नीति तथा पद्धति की तीव्रता से होते हुए उद्योगों की संरचना और कांक्रीट के जंगलों यानी शहरों का विस्तारीकरण बड़े कारण हैं। औद्योगिक क्रांति के बाद विज्ञान से उत्पादित औद्योगीकरण के विकास के साथ मनुष्य ने वायुमंडल के प्रक्रियागत प्रभाव में बदलाव लाना शुरू किया है, जिसके फलस्वरूप पृथ्वी में भूमंडलीय ऊष्मा का विस्तार ओजोन परत का क्षरण, असामयिक बाढ़,अकाल का आना अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में वृद्धि से हरित गृह प्रभाव की घटना प्रभावित हुई है। ग्रीन हाउस इफेक्ट पृथ्वी की एक सामान्य प्रक्रिया है जिसके कारण पृथ्वी का निचला स्तर मंडल गर्म बना रहता है. तथा जीवन के अनुरूप वायुमंडल में वातावरण जीवन उपयोगी तथा जीवन के अनुकूल बना रहता है। किंतु ग्रीन हाउस इफेक्ट में बदलाव आने के साथ ही मनुष्य के सामने जलवायु परिवर्तन की बड़ी समस्या सामने आई है। इस तरह के परिवर्तन से ही पृथ्वी की परत को हमें बचाना होगा जिससे हम अति उष्णता, गर्म जलवायु और कम उत्पादन की विभीषिका से मानव को बचा सकते हैं।

विश्व में विकासशील देश दोहरी चुनौतियों से जूझ रहे हैं, पहली भुखमरी यानी कि गरीबी दूसरी जलवायु में तीव्र परिवर्तन और यह दोनों एक दूसरे से गहरे संबंधित हैं। विकासशील तथा गरीब राष्ट्र एक ओर गरीबी तथा भुखमरी से लड़ाई लड़ रहे हैं एवं गरीबी से छुटकारा पाकर गरिमामय जीवन जीना चाहते हैं इसके लिए वे अपने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करके विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं जिससे इनके सम्मुख कई चुनौतियां उत्पन्न हो जाती है। इनके पास पर्याप्त रूप से आर्थिक वित्तीय पूंजी की कमी साथ ही उन्नत तकनीक का अभाव भी है। ऐसे में यह विकासशील राष्ट्र के विकास हेतु परंपरागत विकास साधनों पर आश्रित हो जाते हैं, जैसे विद्युत उत्पादन के लिए कोयले का उपयोग करना, वाहनों में प्रयुक्त ईंधन की गुणवत्ता का निम्न होना, कारखानों की पुरानी मशीनों द्वारा कार्बन, सल्फर, नाइट्रोजन आदि तत्वों की बड़ी मात्रा में वायु को उत्सर्जित करना आदि आते हैं। इन सब के कारण ग्रीन हाउस गैसें निर्मित होने से ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन घटनाओं को तीव्रता प्राप्त होती है। जलवायु परिवर्तन के कारण वैश्विक तापक्रम जैसे कारकों में बहुत तेजी से परिवर्तन होता आया है। इसके पश्चात वर्षा की अनिश्चितता तथा अनियमितता में वृद्धि हुई है साथ ही बाढ़, सूखा, अकाल सुनामी, हिमस्खलन-भूस्खलन जैसी प्राकृत आपदाओं का कई देश हर वर्ष सामना करते आ रहे हैं। उनके सम्मुख बड़ी विकट स्थिति उत्पन्न होती आई है, और यही प्राकृतिक आपदाएं उन देशों को फिर से गरीबी के दलदल में ढकेल देती है जहां भुखमरी का बोलबाला होता है। विश्व में कुछ देश ऐसे हैं जिनमें जिम्बाब्वे, सीरिया,लीबिया, सोमालिया तथा अधिकांश अफ्रीकी देश, दक्षिण एशियाई लैटिन अमेरिकी देशों में भोजन,रोटी के लिए लंबी-लंबी लाइन लगती देखी गई है। दूसरी तरफ विकसित और अमीर देशों में भी लाइन लगती है, लेकिन वहां पर विडंबना यह है कि यह लाइन रोटी के लिए नहीं बल्कि आईफोन, स्मार्टफोनऔर गैजट्स के लिए लगाई जाती है।

अनेक गरीब देशों में सबसे बड़ा संकट विकास बनाम पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे को लेकर सामने आया है। जहां यह देश विकास की इच्छा तो रखते हैं पर दूसरी और विकसित देश गरीब देशों को पर्यावरण संरक्षण की सीख दे कर इनके संसाधनों पर रोक लगाने का प्रयास करते हैं।

संजीव ठाकुर

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770

ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

देश विदेश

अफगानिस्तान में बाढ़ से करीब 40 हजार बच्चे हुए बेघर

काबुल, 14 मई (एजेंसियां)। उत्तरी अफगानिस्तान के बगलान प्रांत और अन्य क्षेत्रों में शुक्रवार को आई मूसलाधार बारिश के बाद बाढ आने से करीब 40 हजार बच्चे बेघर हो गए। ग्लोबल चैरिटी सेव द चिल्ड्रन ने सोमवार को यह जानकारी दी। अफगानिस्तान में चैरिटी के कंट्री डायरेक्टर अरशद मलिक ने कहा कि बच्चे सहमे हुए हैं, कई ने अपना सब कुछ खो दिया है। न केवल उनका घर और स्कूल परिसर क्षतिग्रस्त हुआ, बल्कि वो भी जगह नष्ट हो गई जहां वे खेलते थे। उन्होंने अपने आसपास उन सभी को भी खो दिया है, जिनसे वे परिचित थे। अब उनकी दिनचर्या पहले जैसी नहीं रही। बाढ़ के कहर से बगलान, तखर, बदख्शां और घोर सहित अन्य प्रांतों के 330 से अधिक लोग मारे गए।

संरा ने सुरक्षा कर्मचारी की मौत पर जताया दुख

संयुक्त राष्ट्र, 14 मई (एजेंसियां)। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने गाजा में एक हमले में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा एवं संरक्षा विभाग (डीएसएस) के एक

संयुक्त राष्ट्र ने की हमलों की निंदा व जांच की मांग

कर्मचारी की मौत और एक अन्य डीएसएस कर्मचारी के घायल होने पर दुख जताया।

महासचिव के उप प्रवक्ता फरहान हक ने कहा कि घटना सोमवार सुबह की है। उनके वाहन पर उस समय हमला हुआ, जब वे राफा में यूरोपीय अस्पताल जा रहे थे। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने संयुक्त राष्ट्र कर्मियों पर सभी हमलों की निंदा की और पूरी जांच की मांग की। उन्होंने मृत स्टाफ सदस्य के परिवार के प्रति अपनी संवेदना भी व्यक्त की।

फरहान हक ने कहा कि गाजा में संघर्ष से न केवल नागरिकों बल्कि मानवीय कार्यकर्ताओं पर भी भारी असर पड़ रहा है। महासचिव ने तत्काल मानवीय संघर्ष विराम और सभी बंधकों की रिहाई के लिए अपनी अपील दोहराई। डीएसएस कर्मचारी, 7 अक्टूबर 2023 के बाद से गाजा में मारे गए संयुक्त राष्ट्र के पहले अंतरराष्ट्रीय कर्मचारी सदस्य बन गए हैं। अब तक संयुक्त राष्ट्र के साथ काम करने वाले लगभग 190 फिलीस्तीनी कर्मचारी मारे गए हैं। उप प्रवक्ता ने कहा कि मारे गए और घायल हुए डीएसएस कर्मचारियों के नाम और राष्ट्रीयता को गुप्त रखा जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र संबंधित सरकारों और संबंधित परिवार के सदस्यों को सूचित करने की प्रक्रिया में है।

भारतीय नागरिक के रूप में हुई मारे गए संयुक्त राष्ट्र कर्मी की पहचान

तेल अवीव। दक्षिणी गाजा के रफा शहर में गोलीबारी में संयुक्त राष्ट्र के एक कर्मचारी की मौत हो गई और एक अन्य कर्मचारी घायल हो गया। मृतक कर्मचारी की पहचान भारतीय नागरिक के रूप में की गई है। वैभव अनिल काले (46) पूर्व भारतीय सेना कर्मी थे। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के उप प्रवक्ता फरहान हक ने सोमवार रात एक बयान में मृतक सहायता कर्मी की पहचान की घोषणा की। संयुक्त राष्ट्र अधिकारी के बयान के मुताबिक, वैभव अनिल काले एक महीने पहले गाजा में सुरक्षा सेवा समन्वयक के रूप में संयुक्त राष्ट्र में शामिल हुए थे। संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों के सूत्रों ने आईएएनएस को बताया कि वैभव अनिल काले संयुक्त राष्ट्र के वाहन से यात्रा कर रहे थे। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र के सूत्रों ने कहा कि यह स्पष्ट नहीं है कि जिस वाहन में वैभव अनिल काले और एक अन्य संयुक्त राष्ट्र सहायता कर्मी यात्रा कर रहे थे, उसपर गोलीबारी किसने की। आईडीएफ पहले ही कह चुका है कि वह गोलीबारी और संयुक्त राष्ट्र सहायता कर्मी की मौत की जांच कर रहा है। आईडीएफ ने कहा कि हमला एक सक्रिय युद्ध क्षेत्र में हुआ।

इजरायल से संबंधों पर पुनर्विचार कर सकता है मिस्त्र

काहिरा। गाजा पट्टी में इजरायल की व्यापक सैन्य कार्रवाई के जवाब में पड़ोसी देश मिस्त्र इजरायल से राजनयिक संबंधों को कम कर सकता है। वॉल स्ट्रीट जर्नल के अनुसार, मिस्त्र के सरकारी अधिकारियों ने संकेत दिया है कि मिस्त्र इजरायल से अपना राजदूत वापस बुला सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि, संबंध को पूरी तरह से खत्म करने की फिलहाल कोई योजना नहीं है। काहिरा की ओर से कोई आधिकारिक टिप्पणी अभी नहीं आई है। काहिरा में सरकार चिंतित है कि अगर गाजा के दक्षिणी हिस्से रफा में इजरायली आक्रमण बढ़ाया गया तो बड़ी संख्या में फिलिस्तीनी सीमा पार कर मिस्त्र में प्रवेश कर सकते हैं। मिस्त्र 1979 में इजरायल के साथ शांति स्थापित करने वाला पहला अरब देश था। देश गाजा पट्टी पर इजरायल की नाकाबंदी का भी समर्थन करता है। मिस्त्र ने रविवार को कहा कि वह दक्षिण अफ्रीका द्वारा इजरायल के खिलाफ लाए गए नरसंहार मुकदमे में भी शामिल होगा। दक्षिण अफ्रीका ने दिसंबर में युद्ध के दौरान कथित तौर पर किए गए नरसंहार के लिए इजरायल को अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में ले गया। एक अंतरिम फैसले में अदालत ने इजरायल को नरसंहार रोकने के लिए उपाय करने का आदेश दिया।

सुडोकू 6555

				6	7	5		
					8		4	3
			4		5			8
1		4					9	6
		9				3		
6	3					2		5
9			5		4			
2	4		3					
		5	6	9				

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम,कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारूवाला

ग्रह स्थिति : बुधवार 15 मई, 2024 बैशाख शुक्ल पक्ष 7

राशिफल

मेष - परिजनों के साथ वाद-विवाद होने से मन चिंता से भरा रहेगा। छाती में दर्द या अन्य कोई शारीरिक परेशानी होने से शरीर शिथिल रहेगा। निरर्थक आर्थिक खर्च से बचें। व्यापार और नौकरी में आज संभलकर रहें।

वृषभ - आज आपको हर काम में सफलता मिलेगी। विरोधियों पर आप विजय प्राप्त कर सकेंगे। सामाजिक दृष्टि से आपको मान-सम्मान मिलेगा। दोपहर के बाद झगड़े का वातावरण बना रहेगा। आपकी एनर्जी कम हो जाएगी।

मिथुन - आज सुबह आपका मन क्रोधित रहेगा। शारीरिक रूप से अस्वस्थ और मानसिक रूप से चिंता का अनुभव होगा। व्यर्थ धन खर्च होगा। विद्यार्थियों को अपेक्षित परिणाम नहीं मिलेंगे।

कर्क - आज का आपका दिन खुशी और आनंद के साथ गुजरेगा। आप कुछ अधिक ही संवेदनशील रहेंगे। आपकी कोई चिंता दूर हो सकती है। स्नेहीजन और मित्रों से मुलाकात सुखद रहेगी। हालांकि आप वाणी पर संयम रखें।

सिंह - आज वाणी में संयम रखें। स्नेहीजनों के साथ किसी बात पर विवाद हो सकता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक रहेगा। किसी कन्फ्यूजन में दिन गुजरेगा। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें।

कन्या - आज आपको विविध क्षेत्रों से लाभ होने होने की संभावना है। व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होगा। साथी कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। दोस्तों के लिए धन खर्च कर सकते हैं।

तुला - आज का दिन आप के लिए एकदम शुभ है। धार्मिक काम में मन लगेगा और देव-दर्शन का लाभ मिलेंगे। विविध क्षेत्रों में लाभ मिल सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अधिकारियों से प्रोत्साहन मिलेगा।

वृश्चिक - आज का दिन आपके लिए शुभ है। नौकरीपेशा लोगों का टारगेट पूरा हो सकेगा। व्यापार में लाभ मिल सकता है। पार्टनरशिप के काम सफल रहेंगे। पिता से भी आर्थिक लाभ की संभावना दिख रही है।

धनु - किसी भी नए काम की शुरुआत आज न करें। किसी बात को लेकर मन में ग्लानि का भाव रहेगा। क्रोध पर नियंत्रण रखें। परिजनों के साथ वाद-विवाद न करें।

मकर - आज का दिन दोस्तों के साथ मौज-मस्ती में गुजरने वाला है। मनोरंजक एक्टिविटी में आपका मन लगेगा। भागीदारी से लाभ होगा। सुखद यात्रा का संयोग बनेगा। व्यापार में भी आपको लाभ होगा,।

कुंभ - आज का दिन पूरी तरह से शुभ फलदायी है। व्यापार करने वालों के लिए दिन अनुकूल रहेगा। शारीरिक और मानसिक रूप से आप स्वस्थ बने रहेंगे। दोस्तों के साथ बाहर जाने का कार्यक्रम बनेगा।

मीन - किसी बात की अशांति रहेगी। किसी कारणवश आकस्मिक धन खर्च आएगा। शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं होगा। दोपहर के बाद घर में आनंद और शांति का वातावरण बन जाएगा। काम में यश कीर्ति मिलेगी।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

आज का इतिहास

1242-दिल्ली के सुलतान मुइजुद्दीन बहराम शाह की सेना ने विद्रोह कर दिया और सुलतान की हत्या कर दी।
1817-प्रख्यात विद्वान और धार्मिक नेता देवेन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म।
1907-महान क्रांतिकारी शहीद सुखदेव का जन्म।
1923-भारतीय हास्य अभिनेता का जॉनी वॉकर जन्म।
1935-मास्को मेट्रो लोगों के लिए खोला गया।
1940-दो भाइयों रिचर्ड और मौरिस मैकडॉनल्ड्स ने कैलिफोर्निया के सैन बर्नार्डीनो में मैकडॉनल्ड्स शुरू किया।
1957-ब्रिटेन के सप्लाई मंत्रालय ने घोषणा की कि प्रशांत महासागर में किए गए श्रृखंलाबद्ध परीक्षणों के अंतर्गत पहले हाइड्रोजन बम का परीक्षण किया गया था।
1958-सोवियत संघ ने स्पूतनिक-3 रॉकेट लांच किया।
1965-बालीवुड अभिनेत्री माधुरी दीक्षित नेने का जन्म।
1993-भारत के %%प्रथम आर्मी कमाण्डर इन चीफ%% के.एम. करिअप्पा का निधन।
1995-एलीसन गारग्रीब्स बिना आक्सीजन सिलीडंर के एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली पहली महिला बनीं।
1998- भारतीय राजनीतिक दल जनता पार्टी के राजनेता राधिका रंजन गुप्ता का निधन।
1999-कुवैती सरकार द्वारा महिलाओं को संसदीय चुनावों में मताधिकार का हक प्रदत्त।
2001-इटली में दक्षिणपंथी गठबंधन को बहुमत।
2002-संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने इराक पर प्रतिबंधों का अनुमोदन किया।
2003-इराक युद्ध में अमेरिकी सेनाओं के कमांडर टामी फ्रैंक्स के ख़िलाफ़ ब्रुसेल्स की अदालत में युद्ध सम्बन्धी मुकदमा दायर।
2005-20 साल के बाद कनाडा में भारत का विमान उतरा।

बाल्टीमोर पुल को तोड़ने के लिए किया गया नियंत्रित विध्वंस

वाशिंगटन, 14 मई (एजेंसियां)। अमेरिका में मैरीलैंड प्रांत के बाल्टीमोर में ढहे हुए पुल के एक बड़े स्टील खंड को तोड़ने के लिए सोमवार को एक नियंत्रित विध्वंस किया गया।

पुल को मालवाहक जहाज डाली ने मार्च में टक्कर मारकर नष्ट कर दिया था। बाल्टीमोर के मेयर ब्रैंडन एम. स्कॉट ने विध्वंस दल को सटीक और सुरक्षित कार्यनिष्पादन के लिए धन्यवाद दिया। स्कॉट ने एक्स पर लिखा कि चैनल को साफ करने के हमारे प्रयास में यह एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। हम इसे सही तरीके से एक साथ पूरा करने जा रहे हैं। मौसम के कारण सोमवार शाम तक तोड़फोड़ को दो बार स्थगित किया जा चुका है। ब्रिज रिस्पॉन्स यूनिफाइड कमांड ने पिछले सप्ताह एक बयान में कहा कि एम/वी डाली के ऊपर से पुल के टुकड़े को हटाने का सबसे सुरक्षित और तेज तरीका कम समय के साथ सटीक कटौती करना है। यह नियंत्रित विध्वंस में एक उद्योग-मानक उपकरण है जो पुल को छोटे टुकड़ों में तोड़ देगा एवं जहाज को फिर से तैरने और संघीय चैनल से हटाने के काम की अनुमति देगा। अधिकारियों ने पिछले मंगलवार को कहा कि कथित तौर पर छह सड़क रखरखाव कर्मचारी जो पुल पर गड्ढों की मरम्मत कर रहे थे, इस दुखद घटना में मारे गए। उन्होंने कहा कि छठे और अंतिम कर्मचारी का शव बरामद किया है।

यूवा मास्टरस्ट्रोक : पूरे भारत में रचनात्मकता और प्रतिभा का जश्न

नई दिल्ली 14 मई (एजेंसियां)। हाउस ऑफ नवनीत एजुकेशन से यूवा स्टेशनरी, पूरे भारत के विभिन्न राज्यों में आयोजित 'युवा मास्टरस्ट्रोक' प्रतियोगिता के सफल समापन की घोषणा करते हुए गर्व महसूस कर रही है।

यूवा मास्टर स्ट्रोक एक विशेष मंच है, जो छात्रों को ड्राइंग के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को उजागर करने का अधिकार देता है। दो दशकों की विरासत के साथ, यह वर्ष इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता की 20वीं वर्षगांठ था। 2023 संस्करण में 22 राज्यों के कुल 5251 स्कूलों ने उत्साहपूर्वक प्रतियोगिता में भाग लिया, जिसमें लगभग 13.6 लाख छात्रों ने अपनी कलात्मक प्रकृति और कल्पना का प्रदर्शन किया। प्रतिभागियों को तीन आयु समूहों में वर्गीकृत किया गया था, प्रत्येक को उनके चित्र के लिए विशिष्ट विषय सौंपे गए थे। यूवा के मुख्य रणनीति अधिकारी अभिजीत सान्याल ने कहा, हम भारत में इतने सारे राज्यों में छात्रों की रचनात्मकता और प्रतिभा का जश्न मनाते हुए यूवा मास्टरस्ट्रोक के एक और सफल संस्करण को देखकर खुश हैं। यह प्रतियोगिता न केवल युवा कलाकारों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रदान करती है, बल्कि कलात्मक अभिव्यक्ति और सराहना की संस्कृति को भी बढ़ावा देती है। मैं सभी विजेताओं को बधाई देता हूं।

न्यूजीलैंड में राष्ट्रीय गिरोह इकाई का गठन

वेलिंगटन। न्यूजीलैंड सरकार ने कानून-व्यवस्था दुरूस्त करने और आपराधिक गिरोहों पर नकेल कसने में मदद के लिए राष्ट्रीय गिरोह इकाई तथा जिला गिरोह विघटन इकाइयों की स्थापना की है। पुलिस विभाग के मंत्री मार्क मिशेल ने यह जानकारी दी। मिशेल ने कहा कि नेशनल गैंग यूनिट और गैंग डिसरप्शन यूनिट आपराधिक गिरोह के सदस्यों को निशाना बनाने में उच्चतम स्तर की पुलिस विशेषज्ञता लाएगी और गिरोह के कारण होने वाली समस्याओं को नियंत्रित करने के लिए नए उपकरणों का अधिकतम उपयोग करेगी।

ब्रिटेन के राजा चार्ल्स ने प्रिंस विलियम को सैन्य अधिकारी की भूमिका सौंपी

लंदन, 13 (एजेंसियां)। ब्रिटेन के राजा चार्ल्स ने अपने हैम्पशायर हवाई क्षेत्र की यात्रा के दौरान प्रिंस विलियम को आधिकारिक तौर पर आर्मी एयर कोर के कर्नल-इन-चीफ की भूमिका सौंपी। चार्ल्स 32 साल पहले आर्मी एयर कोर के कर्नल-इन-चीफ बने थे। उन्होंने अपनी यह भूमिका सोमवार दोपहर को मिडिल वॉलॉप बेस पर आयोजित एक दुर्लभ संयुक्त आधिकारिक कार्यक्रम में अपने बड़े बेटे विलियम को सौंप दी।

आर्मी एयर कॉर्प्स ड्यूक ऑफ ससेक्स की पुरानी इकाई है, जिसमें उन्होंने 2012 में अफगानिस्तान के अपने दूसरे दौरे के दौरान अपाचे हेलीकॉप्टर कमांडर और सह-पायलट गनर के रूप में कार्य किया था। पिछले साल विलियम को सैन्य भूमिका सौंपने के राजा के फैसले को हैरी के लिए एक झटके के रूप में देखा गया था। राजा ने कहा कि आर्मी फ्लाइंग म्यूजियम में सैनिकों, उनके परिवारों और दिग्गजों से मिलना बहुत खुशी का मौका था।

मुझे आशा है कि वेल्स के राजकुमार को अपना नया कर्नल-इन-चीफ बनाकर आप भविष्य में और अधिक सशक्त होंगे : राजा चार्ल्स

उन्होंने कहा कि मुझे आशा है कि वेल्स के राजकुमार को अपना नया कर्नल-इन-चीफ बनाकर आप भविष्य में और अधिक सशक्त होंगे। बड़ी बात यह है कि वह वास्तव में एक बहुत अच्छा पायलट है-इसलिए यह उत्साहजनक है। उन्होंने प्रदर्शित होने जा रहे विमान अपाचे एएच एमके.1 की स्मृति में एक पट्टिका का अनावरण किया।

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन अचानक पहुंचे यूक्रेन

कीव, 14 मई (एजेंसियां)। एंटनी ब्लिंकन मंगलवार को अचानक राजधानी कीव पहुंच गए। अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने कहा कि ब्लिंकन वरिष्ठ यूक्रेनी अधिकारियों से मिलने और यूक्रेन के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के स्थायी समर्थन पर प्रकाश डालने के लिए आज यूक्रेन पहुंचे। मैथ्यू मिलर ने आगे कहा कि यूक्रेन में रहते हुए एंटनी ब्लिंकन राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की, प्रधानमंत्री डेनिस शमीहाल और विदेश मंत्री दिमित्रो कुलेबा से मुलाकात करेंगे।

वह युद्धक्षेत्र के अपडेट, नई अमेरिकी सुरक्षा और आर्थिक सहायता के प्रभाव, दीर्घकालिक सुरक्षा और अन्य प्रतिबद्धताओं तथा यूक्रेन की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए चल रहे कार्यों पर चर्चा करेंगे। ब्लिंकन रूस के आक्रमण के सामने यूक्रेन की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और लोकतंत्र के प्रति अमेरिका की प्रतिबद्धता पर जोर देंगे।

रिपोर्ट *डॉ. हदीउज्जमां ने की रेलवे संपत्ति के विस्तार के पक्ष में चल रही उपेक्षा की आलोचना, बोले*

बांग्लादेश रेलवे में रखरखाव के अभाव से बढ़ रही दुर्घटनाएं

ढाका, 14 मई (एजेंसियां)। बांग्लादेश में रेलवे की अपनी सेवाओं को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न विकास परियोजनाएं शुरू करने के बावजूद उसे पुरानी रेल लाइनों और पुलों के रखरखाव के अभाव के कारण रेल के पटरी से उतरने सहित कई दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ रहा है। ढाका ट्रिब्यून ने अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। बांग्लादेश रेलवे के सूत्रों के मुताबिक लगभग 63 प्रतिशत रेल दुर्घटनाएं ख़राब लाइनों और कमज़ोर पुलों के कारण होती हैं।

देश की 3,400 किलोमीटर लंबी रेलवे लाइनों में से केवल ढाका-चटगांव, ढाका-जॉयदेबपुर और जेसोर-अब्दुल्लापुर लाइनें जैसे प्रमुख खंड डबल-ट्रैक हैं, जबकि अधिकांश सिंगल-ट्रैक और खराब स्थिति में हैं। देशभर में 3,400 किलोमीटर से अधिक रेलवे लाइनें हैं, जिनमें से केवल 1,000 किलोमीटर ही अच्छी स्थिति में हैं।

परिवहन विशेषज्ञों ने कई प्रणालीगत मुद्दों की पहचान की है, जिनमें बार-बार स्टेशन बंद होना, पुराना रोलिंग स्टॉक, बिगड़ता बुनियादी ढांचा, भीड़भाड़, देरी, टिकट संबंधी समस्याएं और सामान्य कुप्रबंधन शामिल हैं। सिग्नलिंग त्रुटियों, समाप्त हो चुके कोच कनेक्शन, रेल लाइनों की अपर्याप्त निगरानी, जोखिम भरी रेल क्रॉसिंग और यात्री सुविधाओं की कमी के कारण रेल दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। बुएट में परिवहन विश्लेषक और प्रोफेसर डॉ. हदीउज्जमां ने रेलवे की संपत्ति के विस्तार के पक्ष में आवश्यक रखरखाव की चल रही उपेक्षा की आलोचना की। उन्होंने बताया कि नए इंजनों और कोचों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति है क्योंकि शुरुआत में बुनियादी ढांचे को बनाए रखने की तुलना में इसकी लागत कम होती है। हालांकि, यह मौजूदा रेल लाइनों और पुलों के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण रखरखाव की उपेक्षा करता है।

खराब लाइनों व कमजोर पुलों के कारण हो रही लगभग 63 प्रतिशत रेल दुर्घटनाएं

उन्होंने कहा कि उपेक्षा इस तथ्य से स्पष्ट है कि लगभग 2,500 किलोमीटर लंबी रेल पटरियां जोखिम भरी मानी जाती हैं, फिर भी उन पर रेलगाड़ियां चलती रहती हैं, जिससे गति और दक्षता कम हो जाती है। इसे हाल की घटनाओं से उजागर किया गया था, जिसमें सिग्नलिंग त्रुटियों के कारण गाज़ीपुर के जॉयदेबपुर में दो ट्रेनों के बीच आमने-सामने की टक्कर और चटगांव में दोहाज़ारी-कॉक्स बाज़ार लाइन पर कई सिग्नलिंग गलतियों के कारण हुई थी।

उन्होंने कहा कि पारंपरिक सिग्नलिंग पद्धति, जो पॉइंटमैन द्वारा मैन्युअल पॉइंट समायोजन पर निर्भर है, को एक प्रमुख जोखिम कारक के रूप में पहचाना गया है।

वर्ग पहेली 6555

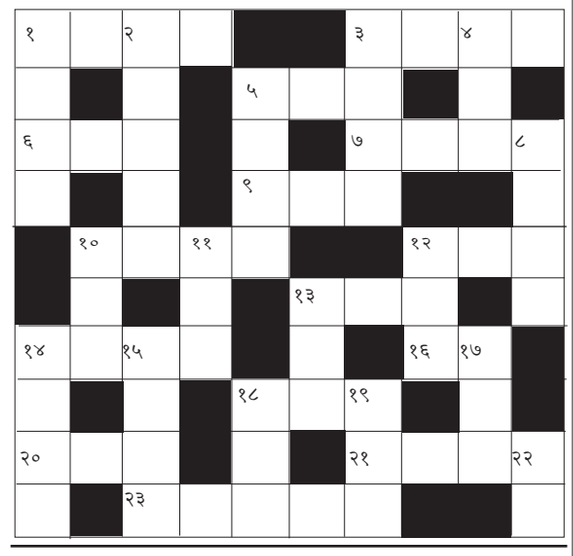

बायें से दायें:-

१. के कारण... के सौजन्य से (उर्दू)
३. जिसे सुना न गया हो
५. निश्चय
६. करबद्ध नमन
७. कर आदि से बचने के लिए शासन से छिपाकर रखा गया रुपया
९. दक्ष, निपुण (उर्दू)
१०. जो घबराया या डरा हुआ न हो
१२. कथोपकथन
१३. प्रण
१४. पूरी तरह, नितांत
१६. झुका या गिरा हुआ
१८. देह, तन
२०. दृश्य काव्य, अभिनय
२१. दुर्बल, कमजोर
२३. रिसाव होने वाला

ऊपर से नीचे:-

१. शक्तिदायक
२. वश में या नियंत्रण में रखना
३. अभिनेता (मुहावरा)
४. सुगंध
५. उपयोग
८. जो चारों ओर से केंद्र की ओर झुका हो
१०. अपूर्ण, अनामुकम्मल
११. शहजादा, पुत्र
१२. जानकारी होना
१३. पहरेदार
१४. पर्यायवाची
१५. समान कोटि का
१७. मग्न, लीन
१८. पनाह
१९. एक प्रकार की ज्योतिष
२२. होंठ (उर्दू)

वर्ग पहेली-6554

१ आ	बे	२ ह	या	३ त	■	४ प	द	५ चा	प
जी	■	म	■	६ र	फ्ता	र	■	त	■
७ वि	ध्वं	स	■	स	■	८ व	न	क	९ रि
का	■	फ	■	१० खा	मो	श	■	■	पु
■	११ ह	र	१२ जा	ना	■	■	१३ शा	य	द
■	म	■	य	■	१४ वि	का	स	■	म
१५ चा	ल	१६ बा	ज	■	श्व	■	१७ क	मा	१८ न
दु	■	ल्य	■	१९ पु	स्त	२० क	■	हि	■
२१ का	लि	का	■	ल	■	२२ ठि	ठु	र	२३ ना
र	■	२४ ल	ड़	क	प	न	■	■	मी

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

दुनिया को जानें

2030 तक भारत का हर तीसरा बच्चा होगा मायोपिया का शिकार : विशेषज्ञ

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। नेत्र चिकित्सकों का मानना है कि गतिहीन जीवनशैली और स्क्रीन का लंबे समय तक उपयोग करने से 2030 तक शहरी भारत में 5-15 वर्ष की आयु के एक-तिहाई बच्चे मायोपिया से पीड़ित होंगे। मायोपिया को आमतौर पर निकट-दृष्टि दोष के रूप में जाना जाता है। यह एक ऐसी स्थिति है जहां वस्तुएं स्पष्ट रूप से नजर नहीं आती हैं।

यह दुनिया भर में एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य मुद्दा बन गया है। दुनिया भर में 2050 की शुरुआत में हर दो में से एक व्यक्ति निकट दृष्टि दोष का शिकार हो जाएगा, बच्चों और युवा वयस्कों में यह बढ़ रहा है। मायोपिया जागरूकता सप्ताह में विशेषज्ञों ने कहा कि मायोपिया की दर वास्तव में विश्व स्तर पर बढ़ रही है, जिसमें भारत भी शामिल है। भारत में भी शहरी बच्चों के बीच मायोपिया के प्रसार में उल्लेखनीय वृद्धि का सबूत है। अध्ययनों से पता चलता है कि 1999 से 2019 तक 20 साल में भारत के शहरी बच्चों में मायोपिया के मामले क्रमश: 4.44 प्रतिशत से 21.15 प्रतिशत तक तीन गुना बढ़ गए हैं।

प्रादेशिकी

गंगोत्री धाम के व्यापारियों ने किया बाजार बंद

उत्तरकाशी। गंगोत्री धाम में तीर्थ पुरोहितों के बाद व्यापार मंडल गंगोत्री के व्यापारियों ने भी शासन-प्रशासन के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया है। आक्रोशित गंगोत्री धाम के व्यापारियों ने पूरा बाजार बंद करवा दिया। व्यापार मंडल अध्यक्ष इंद्रदेव सेमवाल ने कहा प्रशासन रात्रि में यात्री भेज रहा। उस समय उन्हें कोई सुविधा नहीं मिल पा रही। इसलिए जब तक स्थिति नहीं सुधरती है, तब तक बाजार बंद रहेगा।गंगोत्री धाम के तीर्थ पुरोहितों ने बीते सोमवार से चारधाम यात्रियों के धाम न पहुंचने पर नाराजगी जताई। गंगोत्री धाम के तीर्थ पुरोहितों ने गंगोत्री मंदिर के सामने शासन प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। वहीं चारधाम यात्रा को सुगम बनाने की मांग की। गंगा पुरोहित सभा के अध्यक्ष संजीव सेमवाल ने कहा कि शासन प्रशासन की आधी अधूरी तैयारियों के कारण यात्री करीब 22 घंटे जाम में फंसे रहे। यात्रियों को सड़कों पर रात गुजारने को मजबूर होना पड़ रहा है। आज गंगा सप्तमी का दिन है, लेकिन प्रशासन की लापरवाही के कारण पूरा गंगोत्री धाम खाली पड़ा है।

रायबरेली के साथ गांधी परिवार का रिश्ता होगा और मजबूत : अग्निहोत्री

शिमला, 14 मई (देशबन्धु) हिमाचल प्रदेश के उप मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने गांधी परिवार की परंपरागत सीट रायबरेली में पहुंचकर कांग्रेस पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ,कांग्रेस के स्टार प्रचारक, रायबरेली सीट से कांग्रेस के प्रत्याशी राहुल गांधी के समर्थन में प्रचार किया। रायबरेली

- मोदी सरकार ने चंद पूंजीपतियों को किया अमीर, गरीब की नहीं हुई कोई पूछ
- 2 करोड़ रोजगार देने वाले युवाओं की बेरोजगारी पर है खामोश

पहुंचने पर कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने हिमाचल के उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री का जोरदार स्वागत किया। मुकेश अग्निहोत्री ने राहुल गांधी के समर्थन में अपने जनसंपर्क अभियान किया। मुकेश ने कहा कि विकास को आगे बढ़ाना, रोजगार देना, खुशहाली लाना यह कांग्रेस का लक्ष्य है। वही तानाशाही को खत्म करना हमारा प्रण है। मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि रायबरेली के साथ गांधी परिवार का दिल का रिश्ता रहा है राहुल गांधी इस रिश्ते को और मजबूत करेंगे। उन्होंने कहा कि इंदिरा गांधी, सोनिया गांधी को रायबरेली में प्यार व स्नेह दिया। वही अपनापन राहुल गांधी को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि सोनिया गांधी ने लंबे समय तक रायबरेली का प्रतिनिधित्व किया लेकिन कभी पद की लालसा नहीं रखी, विकास करवाया, प्रधानमंत्री पद तक को त्याग दिया। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी संघर्ष कर रहे हैं तानाशाही के विरुद्ध लड़ाई लड़ रहे हैं और बिना किसी पद के अपने संघर्ष को देश के हित में आगे कर रहे हैं।

मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि राहुल गांधी ने

4000 किलोमीटर पैदल यात्रा कर भारत के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया, जनता की दुख तकलीफ को समझाम उन्होंने कहा कि दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जनता के दरबार में चंद कदम पैदल चलने का साहस नहीं कर पाए। उन्होंने कहा कि चंद् पूंजीपतियों को अमीर करने वाले प्रधानमंत्री ने गरीबों की कोई सुध नहीं ली गरीब को और गरीब कर दिया, देश के हालात खराब किए हैं। उन्होंने कहा कि भारत का रुपया कमजोर हुआ है। उन्होंने कहा कि 2 करोड़ युवाओं को रोजगार देने का वायदा करने वाले आज युवाओं की बेरोजगारी पर खामोश है। मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने महिलाओं के सम्मान में 1लाख देने की बात कही है, कर्मचारियों को ओपीएस दी जा रही है, युवाओं को रोजगार देने की बात कही है, किसान का कर्ज माफ किया जाएगा। उन्होंने कहा कि देश को खुशहाल बनाने का काम कांग्रेस करेगी। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के प्रचार से भाजपा के होश उड़े हैं, भाजपा ने जिस प्रकार से प्रचार को धर्म के आधार पर करने का काम किया है उसे साफ है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी डर के साए में हो गए हैं, सत्ता खोने का डर उन्हें सताने लगा है।

मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि काला धन क्यों वापस नहीं आया? उस पर क्यों भाजपा खामोश है? यह जवाब देना चाहिए। मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी ने राम मंदिर के ताले खुलवाए थे आज भव्य मंदिर बना है सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद यह देश की आस्था का केंद्र है भगवान श्री राम सबकी आस्था का केंद्र है. उन्होंने कहा कि हताशा में जो लोग आज ताले की बात कर रहे हैं, उन्हें याद रख लेना चाहिए की जो ताले स्वर्गीय राजीव गांधी ने खुलवाये उन पर कोई ताला नहीं लग सकता।

आरक्षण कांग्रेस की देन, भाजपा चाहती है खत्म करना

उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि देश में आरक्षण कांग्रेस की देन है, कांग्रेस ने हर वर्ग के हित का ध्यान रखते हुए आरक्षण की सुविधा दी। उन्होंने कहा कि आज आरक्षण पर जिस प्रकार से धर्म विशेष को लेकर के बोला जा रहा है, उससे साफ है कि भाजपा में खलबली है। उन्होंने कहा कि आरक्षण जारी रहेगा, लेकिन भाजपा की मंशा कई बार सामने आ चुकी है कि आरक्षण को खत्म करने की इच्छा भाजपा रखती है।

भाजपा ने बरसाई किसान पर लाठी, कांग्रेस करेगी कर्ज माफ

मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि किसान व बागवान खुशहाल हो इसके लिए कांग्रेस की सरकार काम करेगी। उन्होंने कहा कि देश में किसान आज भी आंदोलन कर रहे हैं, उनसे कोई वार्ता नहीं हो रही है किसानों ने जब-जब आंदोलन किया भाजपा की सरकार ने उन पर डंडे बरसाए, गोलियां चलाई।

मित्रों की हुई अरबों की कर्ज माफी

उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने कर्ज माफी पर सवाल उठाया है, भाजपा इसका जवाब नहीं दे पाई है। उन्होंने कहा कि अरबों की कर्ज माफी की गई है। उन्होंने कहा कि जनता का पैसा लुटाया गया है। उन्होंने कहा कि केंद्र की सरकार को बताना चाहिए कि कितने लोगों का कर्ज माफ किया है और कितने ही गरीब लोगों ने कर्ज के कारण आत्महत्या कर ली है।

'2024 का लोकसभा चुनाव देश के संविधान और लोकतंत्र बचाने का चुनाव'

शिमला, 14 मई (देशबन्धु)। देश में 4 जून को इंडिया गठबंधन पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाएगा। अब तक हुए चार चरणों के लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन सरकार बनाने के लिए बहुमत का आंकड़ा पार कर चुका है। यह बात शिमला में आयोजित इंडिया गठबंधन की एक संयुक्त पत्रकार वार्ता के दौरान कैबिनेट मंत्री व शिमला संसदीय सीट चुनाव प्रभारी रोहित ठाकुर ने कही। उन्होंने कहा कि 2024 का चुनाव बहुत ही महत्वपूर्ण

- प्रदेश में कांग्रेस प्रत्याशियों के समर्थन करेगा इंडिया गठबंधन करेगा चुनाव प्रचार

है। यह देश की दिशा और दशा को बचाने की महत्वता रखने का चुनाव है इसलिए देश की जनता को एकजुट होकर इंडिया गठबंधन की सरकार को सत्ता में लाना है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर पर वोट का विभाजन न हो इसलिए इंडिया गठबंधन का निर्माण किया गया है जो 2024 में भाजपा के खिलाफ लोकसभा का चुनाव लड़ रहा है।

रोहित ठाकुर ने कहा कि अब तक हुए लोकसभा के चार चरणों में इंडिया गठबंधन का बेहतरीन प्रदर्शन रहा है। उन्होंने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि 2014 और 2019 में की गई घोषणाएं धरातल पर नहीं दिखी है जिससे आहत होकर देश की जनता भाजपा को सत्ता से बेदखल करना चाहती है। उन्होंने कहा है कि प्रदेश की देव तुल्य जनता जनार्दन कांग्रेस के प्रत्याशियों को अपना आशीर्वाद देगी जिसमें इंडिया गठबंधन के सभी मुख्य घटक दल मुख्य भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि जिस तरह से भाजपा ने प्रदेश सरकार को ऑपरेशन लोटस के तहत गिरने का प्रयास किया था उसका परिणाम अब 4 जून को दिखाई देगा। रोहित ठाकुर ने कहा कि यह चुनाव नैतिकता व अनैतिकता, सच्चाई व बुराई और धनबल व जनबल का होगा जिसमें जनबल जीतेगा प्रदेश के चुनाव में यह प्रमुख मुद्दा बन चुका है और जनता भाजपा की गंदी मानसिकता का मुंहतोड़ जवाब देगी।

आजादी के बाद यह साधारण चुनाव नहीं : राकेश सिंघा

इंडिया गठबंधन के सहयोगी माकपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व विधायक राकेश सिंह ने कहा कि आज़ादी के बाद यह साधारण चुनाव नहीं बल्कि असाधारण चुनाव है। जहां दो दो राज्यों के मौजूदा मुख्यमंत्री को पीएम मोदी ने संविधान के विरुद्ध कार्य करते बुरे श्रेष्ठ के माध्यम से जेल के अंदर भेजा है। ऐसा इतिहास में पहली बार हुआ है। उन्होंने कहा कि माकपा इंडिया गठबंधन का अनुमोदन करती है और प्रदेश की चार लोकसभा और छह विधानसभा सीटों पर कांग्रेस के प्रत्याशियों के लिए काम करेगी। सिंघा ने केंद्र की भाजपा सरकार पर निशान साधते हुए कहा कि आज देश खतरे में है जहां पीएम मोदी संविधान को खत्म कर लोकतंत्र की हत्या करना चाहते हैं। पीएम मोदी ने सारी सीमाएं लांघ दी हैं। इंडिया गठबंधन हर दिन चुनाव आयोग के पास पीएम मोदी और भाजपा के नेताओं की कोई ना कोई शिकायत करता है लेकिन ना तो चुनाव आयोग इस पर कोई कार्रवाई करता है और ना ही पीएम मोदी के खिलाफ कार्रवाई करने की हिम्मत जुटा पा रहा है। सिंघा ने कहा कि यदि संविधान बचेगा तो ही लोकतंत्र बचेगा।

सार संक्षेप

कार और स्कूटी की भिड़ंत में दो युवकों की दर्दनाक मौत

हल्द्वानी। लालकुआं हल्द्वानी राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक कार और स्कूटी के बीच जोरदार भिड़ंत में स्कूटी सवार दो लोगों की मौत हो गई। इस हादसे में स्कूटी और कार के परखच्चे उड़ गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतकों के शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। साथ्स ही कार चालक को हिरासत में ले लिया है। मिली जानकारी के अनुसार देर रात मोतीनगर चौराहे के पास हाईवे पर लालकुआं से आ रही कार और हल्द्वानी की तरफ से जा रही स्कूटी की आमने-सामने से भिड़ंत हो गई। जिसमें स्कूटी सवार बुरी तरह से घायल हो गए। इस बीच हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पहुंची और कार चालक की मदद से घायलों को सुशीला तिवारी अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने दोनों ही लोगों को मृत घोषित कर दिया। बताया जा रहा है कि युवक अल्मोड़ा जिले के तलवाड़ बाड़ी के रहने वाले थे. जो मोटाहल्दू में एक रेस्टोरेंट में काम करते थे। पुलिस की मानें तो मृतकों का नाम दीवान सिंह बिष्ट (उम्र 30 वर्ष) और अभय बिष्ट (उम्र 21 वर्ष) है। पुलिस अब दोनों शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की कार्रवाई कर रही है। हादसे की सूचना के बाद परिजन भी अल्मोड़ा से हल्द्वानी पहुंच गए हैं।

नाबालिग सगी बहनों से दुष्कर्म के आरोपी गिरफ्तार

देहरादून। जनपद चमोली निवासी दो नाबालिग बहनों को भगाकर दुष्कर्म करने के मामले में पुलिस ने दो आरोपी मैकेनिकों को सहस्त्रधारा रोड से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया है। दोनों नाबालिगों को परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया है। पुलिस के अनुसार जनपद चमोली निवासी दो सगी बहनें देहरादून के राजपुर क्षेत्र में रहती हैं। उनके माता-पिता की कुछ साल पहले मौत हो चुकी है। इनमें छोटी बहन की उम्र करीब 14 साल है। जबकि, बड़ी की उम्र 16 साल है। आरोप है कि कुछ दिन पहले अहतसाम निवासी आजाद नगर कॉलोनी (उम्र 21 वर्ष) ने छोटी बहन से बातचीत शुरु की। इसके बाद आरोपी ने उसकी बड़ी बहन से अपने परिचित साहिल हाल निवासी चूना भट्ठा मूल निवासी कांधला, सहारनपुर (उम्र 26 वर्ष) का परिचय कराया। बताया जा रहा है कि बीती 12 मई को दोनों बहनें किसी काम से घर से बाहर निकली थी, लेकिन काफी समय बीतने के बाद भी वापस नहीं लौटी। इस पर नाबालिग के परिजनों ने पुलिस में तहरीर दी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर कार्यवाही करते हुए दोनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हे सहस्त्रधारा रोड से गिरफ्तार कर लिया।

सुडोकू 6555 का हल

4	8	3	1	6	7	5	2	9
5	6	1	9	2	8	7	4	3
7	9	2	4	3	5	1	6	8
1	2	4	7	5	3	8	9	6
8	5	9	2	1	6	3	7	4
6	3	7	8	4	9	2	1	5
9	1	8	5	7	4	6	3	2
2	4	6	3	8	1	9	5	7
3	7	5	6	9	2	4	8	1

जनता की सेवा नहीं, भूमि में थी पूर्व विधायक की दिलचस्पी : मुख्यमंत्री

शिमला, 14 मई (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्दर सिंह सुक्खू आज धर्मशाला विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी देविन्द्र जग्गी के नामांकन कार्यक्रम में शामिल हुए। इसके बाद मुख्यमंत्री ने एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वर्तमान कांग्रेस सरकार आम लोगों की सरकार है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार बिना मांगे ही हर वर्ग के कल्याण के लिए योजनाएं बनाकर उन्हें धरातल पर लागू कर रही है। अनाथ बच्चों के लिए मुख्यमंत्री सुखाश्रय योजना, विधवाओं के 27 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा का खर्च, घर बनाने के लिए उन्हें 3 लाख रूपए की आर्थिक मदद, मनरेगा की दिहाड़ी में 60 रुपए की बढ़ोतरी, 70 वर्ष से अधिक बुजुर्गों को फ्री इलाज तथा दूध के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य वर्तमान सरकार ने दिया है। इसके अतिरिक्त वाल्मीकि समुदाय के सफाई कर्मचारियों को घर बनाने के लिए भी राज्य सरकार तीन लाख रूपये की आर्थिक सहायता दे रही है। उन्होंने कहा कि सरकार ने यह पैसा भ्रष्टाचार के दरवाजे बन्द करके कमाया है जबकि पिछली भाजपा सरकार में मुख्यमंत्री रहते जयराम ठाकुर ने खजाना खाली किया और केन्द्र से भी पैसा लाने में नाकाम रहे। उन्होंने कहा कि आपदा में भी भाजपा नेता प्रभावित परिवारों के साथ खड़े नहीं हुए और केवलमात्र राजनीति करते रहे। उन्होंने कहा कि तीन भाजपा सांसदों की प्रधानमंत्री या गृहमंत्री को चिट्ठी लिखकर हिमाचल प्रदेश के लिए विशेष राहत पैकेज मांगने की हिम्मत तक नहीं हुई। लेकिन वर्तमान सरकार ने अपने संसाधनों से प्रभावित परिवारों के जख्मों पर महलम लगाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि जदरांगल में केन्द्रीय विश्वविद्यालय का कार्य जल्द ही शुरू किया जाएगा और राज्य सरकार अपने हिस्सा का पूरा धन जमा करवायेगी। उन्होंने कहा कि शहरी विकास मंत्री रहते स्थानीय विधायक ने गलत ढंग से जमीनें खरीदीं और उनके घपले सामने आ रहे हैं।

- वर्तमान सरकार बिना मांगे पूरी कर रही जन अपेक्षाएं: सुक्खू

नगर निगम देहरादून में गरीबों को उजाड़ने का विरोध करेगी माकपा

■ अमरनाथ तिवारी

देहरादून, 14 मई (देशबन्धु)। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी अतिक्रमण के नाम पर प्रशासन द्वारा गरीबों एवं फुटपाथ व्यवसायियों को उजाड़ने के खिलाफ 16 मई को जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन कर जिलाधिकारी एवं मुख्यमंत्री को ज्ञापन देगी । उक्त आशय का निर्णय पार्टी की बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता कॉमरेड शम्भू प्रसाद ममगांई ने की । बैठक में वक्ताओं ने कहा है कि जून 2024 में राज्य सरकार द्वारा 2018 में लाए गए अधिनियम की समयावधि भी खत्म हो रही है, जिसके बाद किसी भी बस्ती को कभी भी उजाड़ने का अधिकार प्रशासन को मिल जाएगा । वक्ताओं ने कहा राज्य की भाजपा सरकार खामोश है,हाईकोर्ट में पैरवी करने के बजाय सरकार कहीं न कहीं बड़ी बड़ी कम्पनियों को मदद कर रही है , असली मंशा है कि सरकार मलिन बस्तियों के लोगों को बेदखल कर खाली हुई जगह को इन बड़ी बड़ी कम्पनियों को सौंपने की तैयारी में है। वक्ताओं ने कहा जिस राज्य में विधानसभा

- अतिक्रमण के विराध में 16 को होगा प्रदर्शन

सहित अनेकों कार्यालय नदी नालों हो वहाँ कि सरकार द्वारा गरीबों के खिलाफ तरह-तरह के बयान देना दुर्भाग्यपूर्ण है। इन बस्तियों में वोट मांगने के बाद सरकार एवं उसके विधायक एवं भाजपा नेता कहते फिर रहे हैं कि बस्तियां हर हाल में हटेंगी । वक्ताओं ने कहा कि आज शहर में वेन्डर जोन घोषित न कर ठेली वालों को निरन्तर हटाकर उनका उत्पीड़न जारी है, विकास के नाम पर हजारों पेड़ों को काटने की तैयारी चल रही जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण को हो रही सम्भावित क्षति का चौतरफा विरोध हो रहा है। शहरों और ग्रामीण इलाकों में भी बड़े बिल्डर, निजी कंपनी एवं सरकारी विभागों ने अनेक नदियों और नालियों पर अतिक्रमण किए हैं लेकिन उन पर कोई कार्यवाही नहीं हो रही है। जबकि गरीबों को तरह तरह से बदनाम किया जा रहा है।

वक्ताओं ने कहा कि दिल्ली सरकार की पुनर्वास नीति को उत्तराखंड में भी लागू किया जाए, राज्य के शहरों में उचित संख्या में वेंडिंग जोन घोषित किए जाएंय पर्वतीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में वन अधिकार कानून पर अमल युद्धस्तर पर किया जाए, बड़े बिल्डरों एवं सरकारी विभागों के अतिक्रमण पर पहले कार्यवाही की जाए। वक्ताओं ने कहा है कि राष्ट्रीय हरित अधिकरण और उत्तराखंड उच्च न्यायालय से कुछ आदेश आए हैं। इन आदेशों को कारण बताते हुए मलिन बस्ती में रहने वाले लोगों को उजाड़ने की बात हो रही है।

कंगना रणौत ने नामांकन दाखिल किया

- नामांकन में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल और पूर्व मुख्यमंत्री व विपक्ष के नेता जयराम ठाकुर मौजूद रहे

मण्डी, 14 मई (देशबन्धु)। अब तक कांग्रेस पार्टी के नेता जिस कंगना रणौत को मंडी संसदीय क्षेत्र से राजनीति में कच्चा और कमजोर आंक रहे थे उनके लिए आज कंगना रणौत का मंडी जनसभा को संबोधित करने वाला भाषण खतरे का प्रतीक है । कंगना रणौत ने सबसे पहले अपना नामांकन दाखिल किया। नामांकन पत्र भरने के दौरान उनके साथ भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजीव बिंदल और पूर्व मुख्यमंत्री व विपक्ष के नेता जयराम ठाकुर मौजूद रहे लेकिन जैसे ही नामांकन भरने के बाद जनसभा हुई तो उसमें कंगना रणौत कुछ ऐसे गरजी की हर तरफ तालियों की गड़गड़ाहट से जनसभा स्थल गूंज उठा । कंगना रणौत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देश के विकास में दिए अतुलनीय योगदान पर उनकी तुलना राम से करते हुए कहा कि जिस तरह रामसेतु में भगवान राम ने सेतु का निर्माण किया था उसी तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी निस्वार्थ भाव से देश के विकास रूपी इस सेतु का निर्माण कर रहे हैं। कंगना ने मंडी संसदीय क्षेत्र के विकास को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता बताते हुए कहा कि देश और इस क्षेत्र के विकास में वे मोदी जी के साथ ठीक उसी तरह योगदान देंगी जिस तरह से रामसेतु के निर्माण में गिलहरी ने दिया था।

क्रेडिट कार्ड के नाम पर ठगी करने वाले दो गिरफ्तार

देहरादून, 14 मई (देशबन्धु)। देशभर में केडिट कार्ड के नाम पर फर्जी कॉल कर उनसे धोखाधड़ी किये जाने की घटनाओं का खुलासा करते हुए एसटीएफ द्वारा गैंग के सरगना को हरिद्वार से गिरफ्तार कर लिया गया है। जिसके पास से साईबर ठगी में प्रयुक्त 6 मोबाइल सहित अन्य सामान भी बरामद किया गया है। गैंग द्वारा अब तक कई राज्यों के लोगों से 22 घटनाओं में लाखों रूपये की ठगी को अंजाम दिया गया था। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एसटीएफ आयुष अग्रवाल ने बताया कि विगत कुछ समय से देशभर में केडिट कार्ड के नाम पर फर्जी कॉल कर उनसे धोखाधड़ी किये जाने की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा था। जिस पर एसटीएफ द्वारा विभिन्न वेब पोर्टलो का अवलोकन करने पर पाया कि केडिट कार्डस व अन्य माध्यमों से आम जन मानस को धोखा देकर आनॅलाईन ठगी कर लाखों रूपये हड़पने की 22 घटनाओं में जो गिरोह संलिप्त है, वह वर्तमान में जनपद हरिद्वार क्षेत्रान्र्तगत् थाना सिडकुल में सक्रिय है। जिस पर एसटीएफ द्वारा इस गिरोह के सदस्यों को चिन्हित किया गया। जिनके द्वारा संदिग्ध बैंक खातों में राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल और देशभर के अन्य राज्यों से अलग अलग लोंगो के बैंक एकाउन्ट से पैसा गिरोह के खातो में निरन्तर स्थानान्तरित किया जा रहा था जो लगभग 70 लाख रूपए है। जिस पर एसटीएफ ने एक सूचना के आधार पर बीती शाम गिरोह के सरगना को मोहल्ला रामनगर, ग्राम रावली महदूद थाना सिडकुल हरिद्वार से गिरफ्तार कर लिया है। जिसका नाम विपिन पाल पुत्र बृजपाल है।

साइबर ठगी की 22 घटनाओं को दिया था अंजाम

पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने किए बाबा केदार के दर्शन

रुद्रप्रयाग, 14 मई (देशबन्धु)। पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज और पूर्व कैबिनेट मंत्री अमृता रावत मंगलवार को बाबा केदार के दर्शनों के लिए केदारनाथ धाम पहुंचे। इस दौरान उन्होंने बाबा केदारनाथ का रुद्राभिषेक कर विशेष पूजा अर्चना की और विश्व एवं जन कल्याण के कामना की प्रार्थना की। सतपाल महाराज ने पूजा अर्चना के बाद केदारनाथ एक दिवसीय दौरे पर

- पर्यटन मंत्री ने केदारनाथ का रुद्राभिषेक कर विशेष पूजा अर्चना की और विश्व एवं जन कल्याण के कामना की प्रार्थना की

बाबा केदारनाथ धाम के दर्शनों को पहुंचे पर्यटन एवं धर्मस्व मंत्री सतपाल महाराज और गढ़वाल कमिश्नर विनय शंकर पांडेय का जिलाधिकारी सौरभ गहरवार ने वीआईपी हेलीपैड पर स्वागत किया। ड्यूटी पर मौजूद सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का अभिनंदन करने के बाद सतपाल महाराज तीर्थ पुरोहित समाज से मिले। इसके बाद बाबा केदारनाथ मंदिर में प्रवेश कर विशेष पूजा अर्चना कर संपूर्ण विश्व एवं मानवता के कल्याण की कामना की। इस दौरान उन्होंने

बाबा केदार से उत्तराखंड के सतत विकास के लिए भी आशीर्वाद मांगा। धाम में चल रहे पुनर्निर्माण एवं विकास कार्यों की जानकारी ली। साथ ही पुनर्निर्माण कार्यों की समीक्षा भी की। वहीं, पूजा अर्चना के बाद पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने केदारनाथ पुनर्निर्माण कार्यों और केदारनाथ यात्रा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। साथ ही तीर्थ यात्रियों के सुझावों को भी सुना। कार्याधिकारी आरसी तिवारी ने उन्हें भगवान केदारनाथ का प्रसाद, रुद्राक्ष माला भेंट की। केदारनाथ दर्शन के बाद कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज बदरीनाथ धाम दर्शन के लिए पहुंचेंगे। बता दें कि चारों धाम के कपाट खुल चुके हैं। ऐसे में चार धाम के दर्शनों के लिए तीर्थ यात्रियों की हुजूम उमड़ रहा है।

केदारनाथ यात्रा को सुगम बनाने के लिए हो रहे हर प्रयास

रुद्रप्रयाग। श्री केदारनाथ धाम में दर्शन करने आ रहे श्रद्धालुओं की सुविधाओं का विभिन्न विभागों द्वारा ध्यान रखा जा रहा है। मंगलवार को यहां अधिशासी अभियंता जल संस्थान अनीश पिल्लई ने जानकारी देते हुए अवगत कराया है कि केदारनाथ धाम में दर्शन करने पहुंच रहे तीर्थ यात्रियों को पेयजल की कोई असुविधा न हो इसके लिए केदारनाथ यात्रा मार्ग से केदारनाथ धाम तक समुचित पेयजल व्यवस्था सुचारू की गई है। उन्होंने अवगत कराया है कि सोनप्रयाग से यात्रा ट्रैक रूट पर पेयजल व्यवस्था के लिए 78 स्टैंड पोस्ट लगाए गए हैं एवं 6 टैंक टाइप के स्टैंड पोस्ट भी स्थापित हैं तथा तीन स्थानों पर वाटर एटीएम स्थापित किए गए हैं जिसमें सीतापुर, सोनप्रयाग एवं गौरीकुंड शामिल हैं। जनपद की सीमा से लेकर सोनप्रयाग तक विभिन्न स्थानों पर 175 हैंड पम्प स्थापित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि घोड़े-खच्चरों के लिए पानी की समुचित व्यवस्था के लिए गौरीकुंड घोड़ा पड़ाव से केदारनाथ घोड़ा पड़ाव तक 39 चरहियां बनाई गई हैं। इसके साथ ही घोड़े-खच्चरों के लिए 13 स्थानों पर गीजर लगाते हुए गरम पानी की व्यवस्था की गई है। केदारनाथ यात्रा मार्ग से लेकर केदारनाथ धाम तक समुचित शौचालय की व्यवस्था सुलभ इंटरनेशनल के इंचार्ज धनंजय पाठक ने अवगत कराया है कि सुलभ इंटरनेशल ने यात्रा मार्ग से लेकर केदारनाथ धाम तक श्रद्धालुओं के लिए समुचित शौचालय की व्यवस्था उपलब्ध कराई गई है।

केदारधाम यात्रा में शराब पीना पड़ा भारी पुलिस ने वापस भेजा

रूद्रप्रयाग, 14 मई (देशबन्धु)। केदारधाम यात्रा के दौरान सार्वजनिक स्थान पर शराब पीकर हुड़दंग करना कुछ लोगों पर भारी पड़ गया। पुलिस ने आप्रेशन मर्यादा के तहत उन पर चालानी कार्यवाही करते हुए उन्हे आधी यात्रा से ही वापस भेज दिया गया है। बता दें कि रुद्रप्रयाग में इन दिनों चल रही केदारधाम यात्रा में अत्यधिक संख्या में श्रद्धालु एवं यात्री वाहन जनपद क्षेत्रान्तर्गत आ रहे हैं। आने वाले वाहनों हेतु प्रभावी यातायात प्रबन्धन एवं श्रद्धालुओं के लिए भीड़ प्रबन्धन की जिम्मेदारी जनपद पुलिस बखूबी निभा रही है। श्रद्धालुओं के बीच यात्रा की आड़ लेकर कुछ नशेड़ी व हुड़दंगी प्रवृत्ति के लोग भी धाम क्षेत्र या धाम के पड़ावों तक आ रहे हैं। यात्री वाहनों के सीतापुर व सोनप्रयाग क्षेत्र में आने पर वाहनों को निर्धारित पार्किंग में खड़ा कराया जा रहा है। पुलिस के स्तर से धाम क्षेत्र व यात्रा पड़ावों पर अर्मादित आचरण करने वालो, नशे का सेवन करने वालो के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही हेतु ऑपरेशन मर्यादा चलाया हुआ है। इसके तहत यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि पार्किंग में खड़े वाहनों, पैदल मार्ग या धाम क्षेत्र में नशे का सेवन करने, हुड़दंग मचाने व अर्मादित आचरण करने वालों पर समय रहते उचित कार्यवाही हो। इस हेतु पुलिस की स्पेशल टीमें निरन्तर गश्त कर रही हैं। इस क्रम में बीते रोज की सांयकाल सोनप्रयाग पार्किंग में पुलिस टीम द्वारा देखा गया कि कुछ युवक महिन्द्रा थार वाहन की छत में बैठकर मदिरा पान कर रहे हैं।

प्रादेशिकी

ताला तोड़कर बक्सा कारखाने से नकदी व सामान ले उड़े चोर

फर्रुखाबाद, 14 मई (देशबन्धु)। चोरों ने ताला तोड़कर बक्सा कारखाने से नकदी व सामान साफ कर दिया गया। सुबह दुकानदार जब दुकान खोलने आए तो मामले की जानकारी हुई। पुलिस को सूचना दी गई लेकिन कई घंटे तक पुलिस मौके पर नही पंहुची। शहर कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला खटकपुरा इज्जत खां निवासी मो.हनीश अंसारी के साथ ही उनके भाई मो. शहीद, मो. अलीम व मो. सलीम की लाल दरवाजा पर अलमारी-बक्सा आदि की दुकान व कारखाना है। 12 मई को सभी नें अपनी दुकानों को सकुशल बंद किया। 13 मई को मतदान के चलते दुकानें नहीं खुलीं। मंगलवार 14 मई को जब हनीश दुकान खोलने के लिए गए तो उन्होंने दुकान के शटर का ताला तोड़कर 35000 हजार की नकदी व सामान चोरी मिला। चोरों नें हनीश व उसके भाई शहीद की दुकान में चोरी की घटना को अंजाम दिया।

लोगों का विश्वास जीतना आसान नहीं होता : मोदी

वाराणसी में कार्यकर्ता सम्मेलन में कार्यकर्ताओं में भरा जोश

लखनऊ/वाराणसी, 14 मई (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को वाराणसी लोकसभा क्षेत्र के लिए नामांकन के बाद कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया। इस दौरान सबसे पहले पीएम मोदी ने सभी कार्यकर्ताओं को थैंक्यू कहा और एक जून तक अपना उत्साह और उमंग बनाए रखने के साथ-साथ प्रत्येक पोलिंग बूथ पर विजय का मंत्र दिया। पीएम मोदी ने कहा कि हम सब जानते हैं कि लोगों का विश्वास जीतना आसान नहीं होता है। पंचायत चुनाव में भी जीतना हो तो नाकों चने चबाने पड़ते हैं। 24 घंटे लोगों के प्रति समर्पित रहना पड़ता है तब जनता प्यार करती है और अपना आशीर्वाद देती है। ऐसे में इस बार भी जनता का ये प्यार, ये उत्साह, ये आशीर्वाद रोड शो के साथ-साथ ईवीएम में भी दिखाई देना चाहिए। पीएम ने कहा कि मोदी तो जीत जाएगा, क्योंकि आप जिताने वाले हो, लेकिन इस बार मुझे हर एक पोलिंग बूथ जीतना है, जिसकी जिम्मेदारी आपकी है। पीएम मोदी ने कार्यकर्ता सम्मेलन में अपने संबोधन की शुरुआत करते

- पंचायत चुनाव में भी जीतना हो तो नाकों चने चबाने पड़ते हैं
- प्रधानमंत्री ने एक जून तक उत्साह व उमंग बनाए रखने का दिया मंत्र
- प्यार व आशीर्वाद देने के लिए काशी की जनता का जताया आभार

हुए कहा कि यदि आप सभी कार्यकर्ता इजाजत दें तो आपसे कुछ कहना चाहता हूं। आपसे इतना ही कहना है, थैंक्यू। पीएम ने कहा कि 2014 में भी यहां रोड शो किया था और 2019 में भी रोड शो किया था, देश भर में इन दिनों सप्ताह में तीन-चार रोड शो कर रहा हूं, लेकिन सोमवार को रोड शो के सारे रिकॉर्ड आपने तोड़ दिए। इसके लिए आपके माध्यम से जनता जनार्दन को सर झुकाकर धन्यवाद करना चाहूंगा। आज जो आप कर रहे हैं जीवन के कई वर्ष तक इस काम को मैंने भी किया है। संकल्प पूरा होने की खुशी एक कार्यकर्ता से ज्यादा किसी और को नहीं होती। उन्होंने कहा कि काशी में जो कुछ भी विगत दस वर्ष में हुआ है वो सब आपकी वजह से हुआ है। इसलिए पक्का भरोसा है कि इस बार भी आप संभाल लेंगे। आप चुनाव जीतने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे। पीएम मोदी ने कहा कि दूसरा आग्रह है कि हमारे बूथ पर पिछली बार जितने वोट मिले थे उसका हिसाब लगा लीजिए। इस बार वो रिकॉर्ड तोड़ना है। जिस तरह धारा 370 हटाने के लिए डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने बलिदान दिया था, इस सपने को हमने पूरा किया है। मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटना जम्मू-कश्मीर और श्रीनगर में बड़ी संख्या में मतदान होते देखना है। ये भारत के उज्ज्वल भविष्य के संकेत हैं। ये हमारे दस साल की मेहनत का फल है। मेरा विषय यह नहीं है कि मेरी पार्टी का कोई व्यक्ति जीतेगा या नहीं, लेकिन लोकतंत्र मजबूत हुआ है इसकी संतुष्टि है।

एक-एक पोलिंग बूथ जीतने का दिया मंत्र

प्रधानमंत्री मोदी ने एक-एक पोलिंग बूथ जीतने का मंत्र देते हुआ कहा कि साथियों मोदी तो जीत जाएगा, क्योंकि आप जिताने वाले हो, लेकिन मुझे हर एक पोलिंग बूथ जीतना है। कोई कहे कुछ भी, लेकिन इसके लिए कड़ी मेहनत लगती है। ये जुलूस, नारे, रोड शो इससे चुनाव में बूथ पर असर नहीं पड़ता। हार-जीत से फर्क नहीं पड़ता है, लेकिन अगर मतदान प्रतिशत में पीछे रह जाएं तो काशी का प्रतिनिधि होने के नाते क्या मुंह दिखाउंगा। इसलिए पोलिंग बूथ जीतना ही संकल्प होना चाहिए। पोलिंग बूथ जीतने का तरीका क्या होना चाहिए मतदान को लोकतंत्र के उत्सव में बदल दीजिए। अभी आपके पास 14 दिन हैं, इस दौरान पोलिंग बूथ पर उत्सव मनाएं। पूरे पोलिंग बूथ में जितनी सोसायटी हैं, मोहल्ले हैं उन्हें आमंत्रित करें और वहां रंगोली व अन्य कार्यक्रम आयोजित करें। यही नहीं, जिस दिन मतदान करने जाएं तो देखें कि कौन मतदान करने आया और कौन नहीं। जो नहीं आया, उसे किसी भी तरह मतदान करने के लिए पोलिंग बूथ पर लाना आपकी जिम्मेदारी होनी चाहिए। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि मान लीजिए कि आपके बूथ में दस कार्यकर्ता हैं। एक कार्यकर्ता कम से कम 30 वोटर को इकट्ठा करे और उन्हें गाजे बाजे के साथ जुलूस निकालकर पोलिंग बूथ तक लाएं।

हमारे पास भी एटम बम और यह फ्रिज में रखने के लिए नहीं बने हैं : योगी

मणिशंकर अय्यर के पाक को लेकर दिए गए बयान पर किया कटाक्ष

लखनऊ/बाराबंकी, 14 मई (देशबन्धु)। कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर के पाकिस्तान को लेकर दिए गए बयान पर कटाक्ष करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पाकिस्तान समर्थक रामद्रोही जान लें कि हमारे पास भी एटम बम है और यह एटम बम फ्रिज में रखने के लिए नहीं बना है। योगी ने मंगलवार को यहां एक चुनावी जनसभा में कहा कि इस देश में रामभक्त और रामद्रोही हैं। रामभक्त राम मंदिर से उत्साहित हैं तो रामद्रोही नाखुश हैं। रामभक्तों पर गोलियां

चलाने वाले यह लोग कहते हैं कि राम मंदिर बेकार है। मोदी का विरोध सिर्फ रामद्रोही और पाकिस्तान ही कर रहे हैं। रामभक्त ही राष्ट्रभक्त हैं। वे भारत के उत्थान के बारे में सोचते हैं तो रामद्रोही पाकिस्तान का राग अलाप रहे हैं। वे कहते हैं कि पाकिस्तान के खिलाफ मत बोलो-उसके पास एटम बम है। पाकिस्तान समर्थक रामद्रोही जान लें कि हमारे पास भी एटम बम है, हमारा एटम बम फ्रिज में रखने के लिए नहीं बना है। यह लोग एक तरफ एटम बम की धमकी से भारत के दुश्मनों का उत्साह बढ़ा रहे हैं तो दूसरी तरफ राम मंदिर का विरोध कर राम को अपमानित कर रहे हैं। फैजाबाद के सांसद व भाजपा प्रत्याशी लल्लू सिंह के लिए दरियाबाद रेलवे स्टेशन के पास मैदान में योगी आदित्यनाथ ने कांग्रेस-सपा की नीतियों और नेताओं को निशाने पर लेते हुए कहा कि रामद्रोही नाखुश हैं।

विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं है

विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं है। सपा तथा कांग्रेस पार्टी का डंका पाकिस्तान में बज रहा है ये लोग जब चुनाव आता है तब गरीब, पिछड़ों की बात करते है और वोट लेकर भूल जाते है लेकिन भाजपा की केंद्र तथा प्रदेश सरकार ने सभी वर्गो के लिए निरन्तर कार्य किया है। उन्होंने कहा कि सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव, बसपा सुप्रीमो मायावती तथा राहुल गांधी भगवान श्रीराम का दर्शन करने के लिए अयोध्या इसलिए नहीं आए कि इनका वोट बैंक नाराज हो जाएगा, लेकिन इन्हें नहीं पता है कि बस्ती की धरती पर भगवान श्रीराम की प्राप्ति के लिए पुत्रेष्ट यज्ञ हुआ था इस पवित्र भूमि के लोग नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए संकल्प ले लिए है।

सार संक्षेप

भाजपा नेता सहित आठ पर एफआईआर

फर्रुखाबाद। शराब ठेके के सेल्समैन को गाली-गलौज व जान से मारनें की धमकी देनें के मामले में पुलिस नें भाजपा नेता सहित आठ के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। पड़ोसी जनपद कन्नौज के गुरसहायगंज निवासी अनिल कुमार गुप्ता थाना राजेपुर के ग्राम चाचूपुर में देशी शराब ठेके पर सेल्स मैंन है। दर्ज कराई गई एफआईआर में उसने कहा कि बीते 13 मई को शाम 6 बजे जब वह शराब ठेके को खोलने गया तो भाजपा नेता रमेश राजपूत के साथ ही ग्रामीण बृजेश, शिशुपाल, रामसनेही, नागेंश्वर, अभिषेक, दशरथ व भीम व महिलाओं के साथ धरना दिया। उन्होंने कहा कि ठेका नहीं खुलने देंगे। रमेश राजपूत नें एक राय होकर गाली-गलौज व जान से मारनें की धमकी दी। मुकदमें की विवेचना उपनिरीक्षक शिशुपाल को दी गई है।

छात्र-छात्राओं को अभिभावकों संग किया गया सम्मानित

मवाना। राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति योजना के तहत मवाना तहसील के गांव किशनपुर बिराना के उच्च प्राथमिक विद्यालय के चार छात्रों ने जनपद स्तरीय प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त की। मंगलवार को विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में प्रधान सतीश रावल की अध्यक्षता में चारों छात्रों और उनके अभिभावकों को सम्मानित किया गया। किशनपुर बिराना उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधान अध्यापक नीरज शर्मा ने बताया कि छात्रवृत्ति योजना के तहत देश भर में इस प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया, जिसमें 1,88,000 छात्र-छात्राओं ने अपना भाग्य आजमाया। जनपद मेरठ से इस मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति योजना के तहत प्रतियोगिता में 215 छात्र-छात्राओं ने सफलता प्राप्त की। विद्यालय के चयनित छात्रों में से ऋषभ ने 13वीं रैंक, विशाल और शगुन दोनों ने 35 वीं रैंक तथा आरती नागर ने 41वीं रैंक प्राप्त की। इस छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत चयनित प्रत्येक छात्र-छात्रा को कक्षा 9 से 12 तक प्रतिवर्ष12 हजार रुपये भारत सरकार की ओर से उनके अभिभावकों के खातों में भेजे जाएंगे। इस अवसर पर प्रधानाध्यापक नीरज शर्मा, मधु बाला, मधु रानी, बृजपाल सिंह, अनिल कुमार, अंकुर, अनीस अहमद, गुलशन और अनेक अभिभावक और ग्रामवासी उपस्थित रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में विवाहिता की मौत

मेरठ। इंचौली थाना क्षेत्र स्थित गांव कस्ताला में संदिग्ध परिस्थितियों में विवाहिता की मौत हो गई, विवाहिता का शव मकान के एक कमरे में फांसी के फंदे से लटका हुआ था। मामले की जानकारी मिलने पर विवाहिता के मायके वाले उसकी ससुराल पहुंच गए। और ससुराल वालों पर हत्या का आरोप लगाकर जमकर हंगामा कर दिया। हंगामे की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और विवाहिता के शव को पोस्टमॉर्टम को भेजकर मामले की जांच शुरू कर दी। परतापुर थाना क्षेत्र निवासी स्थित गांव घाट के रहने वाले राजेश कुमार की बेटी अंशु की शादी तीन साल पहले इंचौली थाना क्षेत्र स्थित गांव कस्तला के रहने वाले अंकुर के साथ हुई थी।

तीन सौ एनसीसी कैडेट्स शिविर में लेंगे प्रशिक्षण

मवाना, 14 मई (देशबन्धु)। कृषक इण्टर कालेज मवाना के परिसर में मंगलवार को 73 यूपी बटालियन एनसीसी के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर के प्रथम दिन कैम्प कमांडेंट कर्नल मृदुल मित्तल ने कैडेट्स को प्रारम्भिक उदबोधन दिया। इस शिविर में करीब तीन सौ एनसीसी कैडेटस प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। कैम्प कमाण्डेंट कर्नल मृदुल मित्तल ने कहा कि इस संयुक्त

वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में लगभग तीन सौ एनसीसी कैडेटस (ब्वायज) को फायरिंग, हथियार प्रशिक्षण, मैप रिडिंग, एफसीबीसी, आबस्टिकल आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा। थल सैनिक कैम्प के योग्य कैडेट्स का प्रारम्भिक चयन किया जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान सुरक्षा का विशेष ध्यान रखते हुए सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। कैडेट्स के रहने, खाने, प्रकाश, जल आदि की सभी व्यवस्था उनके द्वारा पूर्ण करते हुए उत्तम प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रयास किया जाएगा। कैम्प के आयोजन में कृषक इण्टर कालेज, मवाना के प्रधानाचार्य देवेन्द्र कुमार ने हरम्भव सहयोग प्रदान किया।

शोभित विश्वविद्यालय के नए कुलपति बने डॉ. विनोद कुमार

मेरठ, 14 मई (देशबन्धु)। प्रख्यात शिक्षाविद् प्रो.विनोद कुमार त्यागी ने शोभित विश्वविद्यालय मेरठ के नए कुलपति के रूप में पदभार ग्रहण किया। वर्तमान कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर डॉ. जयानंद ने विश्वविद्यालय के कुलाधिपति कुंवर शेखर विजेंद्र, वरिष्ठ एचआर एवं कारपोरेट रिलेशन निदेशक देवेंद्र नारायण, डीन एकेडमिक्स डॉ. अशोक कुमार, विश्वविद्यालय के प्लानिंग निदेशक, अर्जुन वर्मा, विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. गणेश भारद्वाज एवं विश्वविद्यालय के अन्य डीन एवं सभी विभागो के निदेशक की उपस्थिति में प्रो विनोद कुमार त्यागी को कार्यभार सौंपा गया। प्रोफेसर विनोद कुमार त्यागी ने अपनी पीएचडी कैमिकल टेक्नोलोजी में हरकोर्ट बटलर टेक्निकल यूनिवर्सिटी, कानपुर (यूपी) से पूर्ण की है। प्रोफेसर वीके त्यागी का एचबीटीआई कानपुर जैसे प्रख्यात शिक्षण संस्थान में शिक्षण, अनुसंधान एवं एकेडमिक प्रशासन का 30 वर्षों से अधिक का अनुभव रहा है। वह यूपी राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषित एक स्वायत्त संस्थान, बुंदेलखंड इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (बीआईटी), झांसी के पूर्व निदेशक रह चुके है।

- प्रख्यात शिक्षाविद् ने कार्यालय पहुंचकर संभाला कार्यभार
- सभी शिक्षकगणों ने शुभकामनाएं प्रेषित की

सब्जी विक्रेता की हत्या का पुलिस ने किया खुलासा

मेरठ, 14 मई (देशबन्धु)। छह महीने पहले हुई सब्जी विक्रेता की हत्या का पुलिस ने खुलासा करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार सब्जी विक्रेता की हत्या उसकी प्रेमिका के पिता ने भाड़े के बदमाशों से कराई थी। पुलिस ने प्रेमिका के पिता सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है। भावनपुर थाना क्षेत्र के मानपुर के रहने वाले सब्जी विक्रेता मोनू सैनी की 19 दिसंबर को सब्जी बेचकर लौटते समय गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस मामले में परिजनों ने थाने में हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था। इस मामले में पुलिस की कई टीमों ने घटना की बारीकी से जांच करते हुए दो आरोपी ऋतिक और अंकित को गिरफ्तार किया। जिन्होंने मोनू सैनी की हत्या करना कबूल किया।

प्रेमिका के पिता ने दी थी सुपारी, हत्या में प्रयोग की गई पिस्टल बरामद

पुलिस पूछताछ में आरोपी अंकित और रितिक ने बताया कि मोनू सैनी का गांव रहने वाले राजपाल की बेटी से प्रेम प्रसंग चल रहा था। जिसके चलते राजपाल ने मोनू की हत्या के लिए गांव निवासी जेल में बंद गुड्डू नामक युवक से मुलाकात की।

जिसके बाद गुड्डू ने राजपाल की दोनों से मुलाकात कराई। जिसके बाद राजपाल ने भाड़े पर सब्जी बेचकर लौटते समय मोनू सैनी की गोली मारकर हत्या करा दी।

मतगणना की तैयारी को ससमय पूर्ण करें अधिकारी : दीपक मीणा

संबंधित नोडल अधिकारियो के साथ डीएम की बैठक

मेरठ, 14 मई (देशबन्धु)। एनआईसी में जिला निर्वाचन अधिकारीध्जिलाधिकारी दीपक मीणा द्वारा लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 की मतगणना से संबंधित नोडल अधिकारियों के साथ बैठक आहूत की गई। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा समस्त एआरओ एवं संबंधित नोडल अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि काउंटिंग से संबंधित तैयारियों को ससमय सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि संबंधित अधिकारी अपने से संबंधित कार्य का गहनता से अध्ययन करते हुए तैयारी पूर्ण करें। काउंटिंग

सुपरवाइजर, मतगणना टेबिल, मतगणना टेबिल पर पार्टियों के एजेंट की नियुक्ति व प्रशिक्षण तथा मतगणना में लगने वाले कर्मचारियों का प्रशिक्षण, काउंटिंग का राउंडवार एनाउन्समेंट, ऑब्जर्वर तथा आरओ के लिए व्यवस्थाएं, मतगणना की ससमय फीडिंग तथा उसका एनाउन्समेंट, पोस्टल बैलेट पेपर की गिनती हेतु मतगणना टेबिल व कर्मचारियों का प्रशिक्षण, मतगणना स्थल पर विद्युत की निर्बाध आपूर्ति, पानी, बैठने की व्यवस्था, मीडिया सेंटर, प्रत्याशियो के साथ मतगणना से संबंधित जानकारी को साझा करना तथा उनके साथ बैठक इत्यादि बिन्दुओं पर समग्र रूप से चर्चा करते हुए कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

एंडोस्कोपिक स्पाइनल सर्जरी के कारण स्पाइनल देखभाल में क्रांतिकारी बदलाव

मेरठ, 14 मई (देशबन्धु)। हाल के वर्षों में, एंडोस्कोपिक स्पाइनल सर्जरी नामक एक अनोखी विधि, रीढ़ की समस्याओं से जूझ रहे लोगों के लिए आशा की किरण बन गई है। यह आधुनिक तकनीक छोटे कटों के माध्यम से रीढ़

की हड्डी का पता लगाने के लिए एंडोस्कोप नामक एक पतले उपकरण का उपयोग करती है, जिसमें एक कैमरा होता है।

आम तौर पर, सर्जरी में बड़े चीरे लगाए जाते हैं, लेकिन एंडोस्कोपिक स्पाइनल सर्जरी छोटे चीरों पर निर्भर करती है, जो ज्यादातर एक इंच से भी कम चौड़ा होता है, जिससे आसपास के क्षेत्र में कम से कम परेशानी होती है।

एंडोस्कोप, सर्जनों को रीढ़ की हड्डी के परेशान क्षेत्र का स्पष्ट और नजदीकी दृश्य देता है, जिससे उन्हें हर्नियेटेड डिस्क या स्पाइनल स्टेनोसिस जैसे मुद्दों से सटीक रूप से निपटने में मदद मिलती है।

सेंट जोन्स स्कूल का परिणाम रहा शत-प्रतिशत

मेरठ, 14 मई (देशबन्धु)। सोमवार को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने कक्षा 10वीं व कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया। रिजल्ट आते ही इंटरमीटिएट के छात्र-छात्राएं के चेहरे खिल उठे और खुशी से झूम उठे। इस मौके पर सेंट जोन्स स्कूल के छात्र-छात्राओं ने अपने शिक्षकों से आशिर्वाद लिया। दसवीं की रोमुय गुप्ता को 98.60 प्रतिशत अंक, अंशुमन को 98.2, मानिक गोयल को 97.60 प्रतिशत अंक मिले। वहीं कक्षा 12वीं के अभुयुदया सिंह को 96 प्रतिशत, नीलाक्षी को 95 व भार्गव ढागा को 94.60 प्रतिशत अंक मिले। स्कूल की प्रधिानाचार्या डा. शिमोना जैन ने सभी को मिठाई खिलाकर उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने बोर्ड परीक्षा में अच्छे प्रदर्शन को सराहा। उन्होंने कहा कि स्कूल के अनुशासन और छात्रों की लगन व महनत से आज बच्चों को ये उपलब्धि मिली है। उन्होंने शिक्षकों व फैकेल्टी के सभी मैंबर्स को भी धन्यवाद दिया, जिन्होंने बच्चों की पढ़ाई लिखाई के लिए पूरी महनत से कार्य किया।

खुशी से झूमे छात्र-छात्राएं

तैयारी *द्रौपद्री घाट पर दो दिवसीय साता फेरी मेले की तैयारी पूरी*

द्रौपद्री घाट पर स्नान करने से होती है मनोकामना पूरी

मवाना/हस्तिनापुर, 14 मई (देशबन्धु)। भगवान श्री कृष्ण की कर्मभूमि ऐतिहासिक तीर्थ नगरी हस्तिनापुर के पांडवान वन ब्लाक से होकर गुजरने वाली बुढी गंगा नदी किनारे प्राचीन द्रोपद्री घाट पर दो दिवसीय साता फेरी मेला सोमवार से प्रारम्भ हो गया। बुढी गंगा किनारे लगने वाले दो दिवसीय इस मेले में देहात क्षेत्र की हजारों श्रद्धालुपहुंच पवित्र गंगा में स्नान कर मनोकमाना पूणी करते है।

सालों से उपेक्षा का दशं झेल रही महाभारत कालीन ऐतिहासिक तीर्थ नगरी में पिछले कई दसकों से गंगा प्राचीन गंगा नदी के द्रोपद्री घाट साता फेरी के अवसर पर दो दिवसीय मेंले का आयोजन किया जाता है। सरकार व पर्यटन विभाग की उपेक्षा के चलते अधिकाशं महाभारत कालीन तीर्थ स्थल विकास से विचिंत होने के बाद भी दो दिवसीय इस मेले में हजारों महिला श्रद्वालु अपने परिवार की सुख शान्ति माता द्रोपद्री की पूजा अर्चना करती है। साथ ही गंगा घाट पर स्नान घाट के पश्चात द्रोपती मन्दिर और पांडव टीले के समीप स्थित पाडंश्वेर मन्दिर में पूजा अर्चना करती है। मान्यता है कि इस महाभारत काल में इस घाट पर पांडव पत्नि द्रोपद्री स्नान करती थी। जिसके चलते साता फेरी के दिन इस घाट पर स्नान करने से घर में सुख शन्ति कयाम रहती है। मेले में आई 70 वर्षीय महिला कुसुमलता का कहना है कि मान्यता है कि पांडव टीले पर राजा रधुनाथ महल के पास स्थित अमृत कुप में स्नान कर द्रोपती घाट तक जौ चढ़ती चलती है और द्रोपती घाट पर स्नान कर वापस आकर पाडेश्वर मन्दिर में पूजा अर्चना करती है मां द्रोंपती उनकी मनोकमान पुरी करती है।

- घाट तक जाने के लिए नहीं कोई सुगम मार्ग
- रात में सड़क पर रात गुजरती है हजारों महिलाएं

पर्यटन विभाग की उपेक्षा घाट तक जाने के नहीं सुगम मार्ग

सरकार की और पर्यटन विभाग की उपेक्षा के चलते वन आरक्षित जंगलो के बीच बने मां द्रोपद्री मन्दिर स्थित घाट व बुढी गंगा की अधिकांश भूमि पर भुमाफियाओं का कब्जा है। जिससे विलुप्त होती गंगा की धार के कारण द्रोपद्री घाट पर पानी ना के बराबर है। लेकिन मेले में आने वाली महिला श्रद्वालुओं की आस्था गहरी है कि वे घाट के गन्दें पानी में ही स्नान कर अपनी आस्था पुरी कर लेती है।

सड़क पर रात गुजारने को मजबूर महिलाएं

गंगा नदी किनारे आयोजित होने वाले इस दो दिवसीय मेले में आने वाले श्रद्वालुओं में अधिकांश महिला श्रद्वालु की सख्या होती है लेकिन इस के बाद भी प्रशासन द्वारा मेला स्थल या आस पास कोई व्यवस्था नही की जाती। दो दिवसीय इस मेले में आने वाली हजारो महिला श्रद्वालु को सड़क किनारे रात गुजारनी पड़ती है।

सीओ के बेटे पर बदमाशों ने किया हमला

मेरठ, 14 मई (देशबन्धु)। कंकरखेड़ा थाना क्षेत्र स्थित दिल्ली देहरादून हाईवे पर युवकों ने सीओ के बेटे पर जानलेवा हमला कर दिया। आरोपियों के द्वारा मारपीट के दौरान सीओ का बेटा घायल हो गया। आरोपी यहीं नहीं रुके। पीड़ित की गाड़ी में जमकर तोड़फोड़ की। शीशे तोड़ दिए। आरोपी हाथों में अवैध हथियार लिए हुए थे। हाइवे पर जाम लग गया। किसी तरह पीड़ित आरोपियों की चगुल से बचा और आरोपियों के खिलाफ तहरीर दी। पुलिस ने आधा दर्जन आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश में छापेमारी शुरू कर दी। आर्यमन यादव पुत्र उपेंद्र कुमार यादव छठी वाहिनी पीएसी में मौजूद सरकारी आवास में अपने परिवार के साथ रहता है। आर्यन के पिता पीएसी में सीओ के पद पर तैनात हैं। जानकारी के अनुसार आर्यन देहरादून में प्रॉपर्टी का काम करता है। वह अपनी मर्सिडीज कार से गाजियाबाद जा रहा था। दिल्ली देहरादून हाईवे पर स्थित कैलाशी हॉस्पिटल के पास कार सवार आधा दर्जन युवकों ने आर्यन की कार के सामने अपनी कार लगाकर आर्यन को रोक लिया। आर्यन के अनुसार सभी आरोपी शराब के नशे में धुत थे। पीड़ित आर्यन ने बताया कि कार सवार आरोपियों ने उसके साथ बिना किसी कारण गाली गलौज शुरू कर दी।

हाईवे पर रोका, कहासुनी के बाद की मारपीट

5वें चरण की तीन सीट पर राजग ने अपने सांसदों को किया है बेटिकट

पटना, 14 मई (एजेंसियां)। बिहार में लोकसभा चुनाव के पांचवे चरण में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने पांच सीटों में से तीन हाजीपुर (सु), मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी में अपने वर्तमान सांसदों को बेटिकट कर दिया है। बिहार लोकसभा चुनाव में पांचवे चरण का मतदान 20 मई को हाजीपुर (सु) मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, सारण और मधुबनी में होने जा रहा है। इनमें से हाजीपुर (सु), मुजफ्फरपुर और सीतामढ़ी संसदीय सीट पर राजग ने अपने वर्तमान सांसदों को बेटिकट कर दिया है जबकि सारण और मधुबनी में अपने वर्तमान सांसदों को ही सियासी रणभूमि में उतारा है।

वर्ष 2019 के चुनाव में हाजीपुर (सु) सीट से पूर्व केन्द्रीय मंत्री राम विलास पासवान के छोटे भाई राजग के घटक दल लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) प्रत्याशी पशुपति कुमार पारस ने महागठबंधन में शामिल राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रत्याशी पूर्व मंत्री शिवचंद्र राम को चुनावी मैदान में मात दी थी। पासवान के निधन के बाद लोजपा में हुई टूट के बाद पारस ने राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी (रालोजपा) और चिराग पासवान ने लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) बना ली। इस बार के चुनाव में राजग ने पशुपति कुमार पारस को बेटिकट कर उनकी जगह चिराग पासवान को हाजीपुर के चुनावी मैदान में उतारा है, जहां उनका मुकाबला पूर्व मंत्री राजद प्रत्याशी शिवचंद्र राम से होगा। मुजफ्फरपुर संसदीय सीट से वर्ष 2019 के चुनाव में राजग में शामिल भाजपा प्रत्याशी पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्वर्गीय कैप्टन जय नारायण प्रसाद निषाद के पुत्र अजय निषाद ने महागठबंधन में शामिल विकासशील इंसान पार्टी (वीआइपी) उम्मीदवार राजभूषण चौधरी निषाद को पराजित किया था। इस बार के चुनाव में भाजपा ने अजय निषाद को बेटिकट कर दिया है, जिससे नाराज होकर निषाद ने भाजपा का साथ छोड़ इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस (इंडिया गठबंधन) में शामिल कांग्रेस का 'हाथ' थाम लिया है और चुनावी संग्राम में उतर आये हैं। वहीं, दूसरी तरफ भाजपा ने निषाद की जगह राजभूषण निषाद को प्रत्याशी बनाया है। राजभूषण वीआईपी छोड़ भाजपा में शामिल हुए हैं। वर्ष 2019 के चुनाव में निषाद और राजभूषण के बीच चुनावी टक्कर हुई थी। इस बार के चुनाव में भी दोनों प्रतिद्धंदी आमने-सामने हैं। वर्ष 2019 आम चुनाव में सीतामढ़ी संसदीय सीट से राजग के घटक जदयू के टिकट पर पूर्व मंत्री सुनील कुमार पिंटू ने चुनावी रणभूमि में ताल ठोका। जदयू प्रत्याशी की टक्कर राजद प्रत्याशी और पूर्व सासंद अर्जुन राय से हुई। पिंटू ने राय को चुनावी दंगल में शिकस्त दी और पहली बार लोकसभा सांसद बन गये। इस बार के चुनाव में राजग ने पिंटू को बेटिकट कर उनकी जगह

■ हाजीपुर (सु) मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, सारण और मधुबनी में होगा मतदान

बिहार विधान परिषद के सभापति देवेश चंद्र ठाकुर को चुनावी दंगल में उतारा है। देवेश चंद्र ठाकुर पहली बार लोकसभा के चुनावी रण में अपना भाग्य आजमां रहे हैं। वहीं, राजद ने पूर्व सांसद अर्जुन राय पर ही भरोसा जताते हुये उम्मीदवार बनाया है।

सारण संसदीय सीट से भाजपा के टिकट पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री और वर्तमान सांसद राजीव प्रताप रूडी प्रत्याशी है, वहीं राजद के टिकट पर पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव-राबड़ी देवी की पुत्री डॉ. रोहिणी आचार्य उम्मीदवार हैं। छपरा(सारण) सीट से रूडी चार बार चुनाव जीत चुके हैं और पांचवी बार जीतने के प्रयास में हैं, वहीं राजद प्रत्याशी डॉ.रोहिणी पहली बार लोकसभा संसद पहुंचने के लिये कड़ी मेहनत कर रही हैं। पूर्व विधायक निर्दलीय उम्मीदवार शत्रुधन तिवारी उर्फ चोकर बाबा मुकाबले को त्रिकोणीय बनाने में लगे हैं। वर्ष 2019 में भाजपा के रूडी ने राजद प्रत्याशी पूर्व मुख्यमंत्री दारोगा प्रसाद यादव के पुत्र और लालू प्रसाद यादव के समधी चंद्रिका राय को पराजित किया था। इस बार के चुनाव में चंद्रिका राय, रूडी के पक्ष में प्रचार कर रहे हैं।

वर्ष 2019 के चुनाव में मधुबनी से पूर्व केन्द्रीय मंत्री हुकुमदेव नारायण के पुत्र भाजपा प्रत्याशी अशोक कुमार यादव ने महागठबंधन में शामिल वीआइपी प्रत्याशी ब्रदी कुमार पूर्वे को मात दी थी। पूर्व केन्द्रीय मंत्री निर्दलीय प्रत्याशी डॉ. शकील अहमद खान तीसरे नंबर पर रहे थे। भाजपा प्रत्याशी यादव पहली बार संसद पहुंचे थे। इस बार के चुनाव में भाजपा ने जहां एक बार फिर यादव को उम्मीदवार बनाया है, वहीं राजद ने पूर्व केन्द्रीय मंत्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी को यादव के विरूद्ध चुनावी संग्राम में उतारा है। फातमी दरभंगा संसदीय सीट से चार बार विजयी पताका लहरा चुके हैं।

लालू यादव ने छपरा से किया था संसदीय पारी का आगाज

बेटी रोहिणी करेंगी सियासी पारी की शुरूआत

वर्ष 1977 में छपरा संसदीय सीट से कांग्रेस के गढ़ को ढहाकर रिकॉर्ड मतों से जीतकर देश की राजनीतिक क्षितिज पर उभरे लालू प्रसाद यादव के लिए छपरा (सारण) सीट उनके उदय का गवाह बना वहीं उनकी पुत्री डॉ. रोहिणी आचार्य भी सारण की 'सरजमीं' से ही अपनी 'सियासी' पारी की शुरूआत करने जा रही हैं। बिहार के गोपालगंज के फुलवरिया गांव में कुंदन राय और मरछीया देवी के आंगन में 11 जून 1948 को जन्मे लालू यादव जय प्रकाश नारायण (जेपी) आंदोलन के समय पटना यूनिवर्सिटी में छात्र नेता थे। 18 मार्च 1974 के दिन बिहार से जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में छात्र आंदोलन की नींव पड़ गई थी। यह आंदोलन पूरे देश में ऐसा फैल गया कि देखते ही देखते राजनीति का चेहरा ही पूरी तरह बदल गया। इंदिरा गांधी की सरकार के खिलाफ राजधानी पटना में छात्र सड़कों पर उतर आए थे। वहीं आंदोलन को कुचलने के लिए सरकार ने सेना को मैदान में उतार दिया था। उस दिन सेना ने आंदोलनकारियों को जमकर पीटा था। इस लाठीचार्ज में कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए। इस घटना के बाद यह अफवाह फैल गई कि सेना की पिटाई से घायल लालू यादव की मौत हो गई है। यह खबर आग की तरह फैल गई। खबर जैसे ही जेपी तक पहुंची वह सिहर उठे। बाद में लालू के सामने आने के बाद मामला शांत हुआ। पटना में छात्र आंदोलन की अगुवाई कर लालू, जेपी के करीब भी आ गए। आपातकाल खत्म होने के बाद 1977 में लोकसभा चुनाव हुए तो लालू छपरा सीट से उतरे। अपने चार दशकों से अधिक वक्त के सियासी सफर में लालू ने छात्र यूनियन, संसद, विधानसभा, विधान परिषद समेत कई चुनाव लड़े लेकिन सबसे पहले चुनाव की बात ही कुछ अलग थी। वर्ष 1977 के लोकसभा चुनाव में उतरे 29 साल के युवा लालू ने कई सियासी कीर्तिमान खड़े किए थे। देश में इमरजेंसी को लेकर कांग्रेस के खिलाफ नाराजगी के बीच यह चुनाव हो रहा था। भारतीय लोकदल के टिकट पर छपरा की सियासी रणभूमि में उतरे लालू प्रसाद यादव ने तीन बार के सांसद कांग्रेस प्रत्याशी राम शेखर प्रसाद सिंह को एक बड़े अंतर से हराकर जीत हासिल की। उस चुनाव में उन्हें 4,15,409 वोट मिले थे, जो कुल वोटों का 85.97 प्रतिशत था। वहीं, उनके प्रतिद्वंद्वी मौजूदा सांसद रामशेखर सिंह को मात्र 41,609 वोट मिला, जो कुल वोटों का 8.61 प्रतिशत वोट था। लालू ने छपरा सीट से मौजूदा सांसद रामशेखर सिंह को 3,73,800 मतों के अभूतपूर्व अंतर से हराया था।

सारण में चुनावी समीकरण के दो कोण

सारण लोकसभा क्षेत्र में चुनावी समीकरण के दो कोण ही रहते हैं। मुकाबले का एक कोण यदुवंश तो दूसरा कोण रघुवंश होता है। सारण, लालू प्रसाद यादव की कर्मभूमि रही है। यहां की धरती ने उन्हें बड़ा नेता बनाया, लेकिन बीते कुछ चुनावों से लालू के लिए यहां की मिट्टी उसर बन गई है। लालू को अपना नायक मानने वाली सारण की धरती बीते 2014 के चुनाव में उनकी पत्नी राबड़ी देवी को भी दगा दे दी। वर्ष 2019 में लालू के समधी चंद्रिका राय यहां से उम्मीदवार थे लेकिन उन्हें भी हार झेलना पड़ा।सारण लोकसभा सीट पर 2014 से भाजपा नेता राजीव प्रताप रूडी का कब्जा है। सारण सीट कई मायनों में खास है। यहां की राजनीति की एक धूरी पर बीते करीब तीन दशक से राजीव प्रताप रूड़ी जमे हुए हैं, दूसरी तरफ यह सीट लालू परिवार के नाम पर भी पहचानी जाती है।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जन्मभूमि सारण संसदीय क्षेत्र हमेशा से हाईप्रोफाइल रहा है। यह धरती लोक सांस्कृतिक के जनक भिखारी ठाकुर के लोक नाट्य के कारण भी अंतरराष्ट्रीय पहचान रखती है। गंगा, गंडक और घाघरा नदी के बीच बसा यह शहर भारत के प्राचीन शहरों में से एक है। कभी जंगलों से घिरे इस जगह पर विचरण करने वाले हिरण (सारंग) और वन (अरण्य) के कारण इसे सारंग अरण्य कहा जाता था। बाद में यह बदलकर सारण हो गया। यह भी कहा जाता है कि सम्राट अशोक के शाषण काल में यहां लगाए गए धम्म स्तंभों को 'शरण' कहा जाता था। यह शरण बाद में सारण कहलाने लगे। सारण जिले का मुख्यालय छपरा है। छपरा के बारे में मान्यता है कि भगवान श्री राम अपने वनवास के दिनों में यहां छह दिनों तक रुके थे। उनके छह दिन के पड़ाव के बाद इस जगह का नाम छपरा पड़ा है। यहां का सोनपुर मेला विश्वप्रसिद्ध है। क्षेत्र में मशहूर मॉर्टन टॉफी फैक्ट्री बंद हो चुकी है।

सारण क्षेत्र में राजपूत और यादव बड़े मतदाता

सारण संसदीय सीट से लालू-राबड़ी परिवार की दूसरी पीढ़ी रोहिणी आचार्य चुनावी रणभूमि में उतरी हैं, वहीं भाजपा ने एक बार फिर राजीव प्रताप रूडी को अपना उम्मीदवार बनाया है। परिसीमन के बाद छपरा की जगह सारण सीट के अस्तित्व में आने के बाद इसका वोट का गणित भी तेजी से बदला है। सारण क्षेत्र के जातीय और वर्ग समीकरण को देखे तो सारण राजपूत और यादव बहुल क्षेत्र है। राजपूत और यादव सारण के बड़े मतदाता हैं, लेकिन मुसलमान और वैश्य समुदाय के वोट निर्णायक माने जाते हैं। माई समीकरण के तहत ही लालू लगातार सारण से चुनाव जीतते रहे हैं, लेकिन परिसीमन के बाद वैश्य वोटों की गोलबंदी के कारण रजीव प्रताप रूड़ी ने लालू को मात दे दी। इस बार के चुनाव में लालू की पुत्री रोहिणी आचार्य अपने पुराने माई समीकरण के भरोसे ही राजनीतिक करियर की शुरुआत कर रही हैं।

जेपी ने रामविलास को चुनाव लड़ने के लिए दिए थे दस हजार रुपए

पटना, 14 मई (एजेंसियां)। संपूर्ण क्रांति के जनक लोकनायक जय प्रकाश नारायण (जेपी) ने रामविलास पासवान को वर्ष 1977 में हाजीपुर से चुनाव लड़ने के लिए 10 हजार रुपए दिए थे।

दलितों के करिश्माई नेता रामविलास पासवान ने अपने संसदीय सफर की शुरूआत वर्ष 1977 में हाजीपुर सीट से की थी। हालांकि इससे पहले ही वह वर्ष 1969 में अलौली से विधायक बन गए थे। आपातकाल के समय वह आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था अधिनियम (मीसा) कानून के तहत जेल में बंद थे। जेल से छूटने के बाद जेपी ने उनसे हाजीपुर से चुनाव लड़ने को कहा था। रामविलास के पास उस समय पैसे नहीं थे। जेपी ने तब रामविलास को दस हजार रूपए चुनाव लड़ने के लिए दिए थे। लेकिन लोगों ने इतने चंदे दे दिए कि रामविलास को जेपी से मिले दस हजार रूपए खर्च करने की जरूरत ही नहीं पड़ी। रामविलास ने उस समय अधिवक्ता उमेश शाही के यहां शरण ली थी। चुनाव के बाद अचानक शाही जी ने फोन करके बताया कि उनका 10 हजार रुपया वैसे ही जस का तस बक्सा में रखा हुआ है। तब रामविलास ने कहा कि अब तो उस पैसे की कोई जरूरत नहीं है। बाद में रामविलास ने दस हजार रूपए जनता पार्टी फंड में जमा करा दिए थे।

पासवान ने भारतीय लोकदल के टिकट पर वर्ष 1977 में हाजीपुर से चुनाव लड़ा और कांग्रेस उम्मीदवार बालेश्वर राम को सवा चार लाख से ज़्यादा मतों से हराकर पहली बार लोकसभा में पैर रखा था। पासवान का नाम गिनीज़ बुक ऑफ़ वल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल हो गया। राम विलास पासवान ने इसके बाद हाजीपुर से आठ बार चुनाव जीता। पूर्व केन्द्रीय मंत्री दिवंगत राम विलास के पुत्र जमुई (सु) के सांसद चिराग पासवान इस बार के चुनाव में हाजीपुर (सु) से अपनी किस्मत आजमां रहे हैं। हाजीपुर संसदीय सीट पर 20 मई को चुनाव होगा।

मोदी ने उस लड़की को लिखा खत, जिसने बनाई थी मां के साथ उनकी तस्वीर

बागलकोट, 14 मई (एजेंसियां)। मां-पुत्र के दिव्य प्रेम को प्रदर्शित करती हुई तस्वीर बनाने वाली बागलकोट की लड़की को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को खत लिखा है। इस लड़की ने बीते दिनों प्रधानमंत्री मोदी और उनकी दिवंगत मां का चित्र बनाया था, जो काफी सुर्खियों में रहा।

इस बीच, बागलकोट की रहने वाली लड़की नागरत्न मेती को प्रधानमंत्री ने खत लिखा है। गत 29 अप्रैल को बागलकोट में पीएम मोदी की रैली में इस लड़की द्वारा बनाई गई चित्र ने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। लोकसभा

चुनाव के बीच प्रचार करने पीएम मोदी बागलकोट पहुंचे थे। इस लड़की ने अपने एक चित्र से सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, जिसमें उसने प्रधानमंत्री और उनकी मां की तस्वीर बनाई थी। वहीं, प्रधानमंत्री की उस लड़की पर जैसे ही नजर पड़ी, उन्होंने मौके पर तैनात एसपीजी कमांडो को लड़की को बुलाने का आदेश दिया। पीएम मोदी ने लड़की को पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने कहा कि एक सुंदर चित्र के उपहार के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। यह कलात्मक कृति मानवीय भावनाओं के महत्व को दर्शाती है। आपकी पेंटिंग एक जीवंत प्रदर्शन है जो युवा ऊर्जा का सार प्रस्तुत करती है। यह नए भारत को आकार देने और हमारे युवाओं के लिए एक आशाजनक भविष्य सुरक्षित करने की मेरी प्रतिबद्धता को प्रेरित करती है। अपनी रचनात्मक प्रतिभा और कौशल को अपने काम में लागू करने में दृढ़ रहें। उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

मप्र में कम मतदान प्रतिशत ने सियासी दलों की बढ़ाई चिंता

भोपाल, 14 मई (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश में लोकसभा चुनाव के चार चरण पूरे हो चुके हैं। मगर, कम मतदान प्रतिशत ने सियासी दलों को उलझन में डाल दिया है। दलों के नेता जीत के दावे कर रहे हैं, मगर कम मतदान प्रतिशत का जवाब किसी के पास नहीं है। राज्य में सभी 29 सीटों पर चार चरणों में मतदान हुआ। इस बार कुल मतदान का प्रतिशत वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव के मुकाबले लगभग 5 प्रतिशत कम रहा है। पिछले दो चुनाव और वर्तमान चुनाव के मतदान प्रतिशत पर गौर करें तो वर्ष 2014 के चुनाव में 61.61 प्रतिशत मतदान हुआ था तो वहीं 2019 के चुनाव में 71.16 प्रतिशत लोगों ने वोट डाले थे। वहीं, इस बार के चुनाव

में यह प्रतिशत 66.77 हो गया है। चारों चरणों के मतदान प्रतिशत पर गौर करें तो एक बात साफ हो जाती है कि हर चरण में मतदान का प्रतिशत पिछले चुनाव से कम रहा है। पहले चरण में 19 अप्रैल को जिन छह सीटों पर मतदान हुआ था, वहां वर्ष 2019 के मुकाबले लगभग 7.5 प्रतिशत कम वोट पड़े। इसी तरह दूसरे चरण में 26 अप्रैल को मतदान हुआ, जो वर्ष 2019 के मुकाबले लगभग नौ प्रतिशत कम रहा था। तीसरे चरण में 7 मई को मतदान हुआ, वह वर्ष 2019 के चुनाव के मतदान से एक प्रतिशत से भी कम का अंतर रहा। चौथे चरण में भी वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव से लगभग चार प्रतिशत कम वोट पड़े। राज्य में लोकसभा चुनाव में हुए कम मतदान ने सभी उम्मीदवारों से लेकर राजनीतिक दलों की भी चिंता बढ़ा दी है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा ने कहा है कि प्रदेश की जनता ने नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए मतदान किया है। राज्य की सभी 29 सीटों पर भाजपा को जीत मिलेगी। कांग्रेस की ओर से लगातार दावा किया जा रहा है कि इस बार जो नतीजे आएंगे, वह चौंकाने वाले होंगे। देश और प्रदेश की जनता भाजपा की गारंटी को जान गई है कि झूठी है।

बसपा प्रत्याशी अनिल चौधरी बैलगाड़ी पर सवार होकर नामांकन करने पहुंचे

बक्सर, 14 मई (एजेंसियां)। बिहार के बक्सर लोकसभा क्षेत्र से बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के प्रत्याशी अनिल चौधरी ने मंगलवार को अपना नामांकन किया। वह बैलगाड़ी पर सवार होकर जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे। नामांकन से पूर्व उन्होंने चौकिया में भगवान बुद्ध और बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और उसके बाद रोड शो करते हुए किला मैदान पहुंचे, जहां हजारों की संख्या में कार्यकर्ताओं और आम जनता ने उनका भव्य स्वागत किया। इसके बाद वह किला मैदान से समर्थकों के साथ बैलगाड़ी पर सवार होकर नामांकन के लिए निकले।

इस क्रम में उन्होंने सर्वप्रथम ज्योति चौक पहुंचकर ज्योति प्रकाश की मूर्ति को दूध से

स्नान कराया। उसके बाद अंबेडकर चौक पहुंचकर बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद नामांकन के लिए जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे। नामांकन के बाद किला मैदान में उन्होंने विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि बक्सर इस बार बहुजनों का होगा। बसपा के राज्यसभा सांसद सह केंद्रीय प्रभारी रामजी गौतम ने कहा कि आपको अगर बाबा साहब से प्यार है तो आपको याद रखना है और किसी के बहकावे में नहीं आना है। विपक्षी पार्टियों के पास बहुत सारे बहरूपिए हैं। उन्होंने कहा कि 5 किलो राशन सरकार की उपलब्धि नहीं नाकामी है। मोदी सरकार की उपलब्धि तब होती जब सरकार देश के नौजवानों को रोजगार देती, युवाओं को नौकरी देती। बक्सर लोकसभा सीट पर भाजपा ने मिथिलेश तिवारी और राजद ने सुधाकर सिंह को मैदान में उतारा है। बक्सर में एक जून को मतदान होगा।

बंगाल में पांचवें चरण में 32 प्रतिशत बढ़ेगी सीएपीएफ की तैनाती

कोलकाता, 14 मई (एजेंसियां)। सोमवार को लोकसभा चुनाव के चौथे चरण के दौरान पश्चिम बंगाल के विभिन्न इलाकों से सामने आ रही तनाव की खबरों को देखते हुए भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने 20 मई को होने वाले पांचवें चरण के मतदान में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) कर्मियों की तैनाती को लगभग 32 प्रतिशत बढ़ाने का निर्णय लिया है।

पश्चिम बंगाल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) के कार्यालय के सूत्रों ने कहा कि सोमवार को पश्चिम बंगाल में सीएपीएफ की 578 कंपनियां तैनात की गईं और पांचवें चरण में 31.83 प्रतिशत की वृद्धि के साथ यह संख्या 762 हो जाएगी। सूत्रों ने कहा कि राज्य में पांचवें चरण में मतदान के लिए निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या चौथे चरण की तुलना में थोड़ी कम है। इसके बावजूद यहां सीएपीएफ की अतिरिक्त तैनाती की जा रही है।

चौथे चरण में जहां आठ निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान हुआ, वहीं पांचवें चरण में यह संख्या सात है। ये सात निर्वाचन क्षेत्र हुगली जिले में सेरामपुर, हुगली और आरामबाग, उत्तर 24 परगना जिले में बैरकपुर और बनगांव और हावड़ा जिले में हावड़ा और उलुबेरिया हैं।

इन सात निर्वाचन क्षेत्रों में से बैरकपुर और बनगांव अलग-अलग कारणों से चुनाव आयोग की विशेष निगरानी में होंगे। जबकि बनगांव भारत-बांग्लादेश सीमावर्ती निर्वाचन क्षेत्र है। वहीं, बैरकपुर में चुनाव संबंधी हिंसा और तनाव का इतिहास रहा है। सीईओ कार्यालय के एक सूत्र ने कहा कि यह चरणबद्ध तरीके से तैनात की जाने वाली सीएपीएफ की कंपनियों की संख्या बढ़ाने की आयोग की योजना के अनुरूप है। पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी ने सोमवार को मतदान के अंत में कहा कि अगले चरण के चुनाव में ईसीआई द्वारा सुरक्षा घेरा कड़ा कर दिया जाएगा। अधिकारी ने कहा कि अगर चुनाव आयोग ने इसी तरह की सुरक्षा व्यवस्था बरकरार रखी तो अगले चरण का चुनाव तृणमूल कांग्रेस के लिए और ज्यादा परेशानी से भरा होगा।

लोकसभा चुनाव में अमेठी बनी सबसे ज्यादा हॉट सीट

अमेठी में 38 साल रहा गांधी परिवार का राज

■ स्वामीनाथ शुक्ल

अमेठी, 14 मई (देशबन्धु)। कमल और पंजे के पंगे में अमेठी सबसे ज्यादा हॉट सीट बन गई है। जबकि इस चुनाव में गांधी नहीं है। गांधी के सबसे छोटे सिपाही किशोरी लाल शर्मा और भाजपा में देश की सबसे बड़ी महिला नेता और केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी आमने-सामने हैं। कहने के लिए अमेठी की चुनावी लड़ाई कांग्रेस के एक छोटे सिपाही और केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी के बीच की है। लेकिन किशोरी लाल शर्मा की चुनावी कमान प्रियंका गांधी ने संभाल रखा है।

स्मृति ईरानी और प्रियंका गांधी के आमने-सामने होने से अमेठी सबसे ज्यादा हॉट सीट बन गई है। बिन गांधी और बिन विधायक कांग्रेस चुनावी मैदान में उतरी है। लेकिन स्मृति ईरानी के पास हारे जीते दर्जन भर विधायक हैं। एक जिला पंचायत अध्यक्ष, एक नगर पालिका अध्यक्ष और कई नगर पंचायत अध्यक्ष है। बाकी खंड प्रमुख और जिला पंचायत सदस्यों की टीम भाजपा के साथ है। फिर भी स्मृति ईरानी के समर्थन में राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, प्रदेश अध्यक्ष, दो बार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ,उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक और उप मुख्यमंत्री केशव मौर्य, स्वतंत्र देव सिंह आदि जनसभा कर चुके हैं। किशोरी लाल

शर्मा की तरफ से प्रियंका गांधी अकेले चुनाव मैदान में हैं। स्मृति ईरानी 2019 में राहुल गांधी को हराकर सांसद चुनी गई थी। अमेठी में तीसरी बार भाजपा की उम्मीदवार बनी है। पांच साल से अमेठी में डेरा डाले हैं। जबकि कांग्रेस कार्यालय में पांच साल से सन्नाटा पसरा हुआ था। लेकिन किशोरी लाल शर्मा के उम्मीदवार बनाए जाने के बाद से कांग्रेस कार्यालय गुलजार हो गया है।

4 गांधी जीते और 4 गांधी हारे

अमेठी में 19 लोकसभा चुनाव हो चुके हैं। इसमें 16 बार कांग्रेस और तीन बार भाजपा के सांसद चुने गए हैं। गांधी परिवार 47 साल से अमेठी में है। इसमें 38 साल गांधी परिवार का राज था। 1977 से अबतक 4 गांधी जीते और 4 गांधी हार चुके हैं। संजय गांधी, राजीव गांधी, सोनिया गांधी और राहुल गांधी चुनाव जीत चुके हैं। जबकि संजय गांधी, मेनका गांधी, राहुल गांधी और महात्मा गांधी के पोते राजमोहन गांधी चुनाव हार चुके हैं। अमेठी में गांधी परिवार से सांसद बनने वाले एक बार संजय गांधी, चार बार राजीव गांधी, एक बार सोनिया गांधी, तीन बार राहुल गांधी और दो बार गांधी परिवार के करीबी कैप्टन सतीश शर्मा सांसद चुने गए थे। अमेठी में पहली बार 1952 में लोकसभा चुनाव हुए थे। कांग्रेस के बीबी केस्कर 1952 और 1957 में दो बार सांसद बने थे। 1962 में कांग्रेस से अमेठी के राजा रणंजय सिंह, 1967 और 1971 में दो बार विद्याधर बाजपेई कांग्रेस, 1977 रवींद्र प्रताप सिंह जनता पार्टी,1980 संजय गांधी कांग्रेस,1981 से 1991 तक चार बार राजीव गांधी कांग्रेस,1991 और 1996 में दो बार कैप्टन सतीश शर्मा कांग्रेस, 1998 में अमेठी के राजा डॉ संजय सिंह भाजपा,1999 सोनिया गांधी कांग्रेस, 2004 से 2014 तक तीन बार राहुल गांधी कांग्रेस और 2019 में स्मृति ईरानी भाजपा से सांसद चुनी गई थी। इसमें 1981,1991 उप चुनाव और 1980,1996 में मध्यावधि चुनाव हुए थे। भाजपा और कांग्रेस दोनों एक-दूसरे को घेरने में जुटे हैं। स्मृति ईरानी के समर्थन में मंगलवार को जगदीशपुर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और अमेठी में राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा थे।

जबकि किशोरी लाल शर्मा के समर्थन में प्रियंका गांधी 17 नुक्कड़ सभाएं की। स्मृति ईरानी के अपर सचिव विजय गुप्ता ने कहा कि जीत का अंतर बढ़ाने के लिए बड़े नेताओं की सभाएं हो रही है। जबकि किशोरी लाल शर्मा ने कहा कि कांग्रेस का चुनाव जनता खुद लड़ रही है। स्मृति ईरानी के खिलाफ गुस्सा है। जिससे जनता में भाजपा के खिलाफ अंडर करंट है। फिलहाल दोनों तरफ से जीत के दावे किए जा रहे हैं। अमेठी में 20 मई को मतदान और 4 जून को परिणाम आएंगे।

[अर्थ जगत]

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर	
महिंद्रा एंड महिंद्रा	3.76 प्रतिशत
एलटी	2.54 प्रतिशत
जेएसडब्ल्यू स्टील	2.38 प्रतिशत
एनटीपीसी	1.45 प्रतिशत
इंडसइंड बैंक	1.28 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर	
टीसीएस	1.14 प्रतिशत
नेस्ले इंडिया	1.05 प्रतिशत
एक्सिस बैंक	0.94 प्रतिशत
आईसीआईसीआई बैंक	0.59 प्रतिशत
बजाज फाइनेंस	0.53 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	73,310
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	74400
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	67.77	78.57
पौंड स्टर्लिंग	90.94	105.45
यूरो	76.54	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	2600-2700
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	3740-3840
चीनी एम	4000-4100
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4400-4500

दाल-दलहन

चना	6100-6200
दाल चना	7100-7200
मसूर काली	7550-7650
उड़द दाल	10600-10700
मूंग दाल	9850-9950
अरहर दाल	11700-11800

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में टिकाव

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में आज कोई बदलाव नहीं हुआ, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपए प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपए प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपए प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपए प्रति लीटर पर रहा।

मजबूत बाजार के लिए राजनीतिक स्थिरता जरूरी : निर्मला सीतारमण

■ वित्त मंत्री ने 'विकसित भारत 2047' सत्र को किया संबोधित

हम 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' की सोच के साथ आगे बढ़ रहे हैं, भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा : निर्मला सीतारमण

मुंबई, 14 मई (एजेंसियां)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में आयोजित 'विकसित भारत 2047' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि वित्तीय बाजार पूंजी जुटाने और इसके आवंटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्टॉक सूचकांकों में स्थिरता और अर्थव्यवस्था को गति देने में स्थिर सरकार की भूमिका बहुत बड़ी है।

बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) में भारतीय वित्तीय बाजारों पर केंद्रित 'विकसित भारत 2047' सत्र को संबोधित करते हुए, वित्त मंत्री ने कहा कि यहां बीएसई में खड़े होकर, मैं आपके सामने स्पष्ट रूप से कहना चाहती हूं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का तीसरा कार्यकाल एक स्थिर सरकार और सुशासन वाला होगा।

वित्त मंत्री ने आगे कहा, हम 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' की सोच के साथ आगे बढ़ रहे हैं। हमें विश्वास है कि पीएम मोदी अपना तीसरा कार्यकाल पूरा करेंगे, जहां भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

स्थिर केंद्र सरकार के साथ ही देश में जारी राजनीतिक स्थिरता, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का तेज गति से बढ़ना और मुद्रास्फीति पर नियंत्रण की वजह से भारतीय शेयर बाजार का प्रदर्शन अच्छा है। सीतारमण ने कहा, इसकी वजह से भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया है। भारत आने वाले अधिकांश निवेशक यह जान रहे हैं कि उनका पैसा कहां निवेश किया जा रहा है और यह कितना ज्यादा सुरक्षित है। जहां तक सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में सरकारी ऋण का सवाल है, भारत ने अन्य देशों की तुलना में अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन किया है और देश निम्न और मध्यम आय वाले देशों (एलएमआईसी) में तीसरा सबसे कम ऋण वाला देश है।

वित्त मंत्री ने विस्तार से बताया कि भारत के वित्तीय बाजारों का प्रदर्शन भी हाल के दिनों में लोगों की उम्मीदों से ज्यादा बेहतर रहा है। उन्होंने कहा कि इसने ऐसे समय में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, जब वैश्विक बाजारों में उतार-चढ़ाव देखा जा रहा है, जहां बहुत अधिक अस्थिरता है और अधिकांश बाजारों में अनिश्चितता का डर है। इस माहौल में भी, भारतीय शेयर बाजारों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है, ऐसे में इसने विदेशी और घरेलू दोनों निवेशकों को आकर्षित किया है। निर्मला सीतारमण ने कहा कि बेहतर प्रौद्योगिकी को अपनाने से शेयर बाजार के प्रदर्शन में बड़ा बदलाव आया है।

बीएलएस ई-सर्विसेज के राजस्व में 2023-24 में 25.7 प्रतिशत वृद्धि

■ परिचालन लाभ में सालाना आधार पर 37.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। तकनीक-आधारित डिजिटल सेवा कंपनी बीएलएस ई-सर्विसेज लिमिटेड (बीएलएसई) ने 31 मार्च 2024 को समाप्त पिछले वित्तीय वर्ष में 25.7 प्रतिशत वृद्धि के साथ 309.6 करोड़ रुपए का राजस्व अर्जित किया।

कंपनी के आज जारी तिमाही वित्तीय परिणामों के अनुसार उसका परिचालन लाभ (एबिडटा) वित्त वर्ष 202-23 के 36.3 करोड़ रुपए के मुकाबले 2023-24 में बढ़ कर 49.9 करोड़ रुपए रहा। इस तरह परिचालन लाभ में सालाना आधार पर 37.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

बीएलएस ई-सर्विसेज लिमिटेड के चेयरमैन शिखर अग्रवाल ने कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 में हमारे कुल राजस्व और लाभ में उल्लेखनीय उछाल आया है। वर्ष के दौरान, हम अपनी पहुंच और नेटवर्क को 100,000 से अधिक संपर्क केंद्रों और 1,000 से अधिक बीएलएस स्टोर तक बढ़ाने में सफल रहे हैं। हम अनूठे वित्तीय समावेशन और डिजिटल सशक्तिकरण के युग की शुरुआत कर रहे हैं, जिसे विभिन्न क्षेत्रों में जारी व्यापक बदलाव लाने वाली पहलों में देखा जा सकता है।

उन्होंने कहा कि दूरदर्शी राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन के तहत उत्तर प्रदेश में आयुष्मान भारत गुणवत्ता जांच (क्यूसी) के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के साथ कंपनी का सहयोग स्वास्थ्य देखभाल पहुंच में उसके लिए एक नए अध्याय की शुरुआत है।

अग्रवाल ने कहा कि हमारे 21,000 से अधिक बीसी केंद्रों की मदद से वर्ष के दौरान कुल 72,700 करोड़ रुपए के 13.3 करोड़ लेन-देन किए गए। साथ ही हमारे बिजनेस फैसिलिटेटर मॉडल के माध्यम से निजी क्षेत्र के बैंकिंग क्षेत्र में हमारे भागीदारों के लिए तिमाही के दौरान 580 करोड़ रुपए का ऋण और जमा, हमारी प्रतिस्पर्धी बढ़त की एक और मिसाल है।

2 से 7 मई के बीच आयोजित अमेजन ग्रेट समर सेल के दौरान देखने को मिले ये खास ट्रेंड

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। अमेजन के एक प्रवक्ता ने कहा, 'दक्षिण और पूर्वी क्षेत्र के ग्राहकों के बीच एयर कूलर और एसी की मांग (पिछले वर्ष की तुलना में 2 गुना ज्यादा) में जोरदार तेजी देखी गई। यहां ग्राहकों के बीच 5 स्टार और वाईफाई एसी की मांग सबसे ज्यादा थी। अमेज़न फैशन की बात करें तो यहां पहली बार खरीदारी करने वाले 65त्न खरीदार टियर 2-3 शहरों से थे। ग्राहकों ने पेस्टल, फ्लोरल, आरामदायक एथनिक और फ्यूजन वियर जैसे स्प्रिंग-समर ट्रेंड की जमकर खरीदारी की। इसके साथ ही फल, योगर्ट ड्रिंक से लेकर फलों के रस (पिछले वर्ष की तुलना में 2 गुना वृद्धि), समर फ्रेगरेंस (पिछले वर्ष की तुलना में 9 गुना वृद्धि) की खरीदारी के साथ ग्राहकों ने इस साल गर्मियों का स्वागत शानदार स्टाइल से किया है। अमेजन के प्रवक्ता ने कहा कि इस सेल के दौरान हमने समर ट्रैवल में भी जोरदार उछाल देखा है। सेल के दौरान केबिन ट्रॉली और ट्रॉली सेट में 3 गुना वृद्धि देखी गई। इसी के साथ ही टीवी (पिछले साल की तुलना में ग्रेट समर सेल के पहले दिन 1.4 गुना सेल) और गेमिंग कुर्सियाँ, बीन बैग एवं रिक्लाइनर जैसे फर्नीचर की बिक्री में जोरदार वृद्धि देखी गई है।' अमेज़न के प्रवक्ता ने कहा। 'अमेजन फैशन में, हमारा मिशन अपने ग्राहकों को मनपसंदीदा स्टाइल हासिल करने में मदद करना है।

पीएचएफ लीजिंग ने ईवी ऋण पोर्टफोलियो का किया विस्तार

पीएचएफ लीजिंग ससटेनेबल परिवहन के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध : शल्य गुप्ता

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। पीएचएफ लीजिंग लिमिटेड ने एल5 श्रेणी में इलेक्ट्रिक कार्गो वाहनों की खरीद के लिए ऋण उत्पादों को शामिल करके अपने इलेक्ट्रिक वाहन ऋण पोर्टफोलियो को बढ़ाया है।

कंपनी ने जारी बयान में कहा कि अब इनमें इलेक्ट्रिक दुपहिया वाहन और प्रयुक्त ई-रिक्शा ऋण शामिल है। नए शामिल किए गए इलेक्ट्रिक वाहन उत्पाद मौजूदा इलेक्ट्रिक रिक्शा, ई-लोडर और अन्य एल3 ईवी ऋण उत्पादों के अतिरिक्त हैं जो पहले से ही उपलब्ध हैं। पीएचएफ लीजिंग विभिन्न क्षेत्रों में इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने के लिए प्रतिबद्ध है। इनमें लॉजिस्टिक्स, अंतिम-मील डिलीवरी और ग्रामीण व शहरी परिवहन शामिल हैं।

पीएचएफ लीजिंग श्रेणी 'ए' की जमा स्वीकार करने वाली एक गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी है जो 1998 से भारतीय रिजर्व बैंक के साथ पंजीकृत है। कंपनी अचल संपत्ति (एलएपी) के बदले बंधक ऋण और ई-वाहनों-मुख्य रूप से ई-रिक्शा, ई-लोडर और ईवी दुपहिया वाहनों के वित्तपोषण की पेशकश करती है।

कंपनी के सीईओ शल्य गुप्ता ने कहा कि सामाजिक रूप से जागरूक एक कॉर्पोरेट नागरिक के रूप में, पीएचएफ लीजिंग ससटेनेबल परिवहन के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है और भारत में इसका मतलब इलेक्ट्रिक वाहनों से है। हमने पहले ही पीएचएफ लीजिंग को ई-रिक्शा फाइनेंसिंग में अग्रणी के रूप में स्थापित कर दिया है और इस सेगमेंट में हम सबसे तेजी से बढ़ते संस्थानों में से एक हैं। इलेक्ट्रिक कार्गो श्रेणी को बढ़ाने और इस सेगमेंट में नए उत्पाद लाने का यह सही समय है। आज, ईवी फाइनेंसिंग के लिए हमारा पोर्टफोलियो पूरा हो गया है।

सार संक्षेप

भारतीय इकाई में 1,660 करोड़ रुपए निवेश करेगा अमेजन

नई दिल्ली। वैश्विक ई-कॉमर्स कंपनी अमेजन अपनी भारतीय इकाई में 1,660 करोड़ रुपए निवेश करने जा रही है। कंपनी की ओर से शेयर बाजार को दी गई सूचना में यह जानकारी सामने आई है। अमेजन द्वारा भारतीय इकाई में निवेश ऐसे समय पर किया जा रहा है, जब बड़ी ई-कॉमर्स कंपनियों में बाजार हिस्सेदारी को लेकर कड़ा मुकाबला देखने को मिल रहा है। यह पांच महीनों में दूसरी बार है, जब अमेजन की ओर से अपनी भारतीय इकाई में निवेश किया जा रहा है। इससे पहले अमेजन ने 830 करोड़ रुपए भारतीय इकाई में निवेश किए थे। कुछ समय पहले वॉलमार्ट ने फ्लिपकार्ट में 600 मिलियन डॉलर का निवेश किया था। फ्लिपकार्ट, अमेजन का प्रमुख प्रतिद्वंदी है। कंपनी ने अपनी रेगुलेटरी फाइलिंग में बताया कि 1,660 करोड़ रुपए निवेश किए जाएंगे। इसके बदले में 10 रुपए प्रति शेयर के हिसाब से 166 करोड़ शेयर मौजूदा शेयरधारकों को जारी किए जाएंगे। ई-कॉमर्स भारत में तेजी से बढ़ रहा है।

व्हाइटओक कैपिटल म्यूचुअल फंड ने पेश की एनएफओ

मुंबई। व्हाइटओक कैपिटल म्यूचुअल फंड ने मंगलवार को अपनी एक नई कोष निवेश योजना (एनएफओ) पेश करने की घोषणा की। कंपनी की एक विज्ञप्ति के अनुसार व्हाइटओक कैपिटल स्पेशल अपॉर्चुनिटीज फंड विशेष परिस्थितियों पर केंद्रित एक ओपन-एंडेड इक्विटी स्कीम है। विज्ञप्ति के अनुसार व्हाइटओक कैपिटल स्पेशल अपॉर्चुनिटीज फंड एनएफओ बुधवार 15 मई को खुलेगा और बुधवार 29 मई, को बंद होगा। व्हाइटओक कैपिटल एसेट मैनेजमेंट के सीईओ आशीष सोमैया ने कहा कि इस नए निवेश कोष का प्राथमिक उद्देश्य कॉर्पोरेट पुनर्गठन (विलय अधिग्रहण आदि के समावेश के साथ), सरकारी नीति और/या विनियामक परिवर्तन, प्रौद्योगिकी के कारण व्यवधान और नवाचार, नए ट्रेंड्स, नए और उभरते क्षेत्र, अस्थायी अनूठी चुनौतियों से गुजर रही कंपनियां-क्षेत्र और इसी तरह के अन्य उदाहरण जैसी विशेष स्थितियों द्वारा प्रस्तुत अवसरों में निवेश करके लॉन्ग टर्म कैपिटल अप्रिसिएशन उत्पन्न करना है।

गोदरेज यमीज़ अध्ययन का खुलासा, दिल्ली के 18-30 साल के युवा घरों में लेते हैं स्नैकिंग का फैसला

नई दिल्ली। हर साल 15 मई को अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस मनाया जाता है। 'चाय टाइम और स्नैक्स', वो मौका होता है जब पूरा परिवार एक साथ इकट्ठा होता है। इस परंपरा में उम्र की कोई सीमा नहीं होती, बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, यह परिवार के बीच मजबूत रिश्ते बनाने का सबसे सही मौका होता है। गोदरेज टायसन फूड्स लिमिटेड (जीटीएफएल) के रेडी-टू-कुक उत्पादों में से एक ब्राण्ड गोदरेज यमीज़ द्वारा एक दिलचस्प अध्ययन - 'एसटीटीईएम-सेफ्टी, टेक्नोलॉजी, टेस्ट, ईज़ एंड मूड अपलिफ्टर' - द इंडिया स्नैकिग रिपोर्ट (वॉल्यूम ढ्ढ) कराया गया। इस अध्ययन में पाया गया है कि बाजार में उपलब्ध इतने सारे विकल्पों के बीच आमतौर पर परिवार में किस उम्र के लोग स्नैक्स के विकल्प चुनते हैं। इस रिपोर्ट के मुताबिक 18-30 साल (महिला-पुरुष) की उम्र के लोग परिवार में स्नैक के विकल्प चुनने में आगे रहते हैं।

दमदार लिवाली की बदौलत शेयर बाजार में तेजी

■ सेंसेक्स 328.48 अंक उछलकर 73,104.61 पर रहा

■ निफ्टी 113.80 अंक की मजबूती के साथ 22,217.85 पर बंद

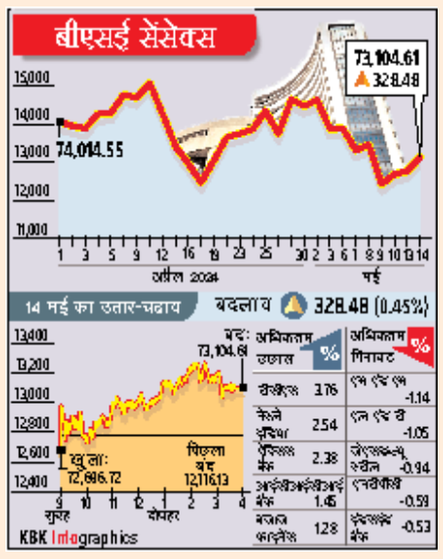

मुंबई, 14 मई (एजेंसियां)। देश में खुदरा महंगाई इस वर्ष अप्रैल में कम होकर ग्यारह माह के निचले स्तर पर आने से उत्साहित निवेशकों की स्थानीय स्तर पर कमोडिटीज, इंडस्ट्रियल्स, दूरसंचार, यूटिलिटीज और पावर समेत अठारह समूहों में हुई दमदार लिवाली की बदौलत आज शेयर बाजार में लगातार तीसरे दिन तेजी रही। बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 328.48 अंक उछलकर 73 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर के पार 73,104.61 अंक हो गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 113.80 अंक की मजबूती के साथ 22,217.85 अंक पर बंद हुआ। दिग्गज कंपनियों की तरह मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में भी जमकर लिवाली हुई, जिससे बीएसई का मिडकैप 1.14 प्रतिशत की छलांग लगाकर 41,644.70 अंक और स्मॉलकैप 1.79 प्रतिशत की तेजी लेकर 46,102.06 अंक पर रहा।

इस दौरान बीएसई में कुल 3923 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2689 में लिवाली जबकि 1117 में बिकवाली हुई वहीं 117 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ्टी की 36 कंपनियां मजबूत जबकि शेष 14 के शेयर कमजोर रहे।

विश्लेषकों के अनुसार, उपभेक्ता मूल्य सूचकांक आधारित खुदरा महंगाई इस वर्ष अप्रैल में कम होकर ग्यारह महीने के निचले स्तर 4.83 प्रतिशत रह गया। इससे निवेशकों की निवेश धारणा मजबूत हुई और इसका असर बाजार पर दिखा।

बीएसई में हेल्थकेयर और एफएमसीजी की 0.36 प्रतिशत तक की गिरावट को छोड़कर शेष 18 समूहों में तेजी का रुख रहा। इस दौरान कमोडिटीज 1.87, सीडी 0.94, ऊर्जा 1.52, वित्तीय सेवाएं 0.36, इंडस्ट्रियल्स 2.40, दूरसंचार 2.27, यूटिलिटीज 2.80, ऑटो 1.61, कैपिटल गुड्स 2.11, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 1.04, धातु 2.20, तेल एवं गैस 1.72, पावर 2.51, रियल्टी 1.03 और सर्विसेज समूह के शेयर 1.78 प्रतिशत मजबूत रहे।

अंतरराष्ट्रीय बाजारों का रुझान मिश्रित रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.14 और जापान का निक्केई 0.46 प्रतिशत चढ़ गया जबकि जर्मनी का डैक्स 0.18, हांगकांग का हैंगसेंग 0.22 और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.07 प्रतिशत गिर गया।

शुरूआती कारोबार में सेंसेक्स 79 अंक गिरकर 72,696.72 अंक पर खुला और बिकवाली के दबाव में थोड़ी देर बाद ही 72,683.99 अंक के निचले स्तर तक टूट गया।

इस दौरान सेंसेक्स की जिन प्रमुख कंपनियां लाभ में रहीं उनमें महिंद्रा एंड महिंद्रा 3.76, एलटी 2.54, जेएसडब्ल्यू स्टील 2.38, एनटीपीसी 1.45, इंडसइंड बैंक 1.28, सन फार्मा 1.27, रिलायंस 1.23, अल्ट्रासिमको 1.20, एसबीआई 1.15, मारुति 1.07, टेक महिंद्रा 1.05, पावरग्रिड 1.00, विप्रो 0.94, टाटा स्टील 0.67, एचसीएल टेक 0.56 शामिल है।

वहीं, नुकसान उठाने वाली कंपनियों में टीसीएस 1.14, नेस्ले इंडिया 1.05, एक्सिस बैंक 0.94, आईसीआईसीआई बैंक 0.59, बजाज फाइनेंस 0.53, आईटीसी 0.50, एशियन पेंट 0.42, हिंदुस्तान यूनिलीवर 0.27, बजाज फिनसर्व 0.12 और भारती एयरटेल 0.09 प्रतिशत शामिल रही।

आइकिया इंडिया का रेनस के साथ गठजोड़

■ अब कंपनी ज्यादातर ऑर्डर 24 घंटे के भीतर पूरा कर सकेगी

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। आइकिया इंडिया ने लॉजिस्टिक्स की अग्रणी कंपनी रेनस के साथ एक करार किया है जिसके तहत दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में ग्राहकों के लिये होम डिलीवरी के अनुभव को बेहतर बनाया जाना है।

कंपनी ने कहा कि इसका लक्ष्य आइकिया की ई-कॉमर्स विस्तार की वृद्धि में मदद पहुंचाना और इस क्षेत्र में ग्राहकों के लिए ज्यादा तेज और सस्टेनेबल डिलीवरी सुनिश्चित करना है। इस गठजोड़ के तहत रेनस एक अत्याधुनिक वेयरहाउस केंद्र स्थापित करेगी, जिसमें 7000 से अधिक उत्पादों को रखने और आपूर्ति करने की क्षमता होगी। यह पहल दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में ग्राहकों के लिए होम डिलीवरी को आसान बनाएगी। भारत में आइकिया की विस्तार यात्रा में यह एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

इस रणनीतिक विस्तार से कंपनी ज्यादातर ऑर्डर 24 घंटे के भीतर पूरे कर सकेगी। टेक्नोलॉजी को शामिल करने से फर्नीचर की यह बड़ी कंपनी अपनी आपूर्ति श्रृंखला का लचीलापन और किफायत बढ़ा सकेगी। भारत के उत्तरी क्षेत्र में होम फर्निशिंग उद्योग के लिए बड़ी संभावना है। दिल्ली, नोएडा और गुरुग्राम जैसे शहरों में रियल एस्टेट के विकास में तेजी आ रही है। इसलिए होम फर्निशिंग्स की मांग भी बढ़ रही है। इसे देखते हुए, आइकिया 2025 के मध्य से क्षेत्र में अपनी बहुआयामी उपस्थिति चाहती है।

खाद्य तेल व दालों में रहा मिलाजुला रुख

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों में आई गिरावट के बीच

स्थानीय स्तर पर उठाव कमजोर रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेल एवं दाल-दलहन में मिलाजुला रुख रहा वहीं अन्य जिंसों के भाव स्थिर रहे।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में मई का पाम ऑयल वायदा 98 रिंगिट लुढ़ककर 3810 रिंगिट प्रति टन रह गया। इसी तरह मई का अमेरिकी सोया तेल वायदा 1.38 सेंट की गिरावट लेकर 43.77 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा। सोया रिफाइंड 74 रुपए प्रति क्विंटल चढ़ गया जबकि पाम ऑयल में 133 रुपए प्रति क्विंटल की गिरावट रही। वहीं, सरसों तेल, मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन बाजार में मिश्रित रुझान रहा। इस दौरान मसूर दाल 50 रुपए प्रति क्विंटल महंगी हो गई जबकि उड़द दाल 200 रुपए प्रति क्विंटल गिर गई। वहीं, चना, दाल चना, मूंग दाल व अरहर दाल में बदलाव नहीं हुआ।

नयारा एनर्जी मध्य प्रदेश व आंध्र प्रदेश में लगाएगी एथेनॉल उत्पादन संयंत्र

कंपनी 2025-26 के अंत तक भारत सरकार के 20 फीसदी ब्लेंडिंग के लक्ष्यों को पूरा करने में योगदान दे सकेगी : एलेजेन्डरो डेस डोरिडेस

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। वैश्विक स्तर पर काम करने वाली ऊर्जा कंपनी नयारा एनर्जी भारत में 600 करोड़ रुपए के निदेश से आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में दो एथेनॉल विनिर्माण संयंत्र स्थापित करेगी।

कंपनी ने कहा है कि इन संयंत्रों का निर्माण भारत में पेट्रोल में एथेनॉल का मिश्रण का अनुपात बढ़ाने के सरकार के लक्ष्यों के मद्देनजर किया जा रहा है। कंपनी ने एक विज्ञप्ति में कहा कि ये प्लांट एथेनॉल की आपूर्ति में कंपनी की विश्वसनीयता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे और इससे नयारा अपने स्वस्थ आर्थिक वृद्धि के लक्ष्यों को आगे बढ़ा सकेगी।

भारत में निजी क्षेत्र में ईंधन का सबसे बड़ा नेटवर्क चलाने वाली कंपनी ने कहा है कि इन एथेनॉल संयंत्रों की स्थापना उर्जा क्षेत्र में एकीकरण को सुनिश्चित करने की दिशा में उसका महत्वपूर्ण कदम है। विज्ञप्ति में कहा गया है, कंपनी ने 2025 तक एथेनॉल ब्लेंडिंग के भारत सरकार के लक्ष्यों के अनुरूप नयारा एनर्जी ने आन्ध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में 200 केएलपीडी क्षमता के दो एथेनॉल मैनुफैक्चरिंग प्लांट स्थापित करने की योजना बनाई है। इसके लिए दोनों जगह जमीन खरीद ली गई है।

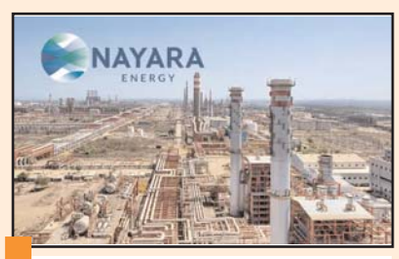

नयारा एनर्जी के मुख्य अधिशासी अधिकारी एलेजेन्ड्रो डेस डोरिडेस, सीईओ, ने कहा, 'एथेनॉल युनिट्स की स्थापना से एथेनॉल की आपूर्ति में नयारा की विश्वसनीयता और अधिक बढ़ेगी और कंपनी 2025-26 के अंत तक भारत सरकार के 20 फीसदी ब्लेंडिंग के लक्ष्यों को पूरा करने में योगदान दे सकेगी। उन्होंने कहा कि यह उर्जा क्षेत्र में स्थायित्व, विनियमों के अनुपालन और एथेनॉल निर्माण की दिशा में हमारे समर्पण की पुष्टि करता है।

एथेनॉल सेगमेन्ट में अपनी मौजूदगी का विस्तार कर, हम भारत के नवीकरणीय उर्जा लक्ष्यों में सक्रिय योगदान देने और हरित भविष्य के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत हैं। नयारा एनर्जी का लक्ष्य देश में अपनी एथेनॉल उत्पादन क्षमता दैनिक करीब 10 लाख लीटर स्तर पर ले जाना और इसके लिए एथेनॉल संयंत्रों की संख्या पांच तक पहुंचाना है।

खेल जगत

जोहान बोथा 3 साल के अनुबंध पर ब्रिस्बेन हीट, क्वींसलैंड बुल्स के मुख्य कोच बने

ब्रिस्बेन। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व क्रिकेटर जोहान बोथा को अगले तीन वर्षों के लिए बिग बैश लीग क्लब ब्रिस्बेन हीट और ऑस्ट्रेलिया की घरेलू क्रिकेट टीम क्वींसलैंड बुल्स का नया मुख्य कोच नियुक्त किया गया है। मुख्य कोच के रूप में बोथा की भूमिका वेड सेकोम्बे के जाने के बाद आई है, जिन्होंने सीज़न की समीक्षा के बाद दोनों नौकरियों के लिए फिर से आवेदन करने के लिए कहे जाने के बाद अपनी भूमिका से इस्तीफा दे दिया था। 42 वर्षीय दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी बीबीएल सीजन 12 में स्ट्राइकर्स के लिए सहायक कोच थे और आईएलटी20 2024 में शारजाह वॉरियर्स के मुख्य कोच थे और संयुक्त राज्य अमेरिका में उद्घाटन मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) 2023 प्रतियोगिता में सिएटल ओर्कास के सहायक कोच थे।

राजस्थान प्लेऑफ की दौड़ में बने रहने के लिए 'करो या मरो' की लड़ाई करने उतरेगी

खेल बिगाड़ने में सक्षम पंजाब से राजस्थान को चौकस रहने की जरूरत

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 14 मई (देशबन्धु)। पांच अर्द्धशतक जड़ने वाले अपने कप्तान संजू सैमसन, चार अर्द्धशतक जड़ने वाले रेयन पराग, दो शतक जड़ने वाले जोस बटलर और एक शतक और एक अर्द्धशतक जड़ने वाले उनके सलामी जोड़ीदार यशस्वी जायसवाल सहित अपने शीर्ष क्रम के रंग में होने के बावजूद लगातार चार मैच सहित कुल आठ मैच जीतने वाली राजस्थान रॉयल्स

■ राजस्थान रॉयल्स अपने पिछले तीन में दो मैच आखिरी ओवर में बेहद करीबी संघर्ष में हारी

अपने पिछले लगातार तीन मैच कुल चार हार के साथ 16 अंक हासिल करने के बावजूद इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 में अभी भी प्ले में ऑफ अपना स्थान पक्का नहीं कर पाई क्योंकि अभी भी चार और टीमें 16 और उससे ज्यादा अंकों तक पहुंच सकती हैं। राजस्थान रॉयल्स अपने पिछले तीन में दो मैच आखिरी ओवर में बेहद करीबी संघर्ष में हारी है। राजस्थान रॉयल्स पिछले लगातार तीन मैचों की हार के सिलसिले को अब अपने दूसरे घरेलू मैदान गुवाहाटी में पंजाब किंग्स को बुधवार को रिटर्न और 13 वें मैच में भी हरा कर प्ले ऑफ में स्थान पक्का करने के मकसद से उतरेगी। राजस्थान रॉयल्स को प्ले ऑफ में स्थान पक्का करने के लिए अब तक 12 में मात्र चार मैच जीतने अपने पिछले दोनों मैच सहित आठ मैच हार दसवें स्थान पर चल रही पंजाब किंग्स के खिलाफ बुधवार को अथवा अपने अंतिम 13 मैचों में आठ जीत और गुजरात टाइटंस के खिलाफ मैच बेनतीजा अधूरा खत्म होने से 17 अंकों के साथ सबसे प्ले ऑफ में स्थान बना चुकी

आईपीएल 2024

फ़िलहाल शीर्ष पर चल रही केकेआर में से एक मैच जीत जीतना जरूरी है।

शेमरॉन हेटमायर की 10 गेंदों में 27 रन की तूफानी पारी की बदौलत राजस्थान रॉयल्स की टीम पंजाब किंग्स को उसके मुल्लानपुर के घरेलू मैच में सीजन में अपने पहले मैच में अंतिम गेंद पर तीन विकेट से हरा पाई उसके मद्देनजर उसके मद्देनजर उसके लिए उसे हराना कतई आसान नहीं रहेगा। पंजाब किंग्स पहले ही प्ले ऑफ की होड़ से बाहर हो चुकी है और ऐसे में उसके पास गंवाने को कुछ नहीं है और वह खुल कर खेल कर राजस्थान रॉयल्स से मौजूदा सीजन के पहले मैच में मिली हार का हिसाब चुकाने के साथ उसका खेल बिगाड़ जरूर सकती है। ऐसे में राजस्थान को पंजाब किंग्स के खिलाफ पूरी तरह चौकस रहना होगा। मौजूदा सीजन में मुंबई इंडियंस के जसप्रीत बुमराह की 20 विकेट चटका विकेट चटकाने में दूसरे स्थान पर चल रहे पंजाब किंग्स के तेज गेंदबाज हर्षल पटेल, बाएं हाथ के अर्शदीप सिंह (कुल 16 विकेट), कप्तान सैम करेन (कुल 14 विकेट), कसिगो रबाड़ा (ककुल 11 विकेट) की चौकड़ी के साथ देर से रंगत पाने वाले लेग स्पिनर राहुल चाहर (7 मैच, कुल आठ विकेट) और बाएं हाथ के स्पिनर हरप्रीत सिंह बराड़ (कुल आठ विकेट) में राजस्थान रॉयल्स के लिए रन बनाने में सबसे आगे चल रहे कप्तान संजू सैमसन(कुल 486 रन), रेयन पराग (कुल 483 रन), जोस बटलर (कुल 359 रन), यशस्वी जायसवाल (कुल 344 रन) और यशस्वी जायसवाल (कुल 131 रन) को सस्ते में आउट करने का दम है।

दो अर्द्धशतक जड़ने वाले 32 बरस के शशांक सिंह (कुल 353 रन), सलामी बल्लेबाज जॉनी बैरिस्टो (कुल 284 रन), प्रभसिमरन सिंह (कुल 257 रन), कप्तान सैम करेन(कुल 207 रन) के रूप में पंजाब किंग्स की बल्लेबाजी अपने शीर्ष क्रम पर ही ज्यादा निर्भर है। राजस्थान रॉयल्स के सबसे कामयाब तुरुप के लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल (कुल 15 विकेट)व अब पूरे रंग में आ चुके सदाबहार ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन(11 मैच, 7 विकेट) के साथ रफ्तार के सौदागर ट्रेंट बोल्ट (कुल 11 विकेट), आवेश खान((कुल 11 विकेट) और अकेले मौजूदा सीजन में एक मैच में पांच विकेट चटकाने वाले चतुर स्विंग गेंदबाज संदीप शर्मा (कुल 10 विकेट) और नेंड्रे बर्गर (5 मैच, 7 विकेट) जैसे तेज गेंदबाजों की चौकड़ी ने यदि पंजाब किंग्स के सलामी बल्लेबाज जॉनी बैरिस्टो, उनके सलामी जोड़ीदार प्रभसिमरन और शशांक सिंह को सस्ते में आउट कर पैवेलियन लौटा दिया तो उसके लिए बड़ा स्कोर बनाना और उसे पार करना दोनों ही मुश्किल हो सकता है। पंजाब किंग्स के मध्य और निचले मध्यक्रम में जितेश शर्मा (कुल 133 रन), लियाम लिविंगस्टन 7 मैच, 111 रन) व आशुतोष शर्मा(9 मैच, कुल 171 रन) के लिए उसे बड़े स्कोर तक पहुंचना बेहद मुश्किल चुनौती होगा। खासतौर पर राजस्थान के स्विंग के उस्ताद संदीप शर्मा , लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल और ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन पारी के खासतौर पर आखिर में रनों पर लगाम लगाने और विकेट चटकाने के हुनर के कारण पंजाब किंग्स के मध्य और निचले क्रम के बल्लेबाजों के लिए बड़ी चुनौती साबित होंगे।

मनिका बत्रा ने कॅरियर की सर्वश्रेष्ठ विश्व रैंकिंग हासिल की

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। भारतीय टेबल टेनिस स्टार मनिका बत्रा ने मंगलवार को जारी नई आईटीटीएफ रैंकिंग में विश्व नंबर 24 की नई करियर उच्च रैंकिंग हासिल की। मनिका ने 15 पायदान की छलांग लगाई और 39वें से 24वें स्थान पर पहुंच गई हैं। इसके अलावा, उन्होंने श्रीजा अकुला से अपना भारत का नंबर

आईटीटीएफ

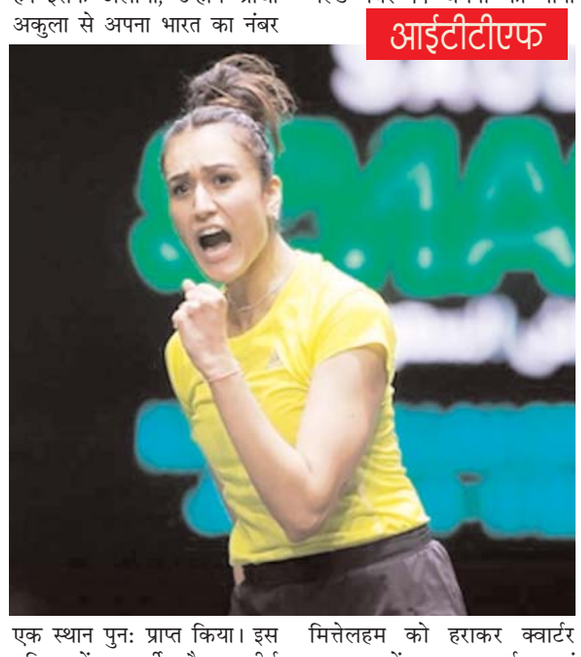

एक स्थान पुन: प्राप्त किया। इस प्रक्रिया में 25 वर्षीय पैडलर शीर्ष 25 एकल रैंकिंग में जगह बनाने वाली पहली भारतीय महिला बन गई हैं। उन्होंने 2019 में जी सत्यन (वर्तमान में विश्व नंबर 65) द्वारा हासिल की गई विश्व नंबर 24 रैंकिंग की भी बराबरी की, जो एकल में किसी भारतीय द्वारा प्राप्त सर्वोच्च रैंक है। मनिका की रैंकिंग में उछाल पिछले हफ्ते सऊदी स्मैश इवेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने के बाद आया, जहां उन्होंने राउंड 32 में शीर्ष चीनी खिलाड़ी और ओलंपिक पदक विजेता वर्ल्ड नंबर 2, वांग मन्यु पर उलटफेर भरी जीत दर्ज की। इसके बाद उन्होंने वर्ल्ड नंबर 14 जर्मनी की नीना मित्तेलहम को हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई, जहां मनिका अंतत: जापान की वर्ल्ड नंबर 5 हिना हयाता से हार गईं। पुरुष एकल रैंकिंग में अनुभवी अचंत शरत कमल तीन स्थान गिरकर 40वें स्थान पर आ गए और सर्वोच्च रैंकिंग वाले भारतीय पुरुष खिलाड़ी बने हुए हैं।

निधि की हैट्रिक से जुबा संघा ने जीता खिताब

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। जुबा संघा ने फुटबॉल दिल्ली वुमेंस लीग चैम्पियनशिप का खिताब जीत लिया है। जुबा संघा ने फाइनल में दिल्ली यूनाइटेड फुटबॉल क्लब को 4-1 से हराया।मंगलवार को राजधानी दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम पर खेले गए एकतरफा फाइनल में विजेता टीम जुबा संघा की जीत का आकर्षण निधि रही, जिसने यूनाइटेड की रक्षापंक्ति को बार-बार हैरान परेशान किया और तिकड़ी जमाई। हालांकि यूनाइटेड ने 12वें मिनट में मैच का पहला गोल जमाकर बढ़त बनाई। लेकिन चार मिनट बाद मनीषा ने हिसाब बराबर कर दिया। उस समय जब मुकाबला बराबरी पर चल रहा था नीधि ने 12 मिनटों के अंदर तीन दर्शनीय गोल जमाकर अपनी तिकड़ी पूरी की और जुबा संघा की खिताबी जीत में अहम भूमिका निभाई। बॉलीवुड अभिनेत्री चारू शंकर ने खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर डीएसए अध्यक्ष अनुज गुप्ता और कोषाध्यक्ष लियाकत अली मौजूद रहे। दोनों टीमें आगामी सीजन में वुमंस प्रीमियर लीग के लिए क्वालीफाई कर गई हैं। उधर डीएसए पुरुष सीनियर डिवीजन में उत्तराखंड एफसी और हिन्दुस्तान एफसी जीते पूर्वी दिल्ली स्थित ईस्ट विनोद नगर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में खेले गए डीएसए सीनियर डिवीजन मुकाबलों में उत्तराखंड एफसी और हिन्दुस्तान एफसी ने जीत हासिल की।

फुटबॉल दिल्ली वुमेंस लीग चैम्पियनशिप

भारतीय पुरुष हॉकी टीम यूरोप में हॉकी प्रो लीग मैचों के लिए रवाना हुई

नई दिल्ली, 14 मई (देशबन्धु)। दुनिया के बेहतरीन ड्रैग फ्लिकर कप्तान हरमनप्रीत सिंह की अगुआई में भारतीय पुरुष टीम पेरिस ओलंपिक से पहले एंटवर्प(बेल्जियम) एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2023-24 के रूप में पेरिस ओलंपिक 2024 से पहले आखिरी इम्तिहान के लिए बेंगलुरू से मंगलवार

■ प्रो लीग ओलंपिक के लिए टीम चुनने से पहले सर्वश्रेष्ठ संयोजनों को आजमाने का मौका

तड़के एंटवर्प रवाना हो गई। एंटवर्प एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2023-24 के विजेता का फैसला होगा। भारतीय हॉकी टीम फिलहाल मौजूदा प्रो लीग में अंक तालिका में फिलहाल शीर्ष पर चल रहे बेल्जियम और दूसरे स्थान पर चल रही ऑस्ट्रेलिया के बाद तीसरे नंबर पर है। भारत एंटवर्प में प्रो लीग में 22 से 26 मई को मेजबान बेल्जियम अर्जेंटीना से भिड़ेगा। इसके बाद भारतीय टीम 1 जून

से 9 जून तक जर्मनी और ब्रिटेन के खिलाफ लंदन में खेलेगी। भारत की निगाहें एफआईएच प्रो हॉकी लीग में खिताब जीतने के साथ जुलाई में पेरिस में शुरू हो रहे 2024 के ओलंपिक खेलों से पहले अपनी खामियों को खत्म करने पर है। भारत की पुरुष हॉकी टीम के कप्तान हरनमप्रीत सिंह एंटवर्प रवाना होने से पूर्व कहा कि हमारी टीम एफआईएच प्रो लीग के रूप एक और चुनौती के लिए चुनौतीपूर्ण यात्रा के लिए राह पर लौटने को बेताब है जहां हम दुनिया की श्रेष्ठ टीमों से भिड़ेंगे। हम साई बेंगलुरू में पिछले कई हफ्ते खूब पसीना बहाने के बाद एंटवर्प जा रहे हैं जहां हमारी टीम ने आपस में ही मैच खेल कर खुद को एफआईएच प्रो लीग के लिए बढ़िया ढंग से तैयार किया हैं। हमारी टीम प्रो लीग के लिए बढ़िया ढंग से तैयार है, जो कि हमारे लिए ओलंपिक से पहले अपनी खामियों को दूर करने के लिए बेहद अहम हैं। एंटवर्प और लंदन में प्रो लीग के मैचों से हमें यह तो मालूम कर पड़ जाएगा कि हम बतौर टीम एक इकाई के रूप में उन टीमों के खिलाफ कहां खड़े हैं , जिनसे हमें पेरिस ओलंपिक में सेमीफाइनल में स्थान बनाने के लिए भिड़ना पड़ सकता है। पेरिस ओलंपिक में बेल्जियम और अर्जेंटीना की टीमे ऑस्ट्रेलिया, आयरलैंड और न्यूजीलैंड के साथ हमारे पूल में हैं। हम मेजबान बेल्जियम और अर्जेंटीना के खिलाफ प्रो लीग में एंटवर्प में खेलेंगे। प्रो लीग में हमारे लिए 2024 के पेरिस ओलंपिक के लिए अपनी अंतिम टीम चुनने से पहले अपने सर्वश्रेष्ठ संयोजनों को आजमाने का मौका हैं। पेरिस ओलंपिक के लिए अपनी तैयारियों के साथ उसके लिए भारत की 16 सदस्यीय टीम में स्थान पाने के लिए प्रो लीग के मैच बेहद अहम हैं।'

भारत एफआईएच प्रो लीग 2024 के यूरोपीय चरण में एंटवर्प में अपना पहला मैच 22 मई को अर्जेंटीना के खिलाफ खेलने के बाद 23 मई और 25 मई को मेजबान बेल्जियम से लगातार मैच खेलेगा और 26 मई को रिटर्न मैच में अर्जेंटीना से भिड़ेगा।

स्क्वैश खिलाड़ी अभय, अनहत, सेंथिलकुमार 2028 ओलंपिक के मद्देनजर टॉप्स में शामिल

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। खेल मंत्रालय के मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) ने लॉस एंजेलिस 2028 ओलंपिक खेलों की योजना के रूप में अनहत सिंह, अभय सिंह और वेलावन सेंथिलकुमार को टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) के विकास समूह में शामिल किया है। पिछले अक्टूबर में 2028 ओलंपिक कार्यक्रम में शामिल स्क्वैश एशियाई और राष्ट्रमंडल खेलों में सफलता के साथ देश में लोकप्रिय हो रहा है।

वर्षों से, सौरव घोषाल, दीपिका पल्लीकल और जोशना चिनप्पा ने भारत में लौ जलाए रखी है और अब अनहत, अभय और सेंथिलकुमार

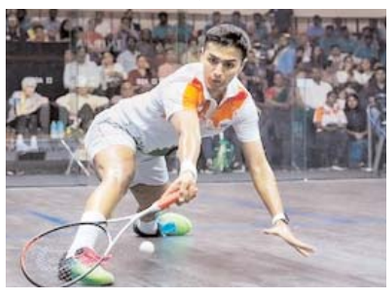

■ टॉप्स कार्यक्रम में स्क्वैश को शामिल करना भारत में खेल के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण है : साइरस पोंचा

जैसे खिलाड़ियों की अगली पीढ़ी को कमान सौंप रहे हैं। समावेशन के बारे में बात करते हुए, स्क्वैश रैकेट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसआरएफआई) के महासचिव साइरस पोंचा ने कहा कि टॉप्स कार्यक्रम में स्क्वैश को शामिल करना भारत में खेल के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण है। बढ़ी हुई भागीदारी और उन्नत प्रशिक्षण अवसरों जैसे तत्काल लाभों से परे, यह मान्यता देश के भीतर एक महत्वपूर्ण खेल अनुशासन के रूप में स्क्वैश के व्यापक समर्थन को दर्शाती है। 16 साल की उम्र में, अनहत पहले से ही एक राष्ट्रीय चैंपियन है, जिसने अब तक राष्ट्रीय सर्किट में 46 से अधिक खिताब जीते हैं।

गैरी कर्स्टन इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी-20 मैच से पूर्व लीड्स में पाकिस्तान टीम से जुड़ेंगे

लाहौर, 14 मई (एजेंसियां)। पाकिस्तान के नवनियुक्त सफेद गेंद के मुख्य कोच गैरी कर्स्टन 19 मई को लीड्स में राष्ट्रीय पुरुष टीम में शामिल होकर अपना दो साल का कार्यकाल शुरू करेंगे। कर्स्टन वर्तमान में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में गुजरात टाइटंस के मेंटर और बल्लेबाजी कोच के रूप में कार्यरत हैं और 16 मई को आखिरी लीग मैच के बाद टीम छोड़ देंगे। कर्स्टन का आगमन 22 मई को हेडिंग्ले में इंग्लैंड के खिलाफ चार मैचों की टी-20 श्रृंखला की शुरुआत से तीन दिन पहले होगा। इस श्रृंखला के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका और कैरेबियन में आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2024 होगा,

जिसमें पाकिस्तान 6 जून को डलास में अपने पहले मैच में मेजबान टीम से भिड़ेगा। 56 वर्षीय दक्षिण अफ्रीकी की पिछले महीने सफेद गेंद के मुख्य कोच के रूप में और जेसन गिलेस्पी की लाल गेंद के मुख्य कोच के रूप में पुष्टि की गई थी। ऑस्ट्रेलियाई अपनी यात्रा शुरू करने के लिए बांग्लादेश के खिलाफ अगस्त में आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप मुकाबलों के लिए जुलाई में पाकिस्तान पहुंचेंगे। कर्स्टन पाकिस्तान में चैंपियंस ट्रॉफी 2025, भारत और श्रीलंका में पुरुष टी-20 विश्व कप 2026 और एसीसी टी-20 एशिया कप 2025 के अलावा पुरुष टी-20 विश्व कप 2024 और अन्य द्विपक्षीय सफ़ेद गेंद सीरीज के लिए मुख्य कोच होंगे।

बांग्लादेश की अनुकूल परिस्थितियों का फायदा मिलेगा : हरमनप्रीत

■ भारत, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका ये सभी टीमें वास्तव में अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं और उम्मीद है कि ये चार सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर सकती हैं, इसलिए हम वहां बहुत अच्छा क्रिकेट खेल सकते हैं : हरमनप्रीत कौर, कप्तान

नई दिल्ली, 14 मई (एजेंसियां)। इस साल बाद में बांग्लादेश में खेले जाने वाले महिला टी-20 विश्व कप से पहले, भारत की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने अपनी टीम के पहले आईसीसी खिताब की तलाश के लिए बांग्लादेश में अनुकूल परिस्थितियों पर भरोसा किया है। भारत को छह बार की विजेता ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और उनके एशियाई पड़ोसियों पाकिस्तान और श्रीलंका के साथ रखा गया है। दोनों ग्रुप से शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी।

भारतीय कप्तान आशावादी हैं कि भारत जैसी बांग्लादेश की परिस्थितियां टी-20 विश्व कप के दौरान उनके लिए फायदेमंद रहेंगी। हरमनप्रीत ने आईसीसी से कहा कि यह कुछ हद तक भारत जैसा ही है और उम्मीद है कि इन परिस्थितियों में हमें अच्छा प्रदर्शन करना होगा। उन्होंने उन नामों का जिक्र किया जिनके बारे में उन्हें लगता था कि इस बार टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए वे प्रबल दावेदार हैं। हरमनप्रीत ने कहा कि भारत, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका ये सभी टीमें वास्तव में अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं और उम्मीद है कि ये चार सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई कर सकती हैं, इसलिए हम वहां बहुत अच्छा क्रिकेट खेल सकते हैं। मुझे लगता है कि यह ऑस्ट्रेलिया होगा (जिसका सामना करने का मैं इंतजार कर रही हूं) क्योंकि वे बहुत प्रतिस्पर्धी हैं। ऑस्ट्रेलिया किसी भी आईसीसी आयोजन में आगे बढ़ने वाली टीम है क्योंकि उन्होंने लगातार विजेता होने की शानदार प्रतिष्ठा बनाई है। वास्तव में, यह डाउन अंडर की टीम थी, जिसने 2023 टी20 विश्व कप सेमीफाइनल में भारत को बाहर कर दिया था, एक करीबी मैच जिसका फैसला पांच रनों से हुआ था।

हरमनप्रीत, ऋचा, राधा को मिली आईसीसी टी-20 रैंकिंग में बढ़त

दुबई। बांग्लादेश पर पांच मैचों की श्रृंखला में शानदार 105 रनों की पारी के बाद, भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर मंगलवार को जारी नई आईसीसी महिला टी20 रैंकिंग में तीन पायदान ऊपर 13वें स्थान पर पहुंच गईं। इस साल के आईसीसी महिला टी20 विश्व कप से कुछ ही महीने पहले भारतीय टीम शानदार लय में दिखी और बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज को 5-0 से अपने नाम किया। टीम की साथी ऋचा घोष श्रृंखला के अंतिम मैच में नाबाद 28 रन की बदौलत दो पायदान ऊपर 23वें स्थान पर पहुंच गईं। राधा यादव (सात पायदान ऊपर 23वें स्थान पर) और तितास साधु (18 पायदान ऊपर 60वें स्थान पर) ने बांग्लादेश में अच्छे प्रयासों के बाद गेंदबाजों की ताजा टी20 रैंकिंग में सुधार किया । पाकिस्तान के खिलाफ घरेलू मैदान पर श्रृंखला के पहले मैच के बाद, कई इंग्लिश खिलाड़ियों की रैंकिंग में भी बढ़ोतरी हुई है। बर्मिंघम में 49 रनों की पारी के बाद कप्तान हीथर नाइट टी20 बल्लेबाजों में चार स्थान ऊपर चढ़कर 18वें स्थान पर पहुंच गईं।

सार संक्षेप

शास्त्री, अश्विन ने इम्पैक्ट प्लेयर नियम का समर्थन किया

नई दिल्ली। आईपीएल में इम्पैक्ट प्लेयर नियम कुछ मौजूदा खिलाड़ियों और कोचों को पसंद नहीं आ रहा है, लेकिन पूर्व भारतीय कोच रवि शास्त्री ने इसका समर्थन किया और कहा कि इसने रोमांचक मैच कराने में योगदान दिया है। शास्त्री ने आर अश्विन के यूट्यूब चैनल पर कहा कि इम्पैक्ट प्लेयर नियम अच्छा है। आपको समय के साथ ढलना होगा। आप जानते हैं कि यह दूसरे खेलों में भी होता है। इससे आपको मुश्किल मैच देखने को मिलते हैं। आपको समय के साथ ढलना होगा और मुझे लगता है कि यह अच्छा नियम है। आपने देखा पिछले सीज़न में कितने नज़दीकी मैच देखने को मिले थे। तो आप जानते हैं कि यह एक बड़ा अंतर पैदा करता है वहीं कुछ खिलाड़ी जैसे भारतीय कप्तान रोहित शर्मा को लगता है कि इस नियम से ऑलराउंडरों के उत्थान में रुकावट डाली है, लेकिन अश्विन ने ध्रुव जुरेल का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्होंने अपने आईपीएल करियर की शुरुआत 2023 में इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर की थी और एक साल के अंदर भारत के लिए टेस्ट डेब्यू भी कर लिया।

मनु, विजयवीर ने अंतिम 25 मीटर पिस्टल ओलंपिक चयन ट्रायल जीता

भोपाल। टोक्यो ओलंपियन मनु भाकर और पेरिस कोटा धारक विजयवीर सिद्धू ने मंगलवार को यहां एमपी राज्य शूटिंग अकादमी (एमपीएसएसए) रेंज में 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में चौथा और अंतिम ओलंपिक चयन ट्रायल (ओएसटी) जीता है। मनु ने महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल ओएसटी टी4 फाइनल में 42 के स्कोर के साथ विश्व-रिकॉर्ड की बराबरी की, जबकि विजयवीर ने पुरुषों की 25 मीटर रैपिड-फायर पिस्टल (आरएफपी) ओएसटी टी4 के निर्णायक में 34 का स्कोर किया और विजयी हुए। मनु ने महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल ट्रायल में अपना दबदबा कायम कर लिया क्योंकि उन्होंने दो में जीत हासिल की और अन्य दो में दूसरे स्थान पर रहीं। चयनित पांच में से वह एकमात्र निशानेबाज थीं जो क्वालिफिकेशन राउंड में एक बार भी 580 से नीचे नहीं गईं।

शिमला से टाशीगंग तक का सफर तय करेंगे साईकिलिस्ट

शिमला। हिमाचल में लोकसभा चुनाव एवं विधानसभा उप-चुनाव के मद्देनज़र मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से शिमला से काजा तक 14 से 20 मई तक आयोजित साईक्लिंग एक्सपीडिशन का शुभारंभ मंगलवार को हुआ। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी मनीष गर्ग ने ऐतिहासिक रिज से साइकिल सवारों को हरी झंडी दिखा रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह सात दिवसीय साईक्लिंग एक्सपीडिशन शिमला से होकर लाहौल-स्पीति में स्थित विश्व के सबसे ऊंचे मतदान केन्द्र टाशीगंग (15256 फीट) तक लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करेगा।